

VISHVA-JYOTI

R. N. NO. 1/ 57

ISSN 0505-7523

REGD. NO. PB-HSP-01

CURRENCY PERIOD:

(1.1.2018 TO 31.12.2020)

६७,३-४

जून-जुलाई २०१८

# विश्वज्योति

पंजाब में रचित राम-साहित्य विशेषांक ( भाग-२ )



विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान

साधु आश्रम, होशियारपुर

एक प्रति का मूल्य : २५ रुपये

संस्थापक-सम्पादक :  
स्व. पद्मभूषण आचार्य ( डॉ. ) विश्वबन्धु

सम्पादक:

प्रो. इन्द्रदत्त उनियाल  
( सञ्चालक )

उप-सम्पादक :

डॉ. देवराज शर्मा

परामर्शक-मण्डल :

डॉ. दर्शनसिंह निर्वैर  
होशियारपुर

डॉ. ( श्रीमती ) कमल आनन्द  
चण्डीगढ़

डॉ. जगदीशप्रसाद सेमवाल  
होशियारपुर

डॉ. ( सुश्री ) रेणू कपिला  
पटियाला

शुल्क की दरें

आजीवन ( भारत में )	: १२०० रु.	आजीवन ( विदेश में )	: ३०० डालर
वार्षिक ( भारत में )	: १०० रु.	वार्षिक ( विदेश में )	: ३० डालर
सामान्य अङ्क ( भारत में )	: १० रु.	सामान्य अङ्क ( विदेश में )	: ३ डालर
विशेषाङ्क ( एक भाग भारत में )	: २५ रु.	विशेषाङ्क ( एक भाग विदेश में )	: ६ डालर

विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, साधु आश्रम,  
होशियारपुर-146 021 ( पंजाब, भारत )

दूरभाष : कार्यालय : 01882-223581, 223582, 223606

सञ्चालक ( निवास ) : 01882-244750, प्रैस : 231353

E-mail : vvr\_institute@yahoo.co.in

Website : www.vvrinstitute.com

## विषय-सूची

लेखक	विषय	विधा	पृष्ठांक
डॉ. मनमोहन सहगल	राम काव्य के संदर्भ में पंजाब में हिन्दी गद्य : भाषा योगवासिष्ठ	लेख	२
डॉ. निर्मल कौशिक	श्री गुरु गोबिन्दसिंह जी कृत रामावतार में सीता जी का चरित्रांकन	लेख	७
श्री राम शरण 'युयुत्सु'	अविभाजित पंजाब (हरियाणा) में रचित रामकाव्य: एक परिचय	लेख	११
डॉ. परमिन्द्र कौर	रामावतार में श्रीराम जी का वीर स्वरूप	लेख	२७
डॉ. सविता सचदेवा	श्रीकृष्णलाल रचित रामचरित्र के श्रीराम	लेख	३०
प्रो. अमनप्रीत कौर	पंजाब की राम-काव्य परंपरा में रामावतार का स्थान	लेख	३२
डॉ. केवलकृष्ण पाठक	केवट को श्री राम मिला था	कविता	३६
डॉ. विशाल भारद्वाज	रामायण के पात्रों का पञ्जाब के साथ सम्बन्ध	लेख	३७
डॉ. देवराज शर्मा	पंजाब में रचित रामसाहित्य के लिए विश्वज्योति का एक प्रयास	लेख	४०
आचार्या आभा प्रभाकर	इक्ष्वाकु वंश जिसमें राम का जन्म हुआ	लेख	४१
प्रो. अमरजीत सिंह	रामराज्य में राजनीतिक व्यवस्था	लेख	४५
प्रो. इन्द्रदत्त उनियाल	यही राम उपदेश तुम्हारा	कविता	४८
श्री अजय शर्मा	श्री रामलुभाया आनन्द दिलशाद कृत पंजाबी रामायण में आदर्श-पारिवारिक सन्दर्भ	लेख	५०
	संस्थान-समाचार		५३
	विविध-समाचार		५५
	पुण्य-पृष्ठ		५७



# विश्वज्योति

इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरागात् ॥ (ऋ. १,११३,१)

वर्ष ६७ } होशियारपुर, ज्येष्ठ-आषाढ़ २०७५; जून-जुलाई २०१८ { संख्या ३-४

यदि जाग्रद् यदि स्वपन्,  
एन एनस्यो ऽकरम्।  
भूतं मा तस्माद् भव्यं च,  
द्रुपदाद् इव मुञ्चताम्॥

(अथर्व. ६.११५.२)

यदि (स्वपन्) सोते या (जाग्रत्) जागते हुए मुझ (एनस्यः) पापी ने कोई (एनः) पाप (अकरम्) किया है (और मैं उससे ऐसे ही बंध रहा हूँ, जैसे कोई पशु लकड़ी के खूटे से जकड़ा हुआ हो) तो मेरे (भूतं) भूतकाल (के संचित शुभ संस्कार) और (भव्यं) वर्तमान (के सुकर्म) मुझे इस (के पंजे से) छुड़ाएं, जैसे (बंधे हुए पशु को) (द्रुपदात्) खूटे से (मुञ्चताम्) मुक्त करते हैं।

(वेदसार-विश्वबन्धुः)

इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः।

मनसस्तु परा बुद्धिर्बुद्धेरात्मा महान्परः॥

(कठोपनिषद्, १.३.१०)



## राम काव्य के संदर्भ में पंजाब में हिन्दी गद्य : भाषा योगवासिष्ठ

— डॉ. मनमोहन सहगल

‘योगवासिष्ठ’ को उत्तर-रामायण की संज्ञा दी जाती है। सर्गों के अन्त में इसे ‘योगवासिष्ठ महारामायण’ कहकर पुकारा गया है, जबकि प्रचलित नाम ‘योगवासिष्ठ’ ही है। महर्षि वाल्मीकि ने आदि रामायण महाकाव्य का प्रणयन किया था, उसमें श्रीहरि के चौदह कला सम्पन्न रूप श्रीराम की जीवन-कथा का पारायण हुआ था। श्रीविष्णु को कर्मबद्ध यह रूप एकाधिक शापों के कारण प्राप्त हुआ था। अरिष्टनेमि नामक राजा वैरागी होकर गंधमादन पर्वत पर तपस्या करने लगा था। इन्द्र ने उसे तत्त्वबोध का उपदेश प्राप्त करने के योग्य पाकर एक देवदूत के साथ उसे महर्षि वाल्मीकि के पास भिजवाया। राजा अरिष्टनेमि ने महर्षि से जीवन्मुक्त होकर विचरने का साधन जानना चाहा; तब महर्षि ने कहा था - “हे राजन्, महारामायण औषधि तुमसे कहता हूँ, इसे श्रवण करके अर्थात् हृदय में धारण करके तुम जीवन्मुक्त हो सकोगे। हे राजन्, यह महर्षि वसिष्ठ और श्रीराम का संवाद है, इसमें मोक्ष के उपायों की समस्त कथा कही है, उसे सुनकर जैसे श्रीरामचन्द्र जी जीवन्मुक्त हो विचरे, वैसे ही तुम भी जीवन्मुक्त हो जाओगे।” राजा के पूछने पर वाल्मीकि ने बताया कि श्रीविष्णु को तीन शाप मिले थे- ‘एक सनत्कुमार ने दिया था और कहा था कि हे विष्णु, तुम्हें सर्वज्ञता का अभिमान हो

गया है, कुछ काल के लिए तुम्हारी सर्वज्ञता निवृत्त हो जाएगी, तुम भी साधारण मनुष्य की तरह सीमित ज्ञान के स्वामी होंगे। दूसरा शाप ऋषि भृगु ने दिया; एक समय भृगु महाराज की पत्नी कहीं गई थी, वह वियोगावस्था में थे। श्रीहरि उन्हें देखकर हँस दिए, तो कुपित भृगु ने अभिशाप दिया कि मुझपर हँसते हो, मेरी तरह तुम भी पत्नी-वियोग में आतुर होगे। तीसरा शाप एक ब्राह्मण देवशर्मा ने दिया; देवशर्मा ब्राह्मण की स्त्री गंगा-तट पर श्रीविष्णु के नरसिंहरूप को देखकर इतनी भयातुर हुई कि प्राण-त्याग दिए। देवशर्मा ने शाप दिया कि तुमने मुझे स्त्री-वियोग का परिताप दिया, तुम भी अपनी स्त्री का वियोग झेलोगे”।

“शाप-वश वह त्रिलोक के स्वामी श्रीविष्णु मनुष्य शरीर में दशरथ के घर प्रकट हुए। तीनों लोकों को आलोकित करने वाला आत्मतत्त्व मात्र अनुभवात्मक है। इसी तत्त्व को प्रकाशित करने वाला यह शास्त्र मैंने आरम्भ किया है। इसका विषय, प्रयोजन, सम्बन्ध और अधिकार के सम्बन्ध में आपको बताता हूँ। सत्-चित्-आनन्द रूप चिन्मात्र आत्मा की जानकारी देना इसका विषय है। परमानन्द आत्मा को पा लेना एवं अनात्म-अभिमान दुःख से निवृत्त करना इसका प्रयोजन है। ब्रह्मविद्या और मोक्ष-उपाय का प्रतिपादन ही सम्बन्ध है और जिसमें अपने रूप में

ब्रह्मा का ज्ञान वर्तमान है, जो अनात्म देह से विरत रहना जानता है, तथा मुमुक्षु हैं, वह अधिकारी है"।

मोक्ष-उपाय से परमानन्द की प्राप्ति होती है। इस कथा को श्रवण करने वाला जन्म-मृत्यु रूप संसार से निवृत्त होता है। हे राजन्, यह महारामायण पावन-कथा है। श्रवण-मात्र से मनुष्य के सब पाप नाश होते हैं। यह राम-कथा सर्वप्रथम मैंने अपने प्रिय शिष्य भरद्वाज को सुनाई थी। भारद्वाज ने इस सम्बन्ध में श्रीब्रह्मा से कहा, तो उन्होंने आदेश दिया कि यह मोक्षदा कथा तुम सम्पन्न करो और वसिष्ठ जी के उपदेशों से जिस प्रकार श्रीराम आत्म-ज्ञान और तत्त्वबोध से सम्पन्न हुए थे, उसी प्रकार इस महाज्ञान को पाकर लोक मंगल होगा। ऋषि भारद्वाज की विनती पर वसिष्ठ के उपदेश वाला अंश भी इस महारामायण शास्त्र के अन्त में जोड़ दिया गया। अतः यह रामायण का उत्तर खण्ड बना और इसे 'योगवासिष्ठ महारामायण' संज्ञा दी गई।

अभिप्राय यह कि योगवासिष्ठ का मूल विषय ऐसा रहस्यवाद है, जिसे वसिष्ठ जी ने श्रीराम को बताया और उपरान्त लोक-कल्याण के लिए ऋषि भारद्वाज के कहने पर महर्षि वाल्मीकि ने उक्त उपदेश को आदि रामायण के उत्तरकाण्ड के रूप में सहेज लिया। कहा जा सकता है कि यह अमर ज्ञान आदि रामायण में महर्षि वाल्मीकि ने श्री वसिष्ठ के माध्यम से श्रीराम को प्रदान किया है और महाभारत में व्यास जी ने श्रीकृष्ण के

माध्यम से अर्जुन को हस्तांतरित किया है। योग-वासिष्ठ प्राणियों के शरीर में स्थित आत्मा पर किसी अदृश्य शक्ति को प्राथमिकता नहीं देता। श्रीमद्भगवद्गीता में पूर्ण आत्म-समर्पण का आह्वान किया गया है, जबकि योगवासिष्ठ का विश्वास आत्मसमर्पण में नहीं, वह तो मनुष्य की अन्तःशक्ति को प्रेरित करता है। उसी को जगत्-शक्ति का स्रोत मानता है। योगवासिष्ठ में जन्म-मृत्यु के रहस्य को सुलझाने के लिए मनुष्य के वासना तथा संस्कारों के बंधन में अनेक क्रिया-कलापों के जाल को नकारने एवं मूल से भिन्नता का विश्लेषण करके दोनों के अनिवार्य अभेद की बात कही गई है। अपनी बात स्पष्ट करने के लिए अनेक चमत्कारों, सिद्धियों, यौगिक क्रियाओं आदि को सम्पन्न करने, उनके प्रभावों और उनसे निवृत्त रहकर तत्त्वबोध की जानकारी बड़ी रोचक शैली में दी गई है। विशेष माध्यम संवाद और कथा कहने की शैली है।

ग्रंथ के नाम से प्रतीत होता है कि यह कोई योग ग्रंथ है। ऐसा नहीं, हाँ जीव और परमात्मा के योग अर्थात् मिलाप की कथा इसमें मौजूद है। इसमें ऐसी यौगिक क्रियाओं और योग के कुछ अन्य क्षेत्रों का, जिनका मुख्य सम्बन्ध मन से है, विश्लेषण हुआ है। अनेक चमत्कारों की यौगिक व्याख्या तथा स्पष्टीकरण इसमें उपलब्ध हैं। प्रायः कथाओं की पीठिकाएं किसी न किसी दार्शनिक तथा यौगिक सिद्धान्त पर आधृत हैं। ये कहानियां घटना-बहुला न होकर तत्त्व-बहुला



हैं।

महर्षि वसिष्ठ द्वारा श्रीराम को दिए गए इस समूचे उपदेश को कुल सात प्रकरणों में समेटा गया है- वैराग्य प्रकरण, मुमुक्षु व्यवहार प्रकरण, उत्पत्ति प्रकरण, स्थिति प्रकरण, उपराम प्रकरण, उपशम प्रकरण, निर्वाण प्रकरण पूर्वाद्ध तथा निर्वाण प्रकरण उत्तराद्ध।

योगवासिष्ठ में वेदान्त, सांख्य, योग, मीमांसा, कर्मकाण्ड, न्याय, आचार, धर्म आदि पर विस्तृत सैद्धान्तिक व्याख्याएं भी मिलती हैं। दार्शनिक सिद्धान्तों और दर्शन को व्यक्त करने की योगवासिष्ठ की अपनी ही शैली है। निश्चय ही इसमें दार्शनिक सिद्धान्तों में से किसी का भी खंडन या मंडन नहीं किया गया, प्रत्युत उन्हें सदैव नए दृष्टिकोण से सविवेक और बलवती भाषा में कहा गया है। यदि यह कहा जाए कि वह ग्रंथ समूची भारतीय प्रज्ञा का अद्भुत और मौलिक संग्रह है, तो कुछ भी अत्युक्ति न होगी।

‘योगवासिष्ठ’ ने केवल हिन्दू विचारकों को ही अनुप्राणित नहीं किया, मुस्लिम बादशाहों और विचारकों को भी आकर्षित किया है। दारा शिकोह ने इसका गम्भीर अध्ययन किया था। कश्मीर के मुस्लिम शासक बादशाह जैनुल आब्दीन ने इसका फारसी अनुवाद करवाया था। वह इसे पढ़ने और इस पर चर्चा करने में गहन रुचि लेता था। कतिपय अन्य मुस्लिम विद्वान् भी इसके कथ्य एवं शैली से चमत्कृत हुए।

भारतीय दर्शनों के सार रूप में तत्त्वबोध और

मोक्ष-धर्म की जानकारी देने वाली यह महान् रचना महर्षि वाल्मीकि की सम्पन्न संस्कृत भाषा का शृंगार थी। इसके ज्ञान से वंचित रह जाते थे, वे सब लोग जो संस्कृत भाषा का अल्पज्ञान रखते थे, या उससे अनभिज्ञ थे। इसमें संचित ज्ञान को लोक तक पहुँचाने, जन-जन को उक्त महाज्ञान के प्रति जागरूक करने और सहज ही लोक-मंगल की भावना से अनुप्राणित होकर योग-वासिष्ठ की अद्भुत जन-जागृति को जन-सामान्य तक पहुँचाने के लिए पंजाब ने अद्वितीय, अपूर्व, अनुपम कार्य किया- इसका सर्वप्रथम भाषानुवाद पंजाब की महान देन है, जिससे यह श्रेष्ठ ज्ञान-भंडार जन-जन के मन-मन तक प्रसार पा सका।

पंजाब में पटियाला दरबार (महाराजा साहब सिंह : सन् १७७९-१८१३ ई.) के राज-पंडित निरंजनी सम्प्रदाय के साधु राम प्रसाद को संस्कृत भाषा से अनभिज्ञ जन के लिए इस ज्ञान-भंडार को सामान्य तत्कालीन हिन्दी भाषा में प्रस्तुत करने का श्रेय जाता है। इस अनुवाद या भाषानुवाद के पीछे एक मार्मिक घटना उपलब्ध है। महाराजा साहब सिंह की दो बड़ी बहिनें दैवयोग से विधवा हो गई थीं। दुर्भाग्यवश वे पटियाला दरबार के महलों में ही रहने लगी थीं। बड़ी बहिन साहिब कौर तो छोटे भाई साहिब सिंह के राज-काज में हाथ भी बँटाती थी। वीरांगना थी, यथावश्यकता युद्ध-भूमि में भी उसने पटियाला राज्य की रक्षा की थी। सहज ही वैधव्य जीवन में प्रभु-स्मरण और कथा-कीर्तन में वे दोनों अपना मन रमाती थीं।



उन्हीं दोनों बहनों ने महाराज साहिब सिंह को प्रेरित किया था कि वह निरंजनी साधु राम प्रसाद को योग-वासिष्ठ की कथा करने के लिए कहें, ताकि वे इस अनमोल कथा का श्रवण कर अपना भावी जीवन संवार सकें। साधु राम प्रसाद ने राजा की विनती स्वीकार करके योगवासिष्ठ की सव्याख्या कथा का श्रीगणेश किया। रनिवास में प्रतिदिन संध्या में वह कथा वाचने लगे। साहब सिंह की दोनों बहनों के अतिरिक्त दरबार के अनेक स्त्री पुरुष कथा-श्रवण के लिए आते और पंडित जी द्वारा प्रस्तुत योग-वासिष्ठ की व्याख्या में एकाग्रचित्त आनन्द मनाते। कई मास के पारायण के उपरांत कथा समाप्त हुई। राजा की दोनों बहनों को इसमें इतना अध्यात्म-रस मिला कि वे निरन्तर उसी में लीन रहने की योजना करने लगीं। यदि यह ज्ञान उन्हें लोक-भाषा में प्राप्त हो सकता, तो वे बिना किसी बंधन के, प्रतिदिन स्वयं ही उसका पाठ करके अपनी आत्मा को संतुष्ट कर सकतीं। अतः यह सोचकर उन्होंने एक बार पुनः साधु राम प्रसाद से योगवासिष्ठ की कथा श्रवण की अभिलाषा व्यक्त की।

पंडित जी ने स्वीकृति दे दी, तो महाराज साहब सिंह ने अपनी बहनों की प्रेरणा से दो लिपिक नियुक्त करके उन्हें कथावाचक के मुख से निकली योग-वासिष्ठ की लोक-भाषायी व्याख्या को त्वरित गति से लिख लेने का आदेश दिया। पंडित जी कथा वांचते तो दोनों लिपिक पर्दे के पीछे बैठकर लिखते चलते। योग-वासिष्ठ

की सम्पूर्ण व्याख्या समाप्त हो जाने पर स्वयं राम प्रसाद निरंजनी ने उसका सुधार भी कर दिया। महाराजा पटियाला के राजकीय पुस्तकालय में से ही योग-वासिष्ठ का यह भाषानुवाद बाहर आया आर यथासमय विभिन्न रूपों में प्रकाशित भी हुआ। स्वयं वेंकटेश्वर प्रैस, बम्बई के अध्यक्ष श्री खेमराज श्रीकृष्णदास ने अपनी प्रस्तावना में यह स्वीकार भी किया है। यह प्रस्तावना सन् १९१५ ई. में लिखी गई थी। 'योग वासिष्ठ' का चर्चित भाषानुवाद लगभग २२० वर्ष पूर्व हुआ, अभिप्राय यह कि 'योगवासिष्ठ' का अनुवाद काल लगभग सन् १८०० ई. ठहरता है।

सन् १८०० ई. या इससे कुछ पूर्व ही निरंजनी 'भाषा योगवासिष्ठ' प्रदान कर चुके थे। पंजाब के साहित्यिक इतिहास में यह बहुत बड़ी घटना थी। इस घटना से जहां 'योगवासिष्ठ' के संदर्भ में पंजाब का योगदान स्पष्ट होता है, वहीं हिन्दीभाषा गद्य के आरम्भ और प्रसार में पंजाब का योगदान एक नई जानकारी बनकर सामने आता है। हिन्दी खड़ी बोली गद्य के विकास में राम प्रसाद निरंजनी की साक्षी विशेष महत्त्वपूर्ण है। ग्रियर्सन तथा उनके साथियों ने खड़ी बोली गद्य का आरम्भ सन् १८०० ई. में फोर्ट विलियम कॉलेज, कलकत्ता की स्थापना के बाद से माना है। उनका विश्वास है कि कॉलेज की छाया में रहकर लछू लाल जी ने जिस 'प्रेम सागर' की रचना की, वहीं से खड़ी बोली गद्य का उदय हुआ। किन्तु हम जब रामप्रसाद निरंजनी के 'भाषा योगवासिष्ठ' के गद्य

पर विचार करते हैं, तो हमें ग्रियर्सनादि की उक्त मान्यता हास्यास्पद लगती है। ध्यान रहे, फोर्ट विलियम कॉलेज में हिन्दुस्तानी विभाग की स्थापना सन् १८०३ ई. में हुई थी। तभी पं. लल्लू लाल जी कि नियुक्ति भी वहां हुई होगी। यदि उसी वर्ष भी जान गिल क्राइस्ट के कहने पर लल्लूलाल ने 'प्रेम सागर' की रचना आरम्भ कर ली हो, तो भी 'भाषा योगवासिष्ठ' के बाद की ही रचना ठहरती है। अतः कहना न होगा कि लल्लूलाल जी से पूर्व ही रामप्रसाद निरंजनी पंजाब में उनसे अधिक व्यवस्थित और प्रौढ़ गद्य का उदाहरण प्रस्तुत कर चुके थे। निश्चय ही निरंजनी का झुकाव संस्कृत की तत्सम शब्दावली की ओर रहा; उर्दू-फारसी का तो कदाचित् ही कोई शब्द आया है। 'समझाय के कहौं, तुम जाननहारे हौ, आदि पद निरंजनी ने अवश्य प्रयोग किए हैं, किन्तु उनकी भाषा में कथावाचकों का पंडितारूपन बराबर मौजूद है। इसका बड़ा कारण है योगवासिष्ठ की विषय-वस्तु। विषय

आध्यात्मिक होने के कारण अनेकधा भाषा में पारिभाषिकता भी आ गई है। किन्तु गद्य-विधान कहीं भी शिथिल नहीं। ध्यान रहे, दो शती पूर्व, इससे अधिक परिमार्जित हिन्दी गद्य की कल्पना असम्भव ही थी। लल्लूलाल के 'प्रेम-सागर' से तो भाषा योगवासिष्ठ का गद्य न केवल परिमार्जित है, बल्कि अधिक सुपाठ्य और व्यवस्थित है। अतः अब तक की प्राप्त सामग्री के साक्ष्य के बल पर हम निर्विवाद कह सकते हैं कि खड़ी बोली गद्य की परिमार्जित प्रथम पुस्तक 'भाषा योगवासिष्ठ' ही है और पंजाब के राम प्रसाद निरंजनी प्रथम प्रौढ़ गद्य लेखक हैं। हिन्दी गद्य के विकास में राम प्रसाद निरंजनी तथा उनकी रचना का अन्यतम स्थान है, जिसका समूचा श्रेय पंजाब के पटियाला दरबार का है। आज पंजाब की प्राथमिकता के कारण ही हिन्दी भाषा में 'योगवासिष्ठ' भारतीय जन-मानस के अधिक निकट है और उत्तरोत्तर भारतीय जीवन-दर्शन में अपना स्थान बना रहा है।

—२६३, अजीत नगर, पटियाला-१४७००१। मोबा: ९८१५६-५६१७९





# श्री गुरु गोबिन्दसिंह जी कृत रामावतार में सीता जी का चरित्रांकन

— डॉ. निर्मल कौशिक

हिन्दी-साहित्येतिहास में पंजाब में रचित हिन्दी-साहित्य ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हिन्दी-साहित्य के आदिकाल में ही पंजाब में सिद्धों, नाथों द्वारा इस साहित्य का सूत्रपात हुआ। तदनन्तर भक्तिकाल में रचित रामकाव्य और कृष्णकाव्य का प्रभाव भी पंजाब के हिन्दी-साहित्य पर पड़ा। सन्तकाव्य और सूफीकाव्य के प्रभाव के कारण सगुण और निर्गुण काव्यधाराओं का प्रवाह भी पंजाब के साहित्य में रहा। यह साहित्य लगभग ब्रजभाषा और गुरुमुखी लिपि में उपलब्ध होता है। गुरु काव्यधारा और दरबारी साहित्य ने हिन्दी-साहित्य में एक नया अध्याय जोड़ दिया। पंजाब में जो साहित्य रचा गया उसमें आध्यात्मिक भावों की प्रधानता रही। गुरुवाणी और गुरुमत का प्रचार और प्रसार करने के उद्देश्य से जनसाधारण और जनकल्याण हेतु रचा गया साहित्य इस युग की अमूल्य निधि है।

विश्व की समस्त भाषाओं में रचित साहित्य में सबसे समृद्ध, उदात्त और लोकोपकारी साहित्य संस्कृत-भाषा में ही रचा गया है। वेदों के पश्चात् संस्कृत-साहित्य में लोकप्रिय और महत्वपूर्ण ग्रन्थ अगर कोई है तो वह है महर्षि वाल्मीकि कृत 'रामायण'। यह एक विश्वविख्यात आदिकाव्य है, जिसमें कविश्रेष्ठ वाल्मीकि जी ने मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् रामचन्द्र जी के आदर्श चरित्र को अत्यन्त रसात्मक शैली में प्रस्तुत किया है। रामायण की अनेक भाषाओं में टीकाएं और भाषानुवाद उपलब्ध हैं। इस ग्रन्थ की महत्ता इसलिए भी है

कि इसने रामकाव्य परम्परा में समाहित अनेक परवर्ती रामकाव्यों पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है और कथानक को प्रभावित किया है। परवर्ती मध्यकालीन और आधुनिक कालीन रामकाव्यों में हमें रामायण की छवि परिलक्षित होती है। अध्यात्म रामायण, उत्तररामचरितम्, रामचरितमानस, हनुमन्नाटक, जानकी मंगल, अभिनव राघव, रामावतार और साकेत जैसे काव्यों में इसके प्रभाव को स्पष्ट देखा जा सकता है। पंजाब में रचित साहित्य में रामकथा को अपने-२ ढंग से अनेक कवियों ने प्रस्तुत किया है। लेकिन कथा का मूलाधार रामकथा के पात्रों का आदर्श प्रारूप प्रस्तुत करना ही रहा। पंजाब में रचित रामकाव्य धारा में सबसे महत्वपूर्ण और प्रचलित रचना श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी कृत 'रामावतार' कही जाती है। 'रामावतार' उनके द्वारा रचित 'दशमग्रन्थ' में संकलित है। इस महाग्रन्थ के अन्दर १६ रचनाएं हैं। रामावतार की रचना पूर्व प्रचलित काव्यग्रन्थों और जनश्रुतियों के आधार पर की गई प्रतीत होती है। गुरु जी ने मौलिक उद्भावनाओं के साथ-साथ पारम्परिक कथासूत्रों को भी शिथिल नहीं होने दिया है।

'रामावतार' में भले ही एक पारम्परिक कथा को काव्यग्रन्थ का आधार बनाया गया है तो भी इसके प्रसंगों और पात्रों को एक नए ढंग से प्रस्तुत किया गया है। सभी पात्र अपनी अमिट छाप पाठक पर छोड़ कर उनके आदर्शों को जीवन में अपनाने पर बाध्य हो जाते हैं। इस काव्यग्रन्थ के



प्रमुख पात्रों में राम, सीता, हनुमान्, परशुराम, रावण आदि प्रमुख हैं अन्य सभी प्रमुख पात्रों का अध्ययन और विवेचन तो अनेक पुस्तकों में उपलब्ध होता है लेकिन सीता जी का चरित्रांकन कम विद्वानों ने ही किया है। सीता जी का चरित्र अनुकरणीय और प्रेरक है। पति के साथ पत्नी को कैसा व्यवहार करना चाहिए यह सीता जी से सीखना चाहिए। सीता जी का जीवन और व्यवहार आदर्श और शिक्षाप्रद है। सास-ससुर, माता-पिता, देवों और सेवकों, अन्य स्त्री-पुरुषों यहां तक कि दुष्टों के साथ भी कैसा व्यवहार करना चाहिए इसका उपदेश हमें सीता जी के जीवन से मिलता है। सीता जी की सभी क्रियाएं कल्याणकारिणी हैं।

‘रामावतार’ में सम्पूर्ण रामकथा को श्री गुरु गोविन्द सिंह जी ने पूर्ववर्ती कवियों की तरह काण्डों अथवा सर्गों में विभक्त न कर २२ प्रकरणों जिन्हें हम (प्रकरण अथवा) अध्याय भी कह सकते हैं में वर्णित किया है। रामावतार में सीता को एक नायिका के रूप में चित्रित किया गया है। सीता का आगमन सर्वप्रथम दूसरे प्रकरण में सीता-स्वयंवर के समय होता है। सीता श्रीराम के सौन्दर्य को देखकर मोहित हो जाती है और सुध-बुध खो बैठती है।

हरि बिसन लेखे, सीआ राम देखे ॥

सीआ पेख राम बिधी बाण काम ॥

गिरी झूमि भूम मदी जाणु धूम ॥ पद्यसं. १०५, १०६

गुरु गोविन्द सिंह जी ने सीता की इस भाव-विह्वलता को राम के सौन्दर्य की छवि को उभारने के लिए ही उनके प्रथम दर्शन के समय सीता के उनके प्रति अनुराग को समर्पण भाव से दर्शाया

गया है। धनुषभंग के पश्चात् सीता ने श्रीराम के गले में वरमाला डालकर पति के रूप में स्वीकार कर लिया। राम को पति के रूप में वरण करके मानों वे सौन्दर्य की असीम प्रतिमा की तरह लग रही थीं। विवाह के पश्चात् सीता एक पत्नी अथवा बहू ही नहीं अपितु एक वीरवती नारी के रूप में दिखाई देती हैं। वह श्रीराम के साथ रहकर कन्धे से कन्धा मिलाकर प्रत्येक कार्य में उनकी सहभागिनी बनना चाहती हैं। जब वनगमन का सन्देश पाकर राम सीता से कहते हैं कि मैं वनवास करने जाऊंगा तो आप माता कौशल्या के पास रहना। वनवास के पश्चात् मैं वापिस लौटकर आपके साथ राज्य सम्भालूंगा-

सुनि सिय सुजस सुजान रहो कौसल्या तीर तुम।

राज करऊ फिर आन तोहि सहित बनवास बसि ॥

पद्य संख्या-२४५

इसके उत्तर में सीता अपने पतिव्रत के धर्म को भलिभाँति समझते हुए इस प्रकार उत्तर देती है- हे स्वामी! मैं शूल काटे सब सहन कर लूंगी। भले ही मेरा शरीर सूखकर कांटा हो जाए। भले शेर दहाड़ें, सांप फुकारें, कोई भी कठिनाई क्यों न आ जाए परन्तु मैं ‘उफ सी’ तक नहीं करूंगी-

सूल सहों तन सूक रही पर सी न कहौ सिर सूल सहोंगी।

बाघ बुकार फनीन फुकार सु सीस गिरो पर सी न कहोंगी।

पद्य संख्या २४९

यह बात सुनकर राम निरुत्तर हो जाते हैं। सीता का धैर्य, आत्मविश्वास और निडरता को देखकर उसे वन में साथ ले चलने के लिए बाध्य हो जाते हैं। सीता की वीरता, पतिव्रत धर्म, कर्तव्य निष्ठा और धैर्य को दिखाने हेतु गुरु गोविन्द सिंह जी ने राम-रावण युद्ध में एक मौलिक प्रसंग के



माध्यम से उनका सशक्त चरित्रांकन किया है। राम-रावण युद्ध के समय मेघनाद द्वारा राम और लक्ष्मण को नागपाश में बंधक बनाने पर मूर्छित अवस्था में देखकर सीता जी आवेश में भर जाती हैं और उन्हें नागपाश से मुक्त कर देती हैं इससे राम और लक्ष्मण पुनः युद्ध करने लगते हैं। वह सच्चे अर्थों में सभी विद्याओं की ज्ञाता और वीरांगना हैं। उसका मनोबल और अध्यात्म बल दोनों ही स्तुत्य हैं-

सिय निरख राम मन महि रिसान,

दस अऊर चार विद्या निधान।

पढ़ नागमन्त्र संधरी पाश,

पतिभ्रात जिवह चितभा हुलास ॥

पद्य संख्या ४६६

जब अग्निपरीक्षा के लिए सीता को कहा जाता है तो वह कोई तर्क-वितर्क न करके शान्त मन से इस का सामना करती है। वह सोचती है जब इस कठिनाई का सामना करना ही है तो संकोच क्यों?

गई बैठ ऐसे धनं बिजु जैसे श्रुतं जेम गीता,  
मिली तेम, सीता- पद्य संख्या ६४९

सीता की वीरता, धैर्य और कर्मठता के प्रसंग पूरे रामावतार में बिखरे पड़े हैं। अश्वमेध यज्ञ का अश्व लव-कुश द्वारा रोक लिए जाने पर राम की सेना और लव-कुश के युद्ध में राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न के मूर्छित हो जाने पर सीता एक बार पुनः अपने साहस का परिचय देती हैं और चारों भाईयों को अपनी शक्ति से जीवित कर देती हैं। वह अपने सुहाग की रक्षा हेतु कुछ भी करने को तैयार हैं। वह अपने चरित्र की उदात्तता और श्रेष्ठता द्वारा

भारतीय नारी के उच्चादर्शों को पा लेती हैं-

मूर्छ भए सब लिए उठाई

बाजि सहित तहं गए जहां भाई

देख सीआ पति मुख रो दीना

कहयो पूत विधवा महि कीना

रामावतार पद्य संख्या ८१९

गुरु गोविन्द सिंह जी ने सीता की वीरता धीरता को रामावतार में स्थान-२ पर चरितार्थ किया है। भय तो उसे कभी छुआ भी नहीं। राम ने वनवास जाने से पूर्व अनेक प्रकार से सीता को वनवास में साथ जाने के लिए रोकना चाहा लेकिन सीता ने राम की कोई बात नहीं मानी। यहां तक कि राम ने वन के भयभीत करने वाले जंगली जीवों का भी भय दिखाया लेकिन पतिव्रत का पालन करने वाली सीता पर इसका भी कोई प्रभाव नहीं हुआ। उन्होंने सीता को सुकुमारी और वनवास को कठोर साधना कहकर सीता को रोकना चाहा मगर सब कुछ व्यर्थ। सीता जी की दृढ़ता को देखकर राम को उन्हें वनवास में साथ ले जाना ही पड़ा-

घोर सीआ वन तू सुकुमार कहो हम सो कसते निबहै है  
गूँजत सिंघ हुकारते कोल भयानक भील लखै भ्रम ऐहै  
सूंकत सांप बकारत बाध भकारत भूत महा दुख पैहै  
तू सुकुमार रची करतार विचार चलै तुहि किंऊ बन ऐहै

रामावतार पद्य संख्या २४८

गुरु जी ने रामावतार में सीता जी को एक वीरस्त्री, कर्मशीला, पतिव्रत धर्म का पालन करने वाली आदर्श-पत्नी और साहसी नारी के रूप में चित्रित करने में कोई कमी नहीं छोड़ी है। पूर्ववर्ती राम-काव्यकारों ने सीता जी को इस रूप में चित्रित

न करके एक कुलीन वधू सरल, शालीन, उदार, सुकुमारी, विनम्र आदि गुणों से ही विभूषित किया है। जबकि गुरु जी ने इन सभी गुणों के साथ-२ सीता जी को प्रमुखता के साथ एक वीरांगना, साहसी, सहिष्णु, अध्यात्म बल और मनोबल धारण करने वाली नारी के रूप में चित्रित किया है। उन्होंने रामावतार में केवल उन्हीं प्रसंगों को मुखरित किया है जिनमें सीता जी का धैर्य उच्च शिखर पर दर्शाया जा सकता है। उन्होंने दाम्पत्य जीवन के संयोगात्मक वियोगात्मक पक्षों को अधिक महत्त्व न देकर केवल सीता के व्यक्तित्व को सकारात्मक रूप देने वाले घटनाक्रमों को ही स्थान दिया है। राम की जीवन-संगिनी बनने के बाद हम उसे कर्मक्षेत्र में ही पाते हैं। वह भी अपने वीरपति के साथ अपनी वीरता का प्रदर्शन करती है। वनवास के समय भी वह हिंसक जीवों के साथ साहस और वीरता के साथ रहती है। उन्हें देखकर हिंसक पशुओं ने भी हिंसा का त्याग कर दिया था। रामचरितमानस और वाल्मीकि रामायण में सीता जी का चरित्रांकन भिन्न रूप में हुआ है। सीता जी को रामावतार में केवल और केवल एक वीरवती नारी के रूप में चित्रित कर

गुरु जी ने भारतीय नारियों के लिए नारी का एक आदर्श रूप प्रस्तुत किया है। एक पत्नी के रूप में पति को प्रत्येक क्षेत्र में अपनी शक्ति और साहस का एहसास करवा कर उन्होंने पति के जीवन में पत्नी की भूमिका का जीवन्त उदाहरण प्रस्तुत किया है। सीता जी के प्रति इस दृष्टिकोण के माध्यम से ही गुरु जी की नारी के प्रति उनकी दृष्टि परिलाक्षित होती है। रामावतार की रचना केवल रामकथा की आवृत्ति नहीं है। इसके पीछे पूर्ववर्णित रामकथाओं में एक नए दृष्टिकोण से देखने की अपेक्षा है। गुरु जी ने एक नई विचार-धारा के साथ सभी रामायण में वर्णित पात्रों का नवीनीकरण करके ही चरित्रांकन किया है। सीता जी रामावतार की नायिका है। उनका आदर्श सभी भारतीय नारियों के लिए अनुकरणीय है। गुरु जी दलित और उपेक्षित समाज को एक संघर्ष के लिए तैयार करना चाहते थे जिसमें नारी-जाति की भी सहभागिता हो। इसी भावना से उन्होंने सीता जी के चरित्रांकन में उन गुणों को चरितार्थ किया जो नारी-जाति में उत्थान के लिए उत्तेजना और ऊर्जा पैदा कर सकें। अतः रामावतार में वर्णित सीता जी का व्यक्तित्व अनुकरणीय और प्रेरक है।

—१६३, आदर्श नगर, ओल्ड कैंट रोड़, फरीदकोट। सम्पर्क सूत्र- ९९१५७-०२८४३





## अविभाजित पंजाब ( हरियाणा ) में रचित रामकाव्य: एक परिचय

— श्री राम शरण 'युयुत्सु'

पंचनद (पंजाब) ने कई आकार अपनाए अथवा देखे हैं। पहले के पंजाब (स्वतंत्रताप्राप्ति से पूर्व का पंजाब) में, १९४७ में विभक्त हुए पाकिस्तान का भी काफी क्षेत्र रहा है। सन् १९४७ के पश्चात् का पंजाब 'पेप्सू के विलयवाला पंजाब' जिसमें हिमाचल व हरियाणा भी सम्मिलित रहे हैं। फिर पुनः विभक्ति के पश्चात् का पंजाब (जिसमें से हिमाचल तथा हरियाणा अलग होकर स्वतंत्र प्रदेश बन गए)। परन्तु बार-बार बदलती सीमाओं व स्वरूप के पश्चात् भी, इसके साहित्य और संस्कृति पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा है। आज भी इसके साहित्यिक सम्बन्ध जड़ों से पत्तों तक गहरे रहे हैं। इसी मंतव्य (विचारधारा) को साथ लेकर यह लेख प्रस्तुत करने का प्रयास है।

हरियाणवी लोक मानस में रामायण के सभी पात्र इस सीमा तक रस-बस गए हैं कि- यहां के लोकवासी अपने पुत्र-पुत्रियों के नाम भी इन्हीं पात्रों के नाम से रखते हैं। 'राम' शब्द तो इस सीमा तक जुड़ गया है कि हाली-पाली तक को यह कहते हुए सुना जा सकता है कि- 'मन्नै राम की सूं'। हरियाणवी राम को साक्षात् भगवान् मानते हैं। हरियाणा में परस्पर स्त्री एवं पुरुष एक दूसरे का अभिवादन भी 'राम-राम' शब्द से करते हैं। यहां लोकगीतों में 'राम' शब्द की अनेकों बार पुनरावृत्ति होती है। हरियाणा में रचित काव्य में

रामायण के सभी पात्र कहीं न कहीं बाहुलता से उपस्थित रहते हैं। राम और रामायण के बिना यहां का साहित्य आधा-अधूरा और पंगु रहता है।

हरियाणवी रामकथा का आधार अधिकतर कवियों ने बाल्मीकि रामायण को बनाया है। अहमदबख्स की रामायण का धरातल संत तुलसीदास का 'रामचरितमानस' न होकर महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण है। संतोख सिंह कृत रामायण का तो नाम ही 'बाल्मीकि रामायण' है। जिसमें हरियाणवी संस्कृति की झलक भी स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। यशवन्त सिंह वर्मा 'टोहानवी' ने कथा में कुछ मौलिक परिवर्तन भी किए हैं।

अभी तक के शोध के अनुसार हरियाणवी रामकाव्य का रचनाक्षेत्र अधिकतर कौरवी बोली का क्षेत्र रहा है। यही कारण है कि अनेक विद्वानों ने इन रचनाओं की भाषा का निर्णय अपने-अपने मतानुसार दिया है। किसी ने हिन्दी कहा, किसी ने ब्रज और किसी ने मिश्रित भाषा कहा।

हिन्दी रामकाव्य से भिन्नता या विशिष्टता काव्यरूप एवं काव्यशैलियों की है। किसी ने नाटकशैली को अपनाया है, तो किसी ने सांगशैली को। किसी ने परम्परागत शैली का अनुसरण किया है, तो किसी ने संगीत नाट्यशैली को अपनाया है। बारामासा शैली का प्रयोग भी अपने-आप में अनूठा प्रयोग है।

## श्री राम शरण 'युयुत्सु'

हरियाणवी रामकाव्य परम्परा का अभी तक के शोध के आधार पर पन्द्रहवीं शताब्दी के कवि ईसरदास से प्रारम्भ माना जा सकता है। इसके पश्चात् सोलहवीं शती के संत सूरदास के 'सूर सागर' के नवम स्कन्ध में प्राप्त १५६ पदों की रामकथा को महत्वपूर्ण माना जा सकता है। इसके पश्चात् हृदयराम कृत 'हनुमन्नाटक' जो कि तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' की तरह हरियाणा में लोकप्रिय रहा है। गुरु गोविन्द सिंह इसकी प्रति हमेशा अपने पास रखते थे।

राम एवं कृष्ण काव्य-परम्परा में भी अनेकानेक ग्रन्थ यहां लिखे जाते रहे हैं। राम काव्य-परम्परा से सम्बन्धित कुछ ग्रन्थ हैं— 'अध्यात्म रामायण' (गुलाब सिंह), 'आत्मरामायण' (हरि सिंह), 'आदि रामायण' (सोढी मिहिरबान), 'सतसैया रामायण' (कीरन सिंह), 'सार रामायण' (रामदास), 'सुधा-सिन्धु रामायण' (भाई वीर सिंह), 'कीरत रामायण' (कीरत सिंह), 'बाल्मीकि रामायण भाषा' (संतोख सिंह), 'राम रहस्य' (रहनी), 'रामाश्वमेध' (हरिनाम), 'राम गीत' (मेहर सिंह), 'रामायण' (कविचन्द), 'रामावतार' (गुरु गोविन्दसिंह)। इनमें से अधिकांश रचनाएं अनुदित हैं, तथापि इनके रचयिताओं ने मौलिक उद्भावनाएँ भी की हैं। कुछ मौलिक रचनाएं भी हैं।<sup>१</sup>

इनके अतिरिक्त जसवन्त सिंह कृत 'रामायण' लाला देवतराम कृत बांगरू में पद्यानुवाद, यशवन्त सिंह वर्मा 'टोहानवी' कृत 'आर्य संगीत रामायण' 'राधेश्याम रामायण' के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता।

रामकाव्य परम्परा में हरियाणवी के किसी अज्ञात (अनजान) लेखक ने 'आल्हारायण' की रचना की है। इसमें से कुछ ही कवियों की रामायण उपलब्ध हो सकी हैं। अतः इन रचनाओं की खोजबीन तथा शोध कार्य किये जाने की आवश्यकता है।

हरियाणा की सांग-परम्परा पर चर्चा करें तो थानेसर (स्थाणेश्वर) नगर में सांगों का इतिहास सवा सौ वर्ष पुराना है। बालकृष्ण मुज्तर के मतानुसार अहमदबख्स थानेसरी का नाम सर्वोपरि है। उन्होंने अनेक सांग लिखे, जिनमें 'रामायण' को छोड़कर इनके अन्य सांगों की हस्तलिखित प्रतियां अनुपलब्ध हैं।

बाल कृष्ण मुज्तर के ९५ वर्षीय वयोवृद्ध पिता पं. राजाराम भारद्वाज के अनुसार अहमदबख्स (मुसलमान) को हिन्दी, उर्दू और ज्योतिष का अपूर्व ज्ञान था। मुसलमान होते हुए भी उनमें हिन्दू धर्मशास्त्रों की गहरी जानकारी थी। उन्होंने अपने सांगों में हिन्दू-मुस्लिम संस्कृति का सुन्दर समन्वय किया है।<sup>२</sup>

सांगशैली में अहमदबख्स द्वारा लिखी गई,

१. डा. जयभगवान गोयल, गुरुमुखी लिपि में उपलब्ध हिन्दी साहित्य, जागृति मासिक, नव. १९८३, पृ. १८

२. डा. रामपत यादव, डा. शर्मिला यादव, कुरुक्षेत्र के हिन्दी साहित्यकार २०१६, पृ. १८



इस रामायण का कुरुक्षेत्र निवासी श्री बालकृष्ण मुज्तर ने सम्पादन बड़ी सूझ-बूझ एवं निष्ठा के साथ किया है, जिसे हरियाणा साहित्य अकादमी ने प्रकाशित किया है। 'रामायण' का आधार महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण है। सम्पूर्ण छः काण्डों-आदिकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किंधाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड और लंकाकाण्ड में विभाजित है। इन की शैली इतिवृत्तात्मिक है। उन्होंने अपनी रचनाओं में दोहो-चम्बोलो-छन्दों का प्रयोग किया है। इन की रामायण में १८७३ चम्बोले हैं; प्रत्येक चम्बोले में आठ पंक्तियाँ हैं।

सुप्रसिद्ध शायर व साहित्यकार श्री बालकृष्ण मुज्तर के अनुसार सन् १८७० से १८९५ तक, पच्चीस वर्षों की अवधि में कुरुक्षेत्र (थानेसर) निवासी आठ लोककवियों द्वारा लगभग तीस सांग लिखे गए व मंच पर खेले गए। सांग से पहले रामलीलाओं का प्रचलन पूरे उत्तरी भारत में था। इसी अवधि में थानेसर निवासी अहमदबख्स ने 'थानेसरी रामायण' तथा योगेश्वर बालकराम ने अपने अन्य सांगों के साथ-साथ रामायण की रचना की।

कैथल निवासी डॉ. लक्ष्मी नारायण शर्मा द्वारा रचित एवं सन् १९८७ में प्रकाशित 'सनातन रामवृत्त और गोस्वामी तुलसीदास....' अपनी देशकालातीत मूल्योन्मुखी जययात्रा में श्री राम सम्बन्धी वृत्त मानवीय चिन्तन, चेतना और व्यवहार का वैश्विक मर्यादा कोश है। भारतीय

संस्कृति, इतिहास और मनीषा के समीप रामवृत्त से बड़ी कोई आचार संहिता नहीं है।<sup>३</sup> डॉ. लक्ष्मी नारायण शर्मा जी की कृतियों और उनके व्यक्तित्व के विषय में जानने के लिए 'डॉ. लक्ष्मी नारायण शर्मा का व्यक्तित्व और रचनासंसार' शीर्षक के शोध-प्रबन्ध का स्वाध्याय करना चाहिए।

प्रस्तुत ग्रन्थ में श्रीराम, तुलसी और इन दोनों से सम्बद्ध कृतित्व का जिस स्तर पर तथा जिस शैली में रूपायन हुआ है, वह अनुभूति की प्रामाणिकता के साथ-साथ उस त्रिगुणात्मक आस्था, सत्य का भी परिचालक है; जहाँ भारतीय मनीषा का पावनतम बिन्दु समन्वित प्राप्त करता है।<sup>४</sup>

डॉ. लक्ष्मीनारायण शर्मा (कैथल) की ग्रन्थावली का सम्पादन साहित्यकार- संन्यासी स्वामी (डॉ.) ओम आनन्द सरस्वती (चित्तौड़गढ़) ने तथा संयोजन डॉ. राम कुमार गुप्त (अहमदाबाद) और प्रकाशन शान्ति प्रकाशन रोहतक ने, सन् २०१० में किया। इस ग्रन्थावली को पांच भागों में, यथा प्रथम भाग में श्रीराम और रामायण, द्वितीय भाग में रामकथा और कथाकार, तृतीय भाग में शोध और समीक्षण, चतुर्थ भाग में सर्जनात्मक पक्ष तथा पंचम भाग में चिन्तनात्मक पक्ष संयोजित किया गया है।

वर्तमान में हम इस ग्रन्थावली के प्रथम तथा द्वितीय भाग पर ही चर्चा करेंगे। श्रीराम और श्री

३. स्वामी (डा.) ओम आनन्द सरस्वती, डा. लक्ष्मी नारायण शर्मा ग्रन्थावली, २०१०, पृ. १७

४. वही, पृ. १८

## श्री राम शरण 'युयुत्सु'

रामायण शीर्षक के प्रथम भाग को सार्वभौम श्रीराम तथा श्रीरामायण कथा उपशीर्षकों से दो खण्डों में संयोजित किया है। प्रथमखण्ड में सार्वभौम श्रीराम उपशीर्षक के अन्तर्गत, १. दिव्य परिकल्पना, २. श्रीराम का व्यक्तित्व, ३. वाल्मीकि रामायण का प्रतिपाद्य, ४. अध्यात्म रामायण का प्रतिपादक, ५. रामचरितमानस का प्रतिपाद्य, ६. वाल्मीकि रामायण एवं अध्यात्म में श्रीराम तथा ७. भारतीय साहित्य में श्रीराम उपशीर्षक के लेख समाहित हैं।

खण्ड-२ में श्री रामायण कथा/ The Ancient Recital शीर्षक के अन्तर्गत १. श्रीरामायण कथा, २. मानव रूप में श्रीराम, ३. आदर्श बाललीला और मुनि विश्वामित्र, ४. अहल्या प्रसंग: नारी सम्मान की प्रतिष्ठा, ५. गंगा अवतरण की कथा, ६. काल धनुष भंजन और मंगलमय विवाह, ७. अयोध्या आगमन और श्री दशरथ की अंतिम आकांक्षा, ८. सामूहिक उत्सव और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा, ९. श्रीराम का पुत्रधर्म, १०. पुत्रवती होने का गौरव, ११. कालकर्म गति और दशरथ की भागवती चेतना, १२. सनातन वनयात्रा और अयोध्या का राजसिंहासन, १३. देवी-राक्षसी वृत्तियाँ और श्रीराम की अरण्य यात्रा, १४. भुवन यौनाचार एवं राक्षसी वृत्ति, १५. प्रकृति की सत्ता पर आसुरी शक्तियों का अधिकार, १६. श्रीराम का महामानवीय नेतृत्व और संगठन-क्षमता, १७. श्रीहनुमान् जी का दिव्यतम पौरुष और अनन्य भक्ति, १८. सत्य सनातन जय यात्रा, १९. धर्ममय

रथ और सनातन महासंग्राम, २०. विजयश्री और जननी जन्मभूमि का स्मरण, २१. आकाशमार्ग से अयोध्या की ओर, २२. अयोध्या की महिमा और भरत मिलाप, २३. श्रीराम राज्याभिषेक और रामायण, २४. नित्य श्री राम और सत्य सनातन श्री रामायण कथा और २५. श्री रामायण कथा में आए विशिष्ट शब्द उपशीर्षक लेखों को सम्मिलित किया गया है।

इस ग्रन्थावली के द्वितीय भाग में 'रामकथा और कथाकार' शीर्षक के अन्तर्गत खण्ड-३ में Universal Dimensions of Shri Ram Katha शीर्षक के अन्तर्गत १. Introduction २. Glossary तथा ३. Draft Valmeeki Raamaayana उपशीर्षक के लेख तथा खण्ड-४ में 'सनातन रामवृत्त और गोस्वामी तुलसीदास' शीर्षक के अन्तर्गत १. सनातन रामवृत्त: कतिपय आदिसूत्र, २. भारतीय मनीषा का उज्ज्वलतम कथा सीमान्त: रामचरित मानस, ३. तुलसी काव्य की समाजसापेक्षता का युगीन सन्दर्भ और आधुनिक प्रासंगिकता भूमि तथा ४. अनुत्तरित प्रश्नों के आयाम और रामवृत्त में उनका अन्वेषण और खण्ड-५ में मानसकार की अन्तर्यात्रा शीर्षक के अन्तर्गत- १. मानसकार: एक अन्तर्यात्रा, २. मानस में उभरता रामबिम्ब, ३. मानस की समष्टि चेतना तथा ४. अभुक्तमूलीय यन्त्रणा और मानस का हंस उपशीर्षक के लेख समाहित हैं।

डॉ. लक्ष्मी नारायण शर्मा की श्रीराम में असीम आस्था है। परिणामतः इस ग्रन्थ की धारा-



प्रवाह भी गंगोत्री-अलकनन्दा से नीचे की भूमि का नहीं है। वस्तुतः इस ग्रन्थ के माध्यम से तुलसी का जो रूपायन हुआ है, वह एक और शिलालेख है।

प्रबुद्ध शिक्षाविद् एवं प्रतिष्ठित साहित्य-सेवी, कैथल निवासी डॉ. दामोदर वासिष्ठ की विद्वान् सुपुत्री सुनीता वासिष्ठ का शोधकार्य विषय जिला कैथल के कस्बा पुण्डरी निवासी लाला देवतराम कृत 'श्रीरामनाटक का संपादन एवं विश्लेषण' रहा है। शोधकार्य सम्पन्नता के पश्चात् इस ग्रन्थ का प्रकाशन सन् २००५ में 'लाला देवतराम कृत श्रीरामनाटक का संपादन एवं विश्लेषण' शीर्षक से साहित्य संस्थान गाजियाबाद से संपन्न हुआ है।

लाला देवतराम का जन्म कस्बा पुण्डरी में लाला राधेलाल के घर १८७० ई. में हुआ। ७४ वर्ष की आयु में इनका स्वर्गवास सन् १९४४ में हुआ। डॉ. सुनीता वासिष्ठ के कथनानुसार नाट्य-कवि लाला देवतराम कृत 'श्रीरामनाटक' का सर्वप्रथम फारसी लिपि में प्रकाशन लाहौर में सन् १९१६ में हुआ था। यह इसका अंतिम संस्करण भी था। तत्कालीन पंजाब प्रांत में हिन्दी लेखन के लिए अधिकतर फारसी लिपि का ही प्रयोग किया जाता था। शनैः शनैः फारसी लिपि के प्रचलन में कमी के कारण मंचन के समय नाटक-प्रति की आवश्यकता को ध्यान में रखकर क्षेत्र के कलाकारों द्वारा नाटक का लिप्यंतरण कराया जाने

लगा। सौभाग्य से नागरी-लिपि में लिप्यंतरण करवाई दो पोथियां डॉ. दामोदर वासिष्ठ कैथल के निजी पाण्डुलिपि संग्रहालय से प्राप्त हो गईं। उर्दू में प्रकाशित प्रति भी वहीं से उपलब्ध हुई। अतः इन प्रतियों का नामकरण 'कैथल प्रति' और दूसरी का 'पाई प्रति' रखा गया। मूल प्रति 'श्रीराम नाटक' से ही अभिहित हुई।

मूल पाठ में कवि लाला देवतराम ने श्रीराम नाटक के सात काण्डों में, यथा बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किंधाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंकाकाण्ड तथा उत्तरकाण्ड में विभाजित किया है।

लोकधर्मी कवि देवतराम जागरूक नाट्यकार थे; इसलिए उन्होंने विषयवस्तु के चयन के साथ-साथ एक ऐसी शैली को चुना, जो शिक्षित-अशिक्षित, शहरी-ग्रामीण, संस्कारित-असंस्कारित समूची जनता में मान्य हो सके। अतः उन्होंने प्राचीन रागों, जैसे- धनाश्री, विष्णुपद, सोहनी, आसावरी आदि तथा मध्यकालीन गजल, गजल कव्वाली, ख्याल, शेर और लोक जीवन में प्रचलित चौबोला, चौबोला चलत, चौबोला डयोड, बहरेतबील, रागनी, रागनी देस, रागनी मुलतानी, लावनी आदि को अपनाया ताकि सभी प्रकार के दर्शकों का अनुरंजन हो सके। कवि का उक्त तीन काव्य शैलियों पर पूर्ण अधिकार था। अहमदबख्स ने अपनी रचना केवल चौबोला में की। टोहाना निवासी जसवंत सिंह ने बहरेतबील,

५. डा. सुनीता वासिष्ठ, लाला देवतराम कृत श्रीरामनाटक का संपादन एवं विश्लेषण, साहित्य संस्थान, गाजियाबाद, पृ. ११

## श्री राम शरण 'युयुत्सु'

लावनी और चौबोला में की; लेकिन देवतराम ने उक्त दोनों की शैली को अपने कविकर्म में समाहित कर एक नवीन अभिनव और सर्वमान्य शैली को जन्म दिया, जिससे वह जनप्रिय हो सके।

जिस कवि को सरस्वती कंठ हो, उसे आशु-कवि या तत्काल कवि के नाम से सम्बोधित किया जाता है। ऐसे ही कवि थे, जिला करनाल तहसील गुहला के गाँव सीवन निवासी पंडित शादीराम जी। कवि राम तथा दुर्गा के भक्त थे। कवि ने राम-गाथा में श्री राम की यशगाथा का वर्णन किया है। पं. शादीराम का जन्म विक्रमी सम्वत् १९४६ (सन् १८८९ ई.) के कार्तिक मास के कृष्णपक्ष की नौमी को पं. मनसा राम के घर हुआ।

पंडित शादीराम जी की तीन चर्चित पाण्डुलिपि 'रामगाथा', 'श्रीकृष्ण चरित्र' तथा 'उषा अनिरुद्ध' को श्री अंगिरा शोध संस्थान, जीन्द, ने सन् २००८ ई. में 'पंडित शादीराम ग्रन्थावली' शीर्षक से प्रकाशित किया है। इन पाण्डुलिपियों का कुशल सम्पादन पाण्डुलिपि मर्मज्ञ विद्वान् कैथल निवासी डॉ. दामोदर वासिष्ठ ने किया। यह ग्रन्थ (पंडित शादीराम ग्रन्थावली) कुल १८८ पृष्ठों में से 'रामगाथा' १३२ पृष्ठों में, 'श्री कृष्ण लीला' २२ पृष्ठों में तथा 'उषा चरित्र' १८ पृष्ठों में समाहित हैं।

पंडित शादीराम ग्रन्थावली के सम्पादकीय में डॉ. दामोदर वासिष्ठ ने कहा है- काफी प्रयास के बाद

उनकी तीनों पाण्डुलिपियाँ 'रामगाथा', 'श्रीकृष्ण चरित्र' तथा 'उषा अनिरुद्ध' प्राप्त हुई; परन्तु वास्तविक कार्य पूरा होने में कुछ समय लग गया। पंडित शादीराम की 'रामगाथा' शुद्ध 'पश्चिमी कौरवी' का प्रथम सांग है। लगभग सवा सौ साल पहले की कुरुक्षेत्र की बोली में निबद्ध यह रचना तुलसीदास, केशव, सूदन की चौबोलों की परम्परा में एक उत्कृष्ट कृति है। पंडित देवतराम (पुण्डरी निवासी) ने भी अपने रामकाव्य में चौबोलों की इस परम्परा को आगे बढ़ाया है।

पं. शादीराम की 'रामकथा' का नयापन तथा उन चौबोलों की विलक्षणता पाठक को चमत्कृत करती चलती है। विशेषकर केवट और शबरी के प्रसंग तो अपने अनोखेपन के कारण मन को छू लेते हैं। केवट की नाव में नदी पार करने के बाद जब भगवान् श्रीराम उसे सीता के आभूषण उतराई के बदले देना चाहते हैं, तो केवट इंकार करते हुए ठेठ हरियाणवी अंदाज में कहता है कि- मुझे अठमासी (सोने की गिन्नी) नहीं चाहिए। प्रकारांतर में केवट अपने लिए भगवान् से मोक्ष मांग लेता है। भगवान् को पानी पिलाते हुए, राम के होठों से स्पर्श हुई जल की बून्दों को अपने हाथों में समेट कर उन्हें चाट लेता है, ताकि वह किसी के पाँव के नीचे अपवित्र न हो जाएं। राम कथा में इस तरह का नयापन इसे अन्य राम कथाओं से अलग करता है।<sup>१</sup> बानगी देखिए-

६. डॉ. सुनीता वासिष्ठ, लाला देवतरामकृत श्रीरामनाटक का संपादन एवं विश्लेषण, साहित्य संस्थान, गाजियाबाद। पृ. ७-८

७. डॉ. दामोदर वासिष्ठ, पंडित शादीराम ग्रन्थावली, श्री अंगिरा शोध संस्थान, जीन्द, पृ. ७

८. वही, पृ. ४२



प्रभु तुम घट-घट के वासी,  
 नहीं हीरे लाल की भूख,  
 नहीं मैं चाहता अठमासी।।  
 आये आप हमारे घाट पर, हमें कर दिये पार।  
 जब मैं आऊँ आपके घाट पर, कर देना उद्धार।।  
 काट देना यम की फांसी।।२।।

भजन मल्लाह का (६५)

डॉ. रत्नचन्द्रशर्मा ने श्रीराम की कथा को आधार बनाकर 'शबरी' तथा 'त्रिजटाटेक रक्षा' नाम से दो खण्डकाव्य और चार महाकाव्य- 'निषादराज', 'अग्निपरीक्षा', 'रामराज्य' तथा 'वनगमन' की रचना करके अपनी अद्भुत कवि-प्रतिभा का परिचय दिया। इनके अतिरिक्त इनका खण्डकाव्य 'यक्ष पंचाशिका' तथा 'अश्वत्थामा' महाकाव्य की रचना करने का भी संदर्भ आया है। 'शबरी' पौराणिक आख्यान की पृष्ठभूमि में रचा गया तथा 'त्रिजटाटेक रक्षा' खण्डकाव्य का आधार भी वाल्मीकि रामायण है। कवि ने 'वन गमन' महाकाव्य को ११वें- १२वें सर्ग में वर्णित कथा को लेकर उद्घाटित किया है।

डॉ. रत्नचन्द्र शर्मा का जन्म १९ अप्रैल, १९१९ ई. (संवत् १९७६) को जिला सियालकोट (पाकिस्तान) के गांव इन्दकी में पिता पंडित गणपतराम के घर माता चन्दन देवी की कोख से हुआ। इनका कर्म क्षेत्र हरियाणा रहा।

भाषाविभाग हरियाणा द्वारा पुरस्कृत महाकाव्य 'निषादराज' वाल्मीकि रामायण के अयोध्याकाण्ड में आए गुह निषाद के प्रसंग को

आधार बनाकर सन् १९७६ में रचा गया। इस में महाकाव्य के परम्परागत गुणों से युक्त १४ सर्ग और ९०९ छन्द हैं। यह महाकाव्य अछूतोद्धार का साकार सपना है। कवि ने गुह निषाद को श्रीराम का मित्र बना कर समसामयिक हरिजनोद्धार की विचारधारा को परिपुष्ट किया है। महाकाव्य में अहिल्या-प्रसंग को भी तर्क सम्मत बना कर प्रस्तुत किया है।

रामायण के 'अग्निपरीक्षा' प्रसंग को उपजीव्य बना कर कवि ने एक महाकाव्य की रचना की है। सोलह सर्गों में विभक्त इस महाकाव्य की समस्त घटनाओं का केन्द्र लंका है। कवि ने सीता की अग्निपरीक्षा के प्रचलित रूप का अन्धानुकरण न करते हुए उसे युगानुरूप व तर्क-संगत ढंग से प्रस्तुत करते हुए, उस में आवश्यक परिवर्तन किए हैं।

'रामराज्य' महाकाव्य भी १६ सर्गों में विभाजित है और इनकी प्रमुख घटनाओं- लवणासुर वध, कुत्ते का न्याय, शम्बूक कथा, गन्धर्व-विजय, अश्वमेध आदि का प्रमुख आधार 'वाल्मीकि रामायण' को बनाया गया है। 'रामराज्य' में भी श्रीराम को चक्रवर्ती सम्राट दिखाने का प्रयास किया गया है। वे केवल एक सीमित प्रदेश के शासक नहीं हैं। कथा में कई परिवर्तन किए गए हैं। विशेष रूप से शम्बूक वध की कथा को कवि ने संदिग्ध माना है; क्योंकि शबरी के जूठे बेर खाने वाले, निषाद को गले लगाने वाले, केवट को स्नेह दर्शाने वाले राम एक तपस्वी का वध कैसे कर सकते हैं?

## श्री राम शरण 'युयुत्सु'

सीता-वनवास की प्रचलित कथा को भी कवि ने नहीं अपनाया क्योंकि उनकी धारणा है कि यह कथा रामायण के कथानक में प्रक्षिप्त है। इस प्रकार डॉ. रत्नचन्द्र शर्मा ने राम के जनरक्षक कवच व परहितकारी रूप को भी उभारा है।

'वनगमन' महाकाव्य रामकथारूपी महायज्ञ की अन्तिम आहूति है; जिस का प्रकाशन सन् १९८७ में हुआ। तेरह सर्गों तथा ८८४ छन्दों की इस रचना में कवि ने राम का राज्याभिषेक सुनिश्चित होने से लेकर राम वनगमन तक ही घटनाओं को लिया है। कवि ने वनगमन के औचित्य को तर्क की कसौटी पर कसते हुए, राम के चरित्र के उज्ज्वलतम पक्ष को ही मुखरित किया है। 'त्रिजटाटेक रक्षा' खण्ड काव्य के दो भाग हैं, जिनमें कुल ११५ (६३+५२) छन्द हैं। इस खण्ड-काव्य के नायक मुनि त्रिजटा हैं, जो बहुत विपन्नावस्था में जीवन व्यतीत करते हैं। राम उन्हें सैंकड़ों गौओं का स्वामित्व देकर उसकी टेक रखते हैं।

महाकवि संतोख सिंह का जन्म १७८७ ई. में जिला यमुनानगर के गाँव बूड़िया में पिता देवा सिंह के घर माता रजादी (राजदेवी) की कोख से हुआ। इन्होंने पंजाब के अमृतसर, पटियाला तथा उ.प्र. की काशी नगरी में प्रवास कर ज्ञान अर्जित किया। इनकी प्रसिद्धि सुनकर सन् १८२७ में कैथल नरेश भाई उदय सिंह ने उन्हें अपने पास बुला लिया और वे जीवनपर्यन्त यहीं रहे।

भाई संतोख सिंह एक बहुश्रुत, बहुज्ञ एवं बहुदर्शी विद्वान् थे। 'नाम कोश', 'गुरु नानक प्रकाश', 'गरब गंजनी', 'वाल्मीकि रामायण भाषा', 'आत्मपुराण टीका' और 'गुरु प्रताप सूरज' उनकी प्रामाणिक रचनाएँ हैं। इनकी रचना 'वाल्मीकि रामायण' विशेष उल्लेखनीय है। यह रचना वाल्मीकि रामायण का दोहा-चौपाई से परिपूर्ण स्वतंत्र अनुवाद है।

सन् १८३१-१८३४ ई. में भाषानुवाद की गई 'वाल्मीकिरामायण' को कैथल नरेश उदय सिंह ने पुरस्कृत किया। उन्हें तीन गाँव सम्मानस्वरूप जागीर में दिये। इस रामायण के १२१४ पृष्ठ हैं और प्रत्येक पृष्ठ पर १९ पंक्तियाँ हैं। ग्रन्थ के तीन खण्डों में ६५१ सर्ग हैं। इनकी भाषा बृज-मिश्रित-कौरवी है। कवि ने सभी प्रसंगों का सुन्दर करुणामय वातावरण में वर्णन किया है।

पंजाब में गुरुमुखी लिपि के माध्यम से ब्रजभाषा हिन्दी की कविता लिखने वाले असंख्य कवि हुए हैं। मध्यकालीन पंजाब का लगभग समूचा साहित्य इसी कोटि का कहा जा सकता है। भाई गुलाब सिंह उन्हीं साहित्यकारों में से एक हैं, जिन्होंने गुरुमुखी लिपि के माध्यम से ब्रज का उत्कृष्ट साहित्य रचा।

साधु गुलाब सिंह का जन्म सम्वत् १७८९ में पिता रामा के घर माता गौरी की कोख से लाहौर जिला की चुनियाँ तहसील के अन्तर्गत सेखव ग्राम में हुआ। इनका कार्यक्षेत्र कुरुक्षेत्र (थानेसर)

९. प्रो. जयभगवान गोयल, (लेख) संतोख सिंह, हरियाणा के प्रमुख साहित्यकार, सं. डा. लाल चन्द गुप्त 'मंगल', पृ. १८-१९



रहा। लगभग सोलह वर्ष की आयु में वे सब कुछ छोड़ कर विद्याध्यन के लिए काशी चले गए। लगभग बीस वर्ष तक वहां रहने के पश्चात् संवत् १८२५ के आस-पास पंजाब लौट आए और कुरुक्षेत्र में सरस्वती के पूर्वी तट पर अपने गुरु सन्त मान सिंह के पास रहते हुए, इन्होंने सम्वत् १८३० में 'कर्म विपाक', सम्वत् १८३४ में 'भावरसामृत', सम्वत् १८३५ में 'मोक्षपंथ प्रकाश', सम्वत् १८३९ में 'अध्यात्म 'रामायण', सम्वत् १८४६ में 'प्रबोध चन्द्रोदय' नाटक तथा 'स्वपनाध्यायी' के भाषानुवाद प्रस्तुत किये।<sup>१०</sup> इनके अतिरिक्त, इनका अन्य प्रसिद्ध ग्रन्थ 'राम नाम प्रताप प्रकाश' भी है। इस ग्रन्थ में राम के सम्बन्ध में जिन-जिन ग्रन्थों में वर्णन है, उन सभी के भाव लेकर दोहों की रचना की गई है। इनकी भाषा कौरवी है। इनके विद्यागुरु सन्त मान सिंह थे। उन्होंने इन्हें सिक्खमत की दीक्षा भी दी। 'अध्यात्म रामायण' (७९-४७) में कवि गुलाब सिंह ने माता-पिता के नाम के साथ-साथ अपना नाम जोड़ कर कथ्य (परिचय) को स्पष्ट कर दिया है।  
**गौरी श्री सुभमात पिता जगराईया नामा।**

**गुलाब सिंह मतिमान भयो सततां के धार्मा ॥**

कवि गुलाब सिंह की सर्वोत्कृष्ट एवं महत्त्वपूर्ण कृति 'अध्यात्म रामायण' का भाषानुवाद अथवा पुनः सृजन है। यह रचना व्यास कृत संस्कृत रचना का, मौलिक उद्भावनाओं से

युक्त एक स्वतंत्र काव्यानुवाद है। यह एक पौराणिक कृति है और भाषा, भाव एवं कला की दृष्टि से कवि गुलाब सिंह के काव्य-कौशल की प्रतिष्ठा स्थापित करने में समर्थ है। यह रचना सैन्ट्रल पब्लिक लायब्रेरी, पटियाला की पाण्डुलिपि- संख्या १९०२ तथा भाषा विभाग पुस्तकालय, पटियाला की पाण्डुलिपि संख्या ३६८ पर उपलब्ध है।<sup>११</sup>

यह रचना कांडों में विभक्त है और उमा-महेश्वर संवादरूप में लिखी गई है। इस में मर्यादा पुरुषोत्तम राम के चरित्र की सामाजिक उज्ज्वलता पर प्रकाश डाला गया है। कवि प्रायः नैतिक दृष्टि से चरित्रांकन करता रहा है। रचना में सुन्दर ब्रज-भाषा का प्रयोग हुआ है। कवि सादृश्यता स्थापित करने, उपमाएं जुटाने और रूपक बांधने में बड़ा सिद्धहस्त है। शरीर के अंगों के अनुकूल उपमान अत्यन्त आकर्षक बन पड़े हैं। 'अध्यात्म रामायण' में दोहा, चौपाई, छप्पय, कवित्त, सवैया, सोरठा, झूलना, मधुमार आदि छन्दों का प्रयोग हुआ है। अधिक प्रयोग दोहा-चौपाई का ही हुआ है।

हरियाणवी के काव्य-नाटककार यशवन्त सिंह वर्मा 'टोहानवी' ने 'आर्य संगीत रामायण' की रचना की है। यशवन्त सिंह वर्मा का जन्म सन् १८८१ ई. में जिला हिसार के कस्बा टोहाना में हुआ।

डॉ. कुमारी सुशीला आर्या का इस रामायण

१०. प्रो. मनमोहन सहगल, लेख गुलाब सिंह, हरियाणा के प्रमुख हिन्दी-साहित्यकार, सं. डा. लाल चन्द गुप्त 'मंगल', पृ. १२-१३

११. वही, पृ. १६



के सम्बन्ध में कथन है कि- 'यह कवि की सर्वाधिक प्रचलित एवं लोकप्रिय रचना है। यह रचना प्राचीन आर्यसभ्यता का प्रतिबिम्ब होने से हर सम्प्रदाय के मनुष्यों के लिए शिक्षा का अनुपम कोष है।'

'आर्य संगीत रामायण' के रचयिता यशवन्त सिंह टोहानवी ने इस पुस्तक की भूमिका में लिखा है कि- 'रामायण के सम्बन्ध में थियेट्रिकल (नाटक) कम्पनियों के असभ्य ड्रामे और गैर-जिम्मेदार लोगों के सिद्धान्त-विरुद्ध गाने साधारण जनता पर बहुत बुरा प्रभाव डाल रहे थे, इन हालात को देख और सुनकर अनुभव किया गया कि एक ऐसी गायन रामायण तैयार की जाए जिसमें उपर्युक्त बुराईयाँ बिल्कुल न हों।

रामायण के विषय में जन-समुदाय में प्रचलित भ्रान्त धारणाओं जैसे सीता की पृथ्वी से उत्पत्ति आदि को इन्होंने स्पष्टतया नकारा है। इसकी भाषा के सम्बन्ध में कवि का कहना है कि- जहां तक मुझ से हो सका, मैंने उर्दू शब्दों को बहुत कम बरता है। हिन्दी का ध्यान अधिक रखा है, परन्तु जहां उर्दू शब्दों को छोड़ा है, वहां गूढ़ भाषा से भी मुख मोड़ा है।

हरियाणा के प्रतिष्ठित विद्वान् पं. रामेश्वरदत्त शर्मा ने 'हरियाणा तिमिर भास्कर रामायण' शीर्षक से हरियाणवी भाषा में रामायण का सृजन किया है। कवि रामेश्वरदत्त शर्मा का जन्म सन् १८८६ ई. में जिला कैथल के कस्बा कलायत में तथा इनका स्वर्गवास १९६३ ई. में हुआ। इनके पिता का नाम श्री चेतन राम शर्मा तथा दादा का

नाम श्री बिशन दत्त शर्मा है, जो महाराजा पटियाला के राजपुरोहित थे।

इस रामायण का रचना काल सन् १९२५ से १९४१ के बीच रहा। यह रामचरित मानस की तरह 'काण्डों' में विभाजित है। इस रामायण का नागरी लिपि में लिप्यन्तरण भी रचयिता रामेश्वरदत्त शर्मा के पौत्र पं. जयकुमार ने किया। 'हरियाणा तिमिर भास्कर रामायण' की मूल प्रति श्री शरतकुमार गौड़ गाँव फरल (कुरुक्षेत्र) के पास है, जो कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से इस पर शोध कार्य कर रहे हैं।

कुरुक्षेत्र जनपद के गाँव पवनावा निवासी स्वामी साधुराम संत होने के साथ-साथ साहित्यकार भी थे। उन्होंने 'श्रीमद्भागवत गीता ज्ञान प्रबोधिनी, 'श्री कुरुक्षेत्र यात्रा पथ-प्रदर्शक' तथा 'अथ दशरथ रामायण' जैसे उत्कृष्ट ग्रन्थों की रचना की। 'अथ दशरथ रामायण' स्वामी जी की महत्त्वपूर्ण रचना है। २३० पृष्ठों के इस ग्रन्थ में भूत, भविष्य और वर्तमान की घटनाओं का वर्णन है। ग्रन्थ के प्रथम खण्ड में प्रमुख पात्रों का वर्णन है। द्वितीय खण्ड में संत जी ने माया को अहंकार की माता माना है। इस में कलियुग का भी विस्तार से वर्णन किया है। ग्रन्थ के तीसरे खण्ड में ज्ञानयोग और मोक्ष का विस्तार से वर्णन किया है।

हरियाणा के लोक मानस को रामकाव्यामृत से आप्लावित करने के लिए श्री रामेश्वर दयाल शास्त्री ने हरियाणवी रामायण की रचना करके निश्चय ही 'हरियाणा के लोक जीवन का बड़ा



उपकार किया है। अखिल भारतीय साहित्य परिषद् भिवानी के सत्प्रयास से प्रकाशित इस ग्रन्थ के प्रकाशन से हरियाणवी भाषा को 'महाकाव्य' नामक विधा की अनूठी उपलब्धि हुई है। सभी वर्गों के लोग लोकभाषा में रचित इस पुनीत रचना के माध्यम से रामकथा का आनन्द ले सकते हैं।

रामेश्वर दयाल शास्त्री का जन्म २४ मई १९१९ को जिला महेन्द्रगढ़ के गाँव पाल्हावास नामक स्थान पर श्री श्याम सुन्दर जी के घर हुआ। इन्होंने सन् १९८८ ई. में 'हरियाणवी रामायण' की रचना की है। इस रामायण की सम्प्रेषणता के सम्बन्ध में डा. हरिश्चन्द्र वर्मा का कथन है कि— जहाँ-जहाँ लोक-जीवन की मूल अनुभूतियों के प्रसंग आए हैं। वहाँ शास्त्री जी की लोकभाषा अनुभूतियों को उछल-उछल कर पकड़ने में अपनी निहित जीवनी-शक्ति का परिचय देने लगती है।<sup>१२</sup>

हरियाणवी रामायण में महाकाव्य के अनुरूप मंगलाचरण, प्रकृतिवर्णन एवं प्रसंगानुकूल सभी रसों का समावेश हुआ है। शास्त्री जी ने हरियाणवी भाषा की गरीमा को बढ़ाने के लिए लोकप्रचलित मुहावरों, सूक्तियों और पदबन्धों का सुष्ठु प्रयोग किया है। उनकी चित्रात्मक शैली में स्थान-स्थान पर कुछ दृश्य तो मूर्तिमान् से हो उठे हैं। हरियाणवी साहित्य में

इसका मूर्धन्य स्थान है।

कुरुक्षेत्र निवासी रामसिंह रचित 'लघु रामायण' की सूचना ज्ञानी शमशेर सिंह अशोक ने 'पंजाबी हत्थ लिखतां दी सूची' में दी है। यह रचना सम्बत् १९२४ में हुई थी। ये किन्हीं कृपा सिंह के शिष्य तथा ठाकुर हरिदयाल के पौत्र शिष्य थे।<sup>१३</sup>

कवि रामसिंह कुरुक्षेत्र के प्रसिद्ध तीर्थ सन्निहित के निकट ही निवास करते थे। इनके द्वारा रचित 'लघु रामायण' नामक ग्रन्थ बारह मासी शैली में १२ खण्डों में बांटा गया है। जिस में सम्पूर्ण रामकथा सुन्दर ढंग से वर्णित की गई है। इस सूचना के केवल ३४ पन्ने हैं। रचना में दोहा छंद का प्रयोग अधिक किया गया है।

डा. शिवप्रसाद गोयल के अनुसार कवि ईसरदास या ईश्वरदास मध्य युग में हरियाणा के प्रथम कवि थे। इनका जन्म सम्बत् १४५६ के आसपास जिला गुड़गांव के गाँव जोगिनीपुर (जोईणिपुर) में हुआ। इस रामभक्त कवि के तीन ग्रन्थ मिलते हैं— 'अंगद पैज', 'भरत मिलाप' और 'सत्यवती कथा'। इनके द्वारा रचित 'अंगद पैज' की प्रतिलिपि राम आनन्द त्रिपाठी गाँव दरवेशपुर पोस्ट भरवारी जिला इलाहाबाद के पास सुरक्षित है। 'भरत मिलाप' की कुछ प्रतियों में अन्य नाम 'भरत कथा' भी दिया गया है।<sup>१४</sup>

१२. वीणारानी सिंहल, हरियाणा में रामकाव्य परम्परा, सम्भावना, अंक २१, पृ. ६६-६७

१३. डा. देवेन्द्र सिंह 'विद्यार्थी' हरियाणा का प्राचीन हिन्दी साहित्य, हरियाणा सांस्कृतिक दिग्दर्शन, हरियाणा लोक-सम्पर्क प्रकाशन, चण्डीगढ़, पृ. १७२

१४. डा. शिव प्रसाद गोयल, हरियाणा का हिन्दी साहित्य: उद्भव और विकास तथा रघुबीर सिंह मथाना, डा. बाबूराम हरियाणवी साहित्य का इतिहास, लक्ष्मण साहित्य प्रकाशन, रोहतक, पृ. ३०८-३०९

कवि भोला मिश्र द्वारा रचित 'धनुषयज्ञ' सांग शैली में १५४ सम्वादों की नाट्य कृति है। इसका रचना काल सन् १८७० ई. आंका गया है। भोला मिश्र ने इसे सांग की संज्ञा दी, डॉ. मीरा गौतम ने इसे पहला स्वतंत्र काव्यनाटक माना है। खोज रिपोर्ट के आधार पर इसकी भाषा उत्तरी बांगरू मिश्रित कौरवी बोली निश्चित की है।

डॉ. सुनीता वासिष्ठ के अनुसार- कवि के द्वारा आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया गया है। अतः इसे सांगगीत या लोकनाट्य-काव्य शीर्षक से पुकारा जायेगा।<sup>१५</sup>

कवि हृदय राम का जन्म घरौंड़ा निवासी कृष्णदास के घर हुआ। इनका उपनाम 'रामकवि' था। ये कुछ काल तक थानेसर में भी आकर रहे थे। इनके लिखे हुए रूक्मिणी मंगल', 'हनुमान् नाटक', 'चित्रकूट विलास', 'धर्म चरित्र', और बाल चरित्र पाँच ग्रन्थ मिले हैं।<sup>१६</sup>

'चित्रकूट विलास' में चित्रकूट के माहात्म्य का वर्णन किया गया है। 'हनुमान् नाटक' की रचना संस्कृत के हनुमन्नाटक के आधार पर सम्वत् १६८० ई में हुई। चौदह अंकों में विभक्त इस ग्रन्थ में सीता स्वयंवर से लेकर राज्याभिषेक तक की कथा लगभग १५०० छन्दों में, संवाद-शैली में वर्णित है। इसे एक संवादकाव्य या नाट्य-काव्य की संज्ञा से भी अभिहित किया जा सकता है।

चन्दूलालकृत 'रामायण' हरियाणवी सांगशैली में लिखी गई है। इस रामायण का प्रकाशन प्रो. नरेश द्वारा सन् १९९२ ई. में साहित्य प्रतिष्ठान, चण्डीगढ़ द्वारा कराया गया। चन्दूलाल 'रामायण' की शैली इतिवृत्तात्मक है। कवि ने वैयक्तिकता का सुन्दर पुट देकर, पाठकों के मन में उत्सुकता जगाने तथा उन्हें रसप्रदान करने का सफल प्रयास भी किया है। कवि ने विविध राग-रागनियों तथा लोक में प्रचलित तर्जों को आधार बना कर अपनी रामायण को संगीतात्मकता के गुणों से ओत-प्रोत कर दिया है।

हरियाणा के जीन्द नगर में संवत् १९९५ में जन्में पं. राम अवतार 'अभिलाषी' का भी रामकाव्य के सृजन में उपयोगी योगदान रहा है। 'भूमिजा' और 'हनुमान छियालीसा' उनकी दो महत्त्वपूर्ण कृतियाँ हैं। 'भूमिजा' एक प्रबन्धात्मक रचना है। जिसमें कवि ने पुराणाथाओं के आधार पर अकाल-निवारण के लिए राजा जनक द्वारा हल चलाने की घटना का उल्लेख किया है। एक संक्षिप्त कथा की सहज सरल प्रस्तुति इस काव्य कृति में हुई है। 'भूमिजा' की कथा यह प्रमाणित करती है कि लक्ष्मी (सीता) ही श्रम की सन्तान है। वह नर-रूप नारायण की सहचरी तभी बनती है, जब श्रम उसका जनक बन चुका हो, 'हनुमान छियालीसा' भी रामकाव्य से सम्बन्धित तथा आध्यात्मिकता से ओत-प्रोत एक लघुकाव्य-

१५. रघुवीर सिंह मथाना, डा. बाबूराम, हरियाणवी साहित्य का इतिहास, रोहतक, पृ. ३२६, २७



रामायण पुस्तक है।

जीन्द (हरियाणा) निवासी कवि गुलाब सिंह के पिता का नाम छबीलदास तथा दादा का नाम जमनादास था। इनका साधक जीवन संत मानसिंह के शिष्य के रूप में कुरुक्षेत्र में बीता। इनकी २०-२५ रचनाओं में से केवल 'भावरसामृत' 'अध्यात्म रामायण' 'प्रबोध चन्द्रोदय' तथा 'मोक्षपद प्रकाश' चार ही उपलब्ध हैं।

कुरुक्षेत्र जिला के कस्बा लाडवा के रईस टिक्का निहालसिंह के समकालीन कवि थे। उन्होंने संवत् १८९७ विक्रमी में 'रामकथा' को स्वांग (सांग) में सफलतापूर्वक लिखा। यह पहला अवसर था, जब 'रामकथा' को प्रश्न-उत्तर रूप में लिखा गया। यह रचना केवल ६४ पन्नों की है। इसमें कुण्डलियों, दोहों का विशेष रूप में प्रयोग किया गया है। कहीं-कहीं अन्य छन्दों का भी प्रयोग किया गया है। कवि की भाषा शुद्ध कौरवी है। कवि की भाषा और छन्दों पर पूरी पकड़ है।

हरियाणा के प्रतिष्ठित लेखक डॉ. रणजीत सिंह ने लिखा है- संत जैतराम ने 'रामायण' भी लिखी है। इस रामायण की यह विशेषता है कि- यह अति संक्षिप्त होते हुए भी भक्ति की दृष्टि से बड़ी प्रभावशाली है। इसे लोकप्रिय बनाने के लिए स्थानीय रीति-रिवाजों का भी समावेश किया गया

है।<sup>१७</sup>

संवत् १७९४ में रोहतक जिले के छुडानी गांव में संत गरीबदास के घर जन्में संत जैतराम ने अपने 'ग्रंथ साहिब' में एक अंग का नाम 'रामचन्द्र की कीर्ति' रखा है। इस अंग में कवि ने रघुवंश का परिचय देते हुए, रामजन्म, बाललीला, रामविवाह, कैकेयी-वरदान, राम वनगमन, दशरथ-मरण, राम को मनाने भरत की पहुँच तथा राम द्वारा भरत को वापिस अयोध्या भेजने आदि प्रसंगों का वर्णन बड़े मनोयोग से किया है।

हरियाणा की संत परम्परा में नितानन्द, गरीब दास, जैतराम, दयोत राम, इत्यादि ने अपनी वाणी में राम कथा के कितने ही प्रसंगों को चित्रित किया है। कवि शम्भू (दादरी निवासी) ने श्रीराम के सम्बन्धी रचनाएँ प्रस्तुत की हैं। सांगपरम्परा में पंडित रामानन्द आजाद कृत 'सांग रामायण' और श्रीनथी राम द्विज द्वारा रचित 'रामायण' नामक ग्रन्थों का उल्लेख भी प्रासंगिक होगा।<sup>१८</sup>

पं. श्रीराम शर्मा का जन्म गाँव भैसरू कलां जिला रोहतक में, सन् १९०७ में हुआ। उन्होंने २० के लगभग कथाओं की रचना की। रामायण से सम्बन्धित कथानक लव-कुश अति जनप्रिय रचनाएँ हैं।

डा. बीनारानी सिंहल ने अपने लेख में लिखा है कि कोसली के श्री मुखराम अग्रवाल ने सन्

१७. डा. शिवप्रसाद गोयल, हरियाणा का हिन्दी साहित्य: उद्भव और विकास, पृ. १९

१९६५ ई. में ८५९ पदों से युक्त 'श्री राम कीर्तन' शीर्षक में रामायण की रचना की। इस रचना का आधार गोस्वामी तुलसीदास कृत 'रामचरित-मानस' है।

डॉ. शिवप्रसाद गोयल ने 'हरियाणा का हिन्दी साहित्य: उद्भव एवं विकास' में लिखा है कि- श्री रामदास अग्रोहा निवासी जाति से वैश्य थे। इन्होंने कई ग्रन्थों की रचना की थी, जिनमें से 'रामायण' भी एक है।

हरियाणा में रचित राम साहित्य पर विश्लेषण करने के दृष्टिगत अनेक विद्वानों के भिन्न-भिन्न पुस्तकों पत्र-पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित हुए हैं। इन लेखों में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर डॉ. रामपतयादव द्वारा रचित एवं प्रोफेसर डा. लाल चन्द गुप्त मंगल' द्वारा सम्पादित पुस्तक 'हरियाणा का हिन्दी साहित्य' में प्रकाशित लेख बहूपयोगी है। इस लेख में रचनाकारों तथा रचनाओं का परिचय उपलब्ध है। इसमें से कुछ बानगी उपलब्ध कराई जा रही है।

हरियाणा में राम-काव्य परम्परा का उद्भव सम्वत् १०२९ के आस-पास माना जाना चाहिये। अपभ्रंश (पुरानी हिन्दी) के अन्तिम कवि पुष्पदंत का नाम हरियाणा की रामकाव्य-परम्परा के प्रथम कवि के रूप में आदर के साथ लिया

जाता है। आचार्य चतुरसेन शास्त्री, देवेन्द्र सिंह विद्यार्थी और सरनदास भनोत प्रभृति विद्वानों ने इन्हें रोहतक जिले के किसी गाँव का निवासी माना है। कवि ने अपने काव्य-ग्रन्थ 'तिसट्ठि महापुरिस गुणालंकार' (महापुराण) में श्रीराम कथा का सन्निवेश किया है। यह महाकाव्य तीन खण्डों और १०२ संधियों (सर्गों) में विभक्त है। संधि (सर्ग) संख्या ६९ से ७९ तक रामकथा के विशिष्ट प्रसंगों की उद्भावना की गई है।<sup>१९</sup>

हरियाणा की रामकाव्य-परम्परा में महाकवि सूरदास का नाम अग्रगण्य है। उनका जन्म संवत् १५३५ में वैसाख शुक्ल पंचमी को हरियाणा के जिला गुडगाँव के गाँव सीही में हुआ। सूर-कृत रामकाव्य की विवेचना करते हुए डॉ. माताप्रसाद गुप्त लिखते हैं- 'सूरदास ने राम का गुणगान और उनकी लीलाओं का वर्णन उतनी ही तन्मयता से किया है, जितना तुलसीदास ने कृष्ण की लीलाओं का किया है। सूरदास के रामचरित के भी अनेक पद कला की दृष्टि से सुन्दर बन पड़े हैं।

डॉ. हरवंश लाल शर्मा ने अपने ग्रन्थ 'सूर और उनका साहित्य' में सूर के साहित्य का परिचय देते हुए, पच्चीस रचनाएं गिनाई हैं; उनमें 'सूर रामायण' तथा 'राम जन्म' भी दो ग्रन्थ हैं।<sup>२०</sup>

रामकाव्य-परम्परा के कवि भगवतीदास का जन्म अम्बाला जिले के बूड़िया नामक ग्राम में

१९. डॉ. रामपतयादव, हरियाणा की रामकाव्य परम्परा, हरियाणा का हिन्दी साहित्य, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला, पृ. ६५

२०. ओमप्रकाश भारद्वाज, हरियाणा का सगुण साहित्य (लेख), हरियाणा साहित्य विशेषांक, सप्त सिन्धु, १९६८, भाषा विभाग हरियाणा, पृ. ९५ तथा डा. सूरजभान, हरियाणा का सन्त साहित्य, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़, पृ. २०-२१



हुआ। वृहत् सीतासतु (सम्बत् १६८४), लघु सीतासतु (सम्बत् १६८७), अनेकार्य नाममाला आदि इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। उनका 'सीतासतु' राम-काव्य-परम्परा का एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। संवादों की दृष्टि से यह रचना अनुपम है। इसमें बारह मासों के अलग-अलग संवाद हैं। इस कृति में सीता के सतीत्व और रावण-मन्दोदरी की मनोवृत्ति का भी सुन्दर विश्लेषण किया गया है।<sup>१९</sup>

रोहतक जिले के छुड़ानी गाँव में सम्बत् १७७४ की वैशाख पूर्णिमा को जन्मे संत गरीब की वाणी 'श्रीग्रन्थ साहिब' अन्तर्गत कई स्थानों पर रामकथा के राग आदि अंगों में, राम के निर्गुण और सगुण, दोनों रूपों की प्रस्तुति हुई है। 'विचार का अंग' में रामकथा सम्बन्धी कई पद मिलते हैं यथा -

**सीता सतवन्ती सही, रामचन्द्र की नारि।**

**रावण दाने छलि गई बिनही ज्ञान विचार।**

**तीन वचन समझी नहीं, मेटी राम की कार।**

**समंद सेत बंध बांधि करि, हनुमान लंक सिधार।**

कविवर रामदास जाति से वैश्य तथा अग्रोहा जिला हिसार के निवासी थे। इनके सुदामा-चरित्र, कार्तिक तरंग, गंगान्याहलो, तीर्थ माहात्म्य, प्रभुजस पचीसी सहित रामायण आदि आश्चर्यजनक अद्भुत ग्रंथ हैं। 'रामायण' में राम के चरित्र का गुणगान करते हुए, उसके उदात्त स्वरूप को रेखांकित किया गया है।

अम्बाला निवासी रायचन्द जैन सम्बत् १७१३ के लगभग विद्यमान थे। उन्होंने रविसेन कृत 'जैन पद्म पुराण' के आधार पर 'सीता चरित्र' काव्य-ग्रन्थ की रचना की है। इस ग्रन्थ की सम्बत् १८०१ तथा १८०८ की दो प्रतियाँ श्री दिगम्बर जैन मन्दिर चौक, लखनऊ में सुरक्षित हैं।

हरियाणा के नारनौल में सम्बत् १७८० में जन्मे संत नितानन्द के 'सत्य सिद्धांत प्रकाश' नामक काव्य-ग्रन्थ की साखियों और पदों में राम के निराकार-रूप की महिमा का वर्णन मिलता है।

नारनौल नगर में, सम्बत् १९९० को जन्मे पुरुषोत्तम दास 'निर्मल' हरियाणा की राम काव्य-परम्परा के एक सशक्त कवि थे। उन्होंने अनेक काव्य-रचनाओं का प्रणयन किया है। इनके 'विधुरा' और 'रामलीला तरंग' रामकाव्य-परम्परा के अनमोल ग्रंथ-रत्न हैं। रामायण की एक प्रमुख पात्र कैकेयी 'विधुरा' काव्य की आधार भूमि है। परम्परा से हटकर लिखा गया यह महाकाव्य अनेक मौलिक उद्भावनाओं से अनुस्यूत है। इस काव्यरचना में नारी को 'कलषपीयूष', 'त्याग की मूर्ति', संवेदना से संतुष्ट, 'वत्सला' और 'काठ की तरी' आदि विशेषणों से मंडित किया गया है। 'रामलीला तरंग' (चार भागों) में रामकथा के अनेक प्रसंगों का रूपायन हुआ है।<sup>२०</sup>

२१. डा. रामपत यादव, हरियाणा की रामकाव्य-परम्परा, हरियाणा, का हिन्दी साहित्य, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला, पृ. ६६-६७

२२. वही, पृ. ७२.

संवत् १९८२ में जन्मे कविवर लीलाधर वियोगी भी रामकाव्य-परम्परा के महत्त्वपूर्ण कवि हैं। उन्होंने अब तक आठ काव्य-रचनाएँ हिन्दी-जगत् को भेंट की। इनकी रचना 'पीड़ा की पगडंडियाँ' २००४ का हरियाणा में रामकाव्य-परम्परा में महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस काव्यरचना में श्रीराम के जीवन की पीड़ा को मार्मिक शब्दों में व्यक्त किया गया है। राम की पीड़ा को विश्व-पीड़ा का रूप देकर कवि ने अनोखी उद्भावना की है।<sup>२३</sup>

संवत् १९६७ में रोहतक जिले के कोसली नामक गाँव में जन्मे मुखरामदास अग्रवाल भी रामकाव्य-परम्परा के महत्त्वपूर्ण कवि हैं। उन्होंने संवत् २०२२ में 'श्रीराम कीर्तन रामायण' की रचना की। सात काण्डों पर आधारित इस रचना में कुल ८५९ पद हैं। इस रचना का आधार 'रामचरितमानस' है।

हिसार जिले के जुई नामक गाँव में संवत् १९५२ में जन्मे संत राम सिंह 'अरमान' का नाम

आधुनिक राम काव्य-परम्परा में अग्रगण्य है। 'अरमान सागर' और 'अरमान रामायण' की रचना जन-साधारण के लिए की गई है। तुलसी के रामचरितमानस का अनुकरण करते हुए, उन्होंने इस रामायण में सात काण्डों का विधान किया है।

हरियाणा के चिघाणो गाँव के निवासी रामरत्न लघुदास ने संवत् १८५६ में 'श्री हनुमान जयति' की रचना की। लाड़वा रियासत के रईस निहाल सिंह के आश्रित-कवि बंगा सिंह (उपनाम सफेद केहरि) ने भी परम्परित राम कथा पर आधारित सांगपरक 'रामकथा' छंदोबद्ध रूप में लिखी। इसी शृंखला में हरियाणा में कतिपय अन्य रामकाव्यों की भी रचना हुई, जिनमें 'रामचरितम्' (विष्णुमित्र शर्मा शास्त्री), 'रामार्चन माहात्म्य' (राधाकृष्ण शास्त्री), 'सुगम रामायण' (रमेशचन्द्र शुक्ल) और 'रामरसायनम्' (लक्ष्मण सिंह अग्रवाल) उल्लेखनीय हैं।

—अंगिरा शोध संस्थान, ३९०/५, शान्ति नगर, पटियाला चौक,  
जीन्डू (हरियाणा) - १२६१०२ मोबा: ९४१६३-८७४३२

२३. डॉ. रामपत यादव, हरियाणा की रामकाव्य-परम्परा, हरियाणा, का हिन्दी साहित्य, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला, पृ. ७१





# रामावतार में श्रीराम जी का वीर स्वरूप

— डॉ. परमिन्द्र कौर

पंजाब की रामकाव्य परम्परा से सम्बन्धित रचनाओं में गुरु गोबिंद सिंह जी द्वारा रचित 'रामावतार' अद्वितीय विशिष्टता के कारण महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। "यह अपने आप में स्वतन्त्र प्रबन्ध काव्य है, जिसे रामावतार के अतिरिक्त गोबिंद रामायण भी कहा जाता है"।<sup>१</sup> पंजाबी-लिपि तथा ब्रजभाषा में लिखी यह महान् रचना सम्भवतः सन् १६९८ ई. में पूर्ण हुई। गुरु जी की इस रामकथा में धर्म-युद्ध के घाव के भाव उजागर होते हैं। "गोबिंद रामायण" में कुल ८६४ छन्द हैं जिनमें ४०० से अधिक छन्दों में केवल युद्ध का ही वर्णन है"।<sup>२</sup> साथ ही इस रचना के माहात्म्य का भी उल्लेख है—

"राम कथा जुग-जुग अटल सभ कोई भाखत नेत  
सुरगबास रघुबर करा सगरी पुरी समेत"<sup>३</sup>

इस कृति में वात्सल्य, शृंगार, करुण रसों के चित्रण के साथ-साथ संयोग-वियोग के वर्णन में भी दी गई उपमाएँ युद्ध और शौर्य का ही संकेत करती हैं। गुरु गोबिंद सिंह जी के समय मुगलों का शासन था जिनके आतंक से मानवीय मूल्य भ्रष्ट हो रहे थे। मानव-मानव का शत्रु हो रहा था, ईर्ष्या, अहंकार, अमानवीयता स्वार्थ और पारिवारिक सम्बन्धों की

टूटन बढ़ने लगी थी। ऐसी स्थिति में गुरु जी ने आदर्श रामराज्य की परिकल्पना की तथा आदर्श राजा किस प्रकार का होना चाहिए उसका वर्णन रामावतार में राम के चरित्र के अन्तर्गत किया। उन्होंने "राम को एक वीर योद्धा के रूप में प्रस्तुत करके अपने शिष्यों को राम की तरह पराक्रमी बनाने का सराहनीय प्रयास किया"।<sup>४</sup> मूल उद्देश्य की दृष्टि से देखा जाए तो आदर्श जीवन के सर्वांग का प्रदर्शन एवं जनता में नीति, विवेक, सही जीवन-मूल्यों एवं स्वस्थ परम्पराओं को स्थापित करने की धारणा समाहित है ताकि समाज में विखराव पैदा न हो। गुरु जी का कविरूप तत्कालीन कवियों से विपरीत है। इसीलिए उन्होंने सामन्ती वातावरण की अपेक्षा वीर-भावना एवं चरित-नायक राम के वीर रूप को ही चित्रित किया। वह जानते हैं कि जब प्रतिपक्ष शान्त भाव से वार्ता करने से भी सत्य और न्याय को समझने की चेष्टा न करे तो उस समय अन्याय के प्रतिकार स्वरूप युद्ध की स्थिति अनिवार्य है। भले ही श्रीराम मर्यादा पुरुषोत्तम, शील, शक्ति और सौन्दर्य के प्रतीक हैं लेकिन जब दानव प्रवृत्ति प्रवल हो और शान्तिपूर्वक किए प्रयत्न निष्फल प्रतीत हों तो समाज और संस्कृति की रक्षा

१. जीवन, साहित्य एवं कला में राम ; सम्पादक प्रो. सुखदेव सिंह मिन्हास, निर्मल पब्लिकेशन्स दिल्ली, पृ. २२९

२. वही, पृ. १२६

३. श्रौदसम ग्रंथ ; गुरु गोबिंद सिंह ; पृ. ३५८

४. गुरु गोबिंद सिंह जी द्वारा रचित रामावतार ; (आलोचक) डा. कैलाश नाथ भारद्वाज ; जालन्धर ; पृ. ३२

हेतु महान् पुरुषों के लिए युद्ध अनिवार्य हो जाता है। श्रीराम एक ऐसे अवतार हैं जो 'परित्राणाय साधुनाम्, विनाशाय च दुष्कृताम्' धरती पर अवतरित हुए-

राम परम पवित्र हैं रघुवंश के अवतार।

दुष्ट दैतन के संहारक संत प्राण आधार ॥<sup>५</sup>

त्रेतायुग में जिस तरह असुरों के वंश की वृद्धि होने लगी थी और वह उत्पात मचाने लगे थे तब कोई भी उन्हें सीधा न कर सका। रामावतार का दृष्टांत-

असुर लगे बहु करै विखाधा।

किन्हूँ न तिनै तनक मैं साधा ॥<sup>६</sup>

तब परम परमात्मा विष्णु ने रघुनाथ का अवतार धारण करने तथा लम्बे समय तक राज्य ग्रहण करने का आदेश दिया-

विशनादक देव लखे बिमनं।

प्रिद हास करी काल धुनं॥

अवतार धरी रघुनाथ हरं।

चिर राज करो सुख सो अवधं ॥<sup>७</sup>

श्रीराम ने अवतार लेकर असुरों का संहार करने में जो पराक्रम किए वे प्रसंग वीररस से युक्त रामावतार में प्रस्फुटित हुए जिनमें अनेक असुरों के वध का वर्णन है। इस काव्य की पूरी कथा में वीररस किसी न किसी प्रसंग में झलक ही जाता है। जब तपोवन में श्रीराम विश्वामित्र के साथ पंहुचे तो मार्ग की बाधा बनी ताड़का सामने आ

टकराई जो राहगीरों को मार डालती थी तब राम ने वाण द्वारा उसकी विशाल विपैली देह को मार गिराया और उस पापिनी का अंत किया। तत्पश्चात् विश्वामित्र के यज्ञ में विघ्न डालने के लिए दीर्घकार्य भयंकर राक्षस मारीच तथा सुबाहु आ गए जिन्हें देख कर सभी ऋषि भाग खड़े हुए। उन दोनों राक्षसों के साथ अन्य राक्षस अत्यधिक वैर-भावना से युद्ध करने लगे जिनका मुकाबला अकेले राम करते रहे -

मार मार पुकार दानव शसत्र अशत्रु संभार

बान पान कमान को धरत बर तिम्ब कुठार

घेरि घेरि दशो दिसा नहि सूरबीर प्रमाथा

आइ कै जूझै सबै रण राम एकल साथ ॥<sup>८</sup>

तब धर्मरूपी ध्वजा को फहराने वाले श्रीराम की युद्ध-स्थल में शक्ति को सहना राक्षसों के लिए असम्भव था। बड़ी-बड़ी मूछों वाले महाबली-दानव जो तक्षक की तरह अत्यन्त भयंकर थे, वह भी धराशायी होने लगे। साथ ही मारीच एवं सुबाहु आदि अनेक अन्य दानवों का वध करके रामजी ने पृथ्वी का भार हल्का किया और ऋषियों का उद्धार किया।

देवताओं की पूजा और वेदमन्त्रों का उच्चारण होने लगा। विश्वामित्र का यज्ञ सम्पूर्ण हुआ जिससे-

भयो जग पूरं ॥ गए पाप दूरं ॥

सुरं सरब हरखे ॥ धनं धार वरखै ॥

५. दशम ग्रंथ गुरु गोबिंद सिंह; पंडित नारायण सिंह; पृ. १९६

७. वही, पृ. १४९

६. वही, पृ. १४९

८. वही, पृ. १६७



सीता-स्वयंवर में क्रोध से युक्त परशुराम को भी वीर शिरोमणि श्रीराम अपनी वीरता से उनके दर्प को चूर कर तथा धनुष तोड़ कर अपने बल का प्रमाण देते हैं :-

लीआ चाँप चटाक चड़ाई बली

खट टूक करयो छिन मै कसि कै ।<sup>१०</sup>

वनवास के समय भी उन्होंने अपने शौर्य का प्रमाण दिया। 'विराध-वध' करके श्रीराम ने अपनी वीरता का उदाहरण प्रस्तुत किया है -

भजंत धीर वीरणं चलंत मान प्राण लै ॥

दलंत पंत दंतीय भजंत हार मान कै ॥

मिलंत दांत घास लै ररच्छ शब्द उचरं ॥

विराध दानवं जुझयो सुहृत्थि राम निरमलं ।<sup>११</sup>

'शूर्पनखा' की कटी नाक देख जब बलशाली दानव-वंश क्रोध से भर जाता है तब राम और लक्ष्मण से बदला लेने की भावना से खर-दूषण दैत्यों को उनका वध करने के लिए भेजा जाता है। तब भी श्रीराम रावण के वीर-सेनानियों का संहार कर देते हैं। तब अंत में रावण स्वयं राम जी से द्वन्द्व युद्ध करने आता है उसके भीषण प्रहार से चारों दिशाएँ, पृथ्वी, आकाश सभी कम्पायमान होने लगते हैं किन्तु राम उसके छत्र, ध्वजा, अश्व, रथ आदि सभी साधनों को नष्ट-भ्रष्ट कर देते हैं तथा खर और

दूषण दोनों का नाश कर देते हैं। तब उनकी चारों ओर जय जय कार होने लगी-

खर दूषण मार बिहाए दए ॥

जय सदद निनदद बिहदद भए ॥

सुर फूलन की बरखा बरखे ॥

रणधीर अधीर दोऊ परंखे ॥<sup>१२</sup>

जब राम ने रावण को अपनी तरफ आते देखा तब उन्होंने रावण की बीसों भुजाएँ काट डालीं। दस वाण चला कर अभिमानी रावण के दस सिर शिवलोक पहुँचा दिए और उसे मार कर रामचन्द्र जी ने धरती के पाप को समाप्त किया। गुरु गोविंद सिंह जी ने युद्धक्षेत्र में वीरभाव की अभिव्यञ्जना करने के लिए दोनों पक्षों के शूरवीरों की उन्मत्तावस्था का वर्णन किया है। 'लव-कुश युद्ध' प्रसंग में भी दोनों ओर के योद्धाओं की वीरता और उत्साह का वर्णन है।

इस प्रकार गुरु गोविंद सिंह जी ने 'रामावतार' में श्रीराम के युद्धवीर रूप का सविस्तार वर्णन किया है, उन्होंने तत्कालीन समाज की परिस्थितियों को देखते हुए जनता को पराक्रमी बनाने हेतु वीररस को ही प्रधानता दी और श्रीराम की तरह वीरतापूर्वक दुष्टों का संहार कर विघ्नों से मुक्त होना सिखाया।

-हिन्दी विभाग, गुरु गोविन्द सिंह खालसा कॉलेज, माहिलपुर (होशियारपुर)।

९. दशम ग्रंथ गुरु गोविंद सिंह ; पंडित नारायण सिंह; पृ. १७२

११. वही, पृ. २३०

१०. वही, पृ. १८४

१२. वही, पृ. २३५

# श्रीकृष्णलाल रचित रामचरित्र के श्रीराम

— डॉ. सविता सचदेवा

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम भारतीय संस्कृति के मेरुदण्ड हैं वे धर्म की रक्षा के लिये संसार में अवतरित हुए। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का चरित्र ऐसा है कि यदि मनुष्य उनके चरित्र का अनुकरण करे तो वह आनन्दमय जीवन व्यतीत कर सकता है। राम का महान् चरित्र वाल्मीकि रामायण के माध्यम से इतना लोकप्रिय हुआ कि सारा संसार राममय हो गया। पंजाब में रचित रामचरित्र जो रचना श्रीकृष्ण लाल द्वारा १८वीं शती के उत्तरार्ध में लिखी गई। वह महाभारत के रामोपाख्यान पर आधारित है। श्री कृष्ण लाल ने राम के आज्ञाकारी पुत्र, अवतारत्व, धीरता, मोक्षदाता, आदर्श भ्राता, के पक्षों को उभारा है।

श्रीकृष्ण लाल ने राम के पूर्ण अवतार पक्ष को उजागर किया है। अवतारवाद का प्रथम उद्देश्य धर्म की रक्षा माना जाता है।<sup>१</sup> राम धैर्य की मूर्ति थे मनु के अनुसार धृति धर्म का पहला लक्षण है।<sup>२</sup> राम इस गुण से ओतप्रोत थे। पिता के वन जाने के आदेश को उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया<sup>३</sup> और वे पिता दशरथ से कहते हैं कि जो

अपने वचन का पालन नहीं करता है, वह नरक का भागी होता है।<sup>४</sup> हनुमान् के मुख से भी कृष्ण लाल ने कहलवाया है कि 'दशरथ सुत पूरन अवतारा। दुष्ट विदारण जग पालन हारा।' राज्य के उत्तराधिकारी श्रीराम माता-पिता की आज्ञा मानकर अपने कर्तव्य का पालन करते हैं और वे राज्य त्याग कर वनवासी बन जाते हैं। श्रीराम भरत से कहते हैं कि पिता जी ने अपने प्रण की रक्षा के लिये यह सब किया<sup>५</sup> इसलिये तुम यह राज्य सम्भालो और प्रजा को सुखी रखो।<sup>६</sup> उन्हें भरत पर पूरा विश्वास था कि राज्य की सत्ता उसके हाथ में होने से प्रजा को किसी प्रकार का कोई कष्ट नहीं होगा।

श्रीराम का मन भावुक था पर कठिनाईयों और विघ्नों से डावांड़ोल नहीं हुआ। जब पत्नी सीता ने राम से स्वर्ण मृग की मांग की तो रामचरित्र के अनुसार राम तुरन्त मृग का पीछा करने चल पड़े। जबकि रामायण में राम ने आदर्श पति की तरह सीता को समझाने का प्रयत्न किया फिर बाद में नारीहठ को पूरा करने के लिये चल पड़े।

कृष्ण लाल ने 'रामचरित्र में' राम को

१. भगवद्गीता ४/८

२. मनुस्मृति

३. पित के चरण गहे हित भारे। भयोविदा वन को पग डारे। रामचरित्र २/२५

४. हे पित निज वच जो मुरहि जाहि नरक ते भूप॥ रामचरित्र २/२३

५. माता केकई के हित हि मम पित धरम अवतार।

जो प्रण धारियो तिह समै पूरण करो सु चार॥ रामचरित्र २/४८

६. तुम राज संभारो मोरि हिता। प्रजा सुखी रखो धरम चिता॥ वही, २/५१

८. कहत राम सो मुख ते बेना। पकरि देह इह भ्रिग सुख दैना॥ वही २/८९

५. वही, २/१४०



अवतार माना है।<sup>१</sup> राम मोक्षदाता थे। इनके गुण से तो शत्रु भी परिचित थे। कृष्ण लाल के अनुसार राम जब बाली को मारते हैं, तो बाली को राम के प्रति कोई क्षोभ नहीं हुआ क्योंकि राम के हाथों मर कर उसे अपना भविष्य संवरता नजर आता है।<sup>२</sup> इसी प्रकार जब मारीच को रावण स्वर्ण मृग बनने के लिये कहता है, तो वह सोचता है यदि वह इन्कार करेगा तो रावण उसे मार देगा, और यदि स्वर्ण मृग बनता है तो राम बाण से मारा जायेगा। परन्तु वह राम के हाथ से मरना अच्छा मानता है। वह कहता है— 'राम हाथ मरहो कलि आना। यहाँ पर लेखक ने राम के प्रति श्रद्धा स्थापित कर दी कि परमपुरुष के हाथों मृत्यु भी मोक्षदायी होगी। रावण भी राम के हाथों मरने से अपना कल्याण समझता है। वह अपनी मृत्यु से परिचित था। वह जानता था कि वानर और नर ही उसका काल बनने वाले हैं, वह सोचता है यदि उसे मरना है तो वो क्यों न राम के हाथों मरे। मन्दोदरी के समझाने पर वह स्पष्ट कहता है कि राम की स्त्री को उठाया ही मुक्ति के लिये है।<sup>३</sup> रामचरित्र के कथ्य में लेखक स्वयं अपने लक्ष्य को प्रकट करते हुये कहता है कि वह इस कथा को लिख कर जन्ममरण के

बन्धन से छूट कर वैकुण्ठगामी बनना चाहता है।<sup>४</sup> इस प्रकार कवि ने राम को मोक्षदाता बता कर उनके प्रति अपनी भक्ति और साधना को बताया है। भ्रातृप्रेम अपने आप में एक आदर्श है राम का भ्रातृ प्रेम लक्ष्मण को शक्ति लगने पर प्रकट होता है। वे कहते हैं हे लक्ष्मण तेरे बगैर सारा जगत् मेरे लिये सूना है तुम बोलते क्यों नहीं हो, उठो मेरे प्यारे भ्राता।<sup>५</sup> तुमने तो मेरी आज्ञा को कभी भंग नहीं किया अब मेरी आज्ञा के बिना क्यों जा रहे हो।<sup>६</sup> कवि कृष्ण लाल ने प्रभु राम के प्रति अपनी भक्ति प्रकट करते हुये शेष पात्रों को भी राममय बना दिया। राम को पूर्ण ब्रह्म कहा है<sup>७</sup> जिसकी भक्ति करने से सारे पाप नष्ट हो जाते हैं और व्यक्ति सुरलोक को प्राप्त होता है—

**इह उसतुति जो नितपाठ करै।**

**अथ मुँचत पग सुरलोक धरै।<sup>८</sup>**

राम ही सब प्राणियों को मोक्ष देने वाले हैं।

इस प्रकार कवि ने अपनी रचना में श्रीराम के अवतार रूप, दयालु, कृपालु, मोक्षदाता, आज्ञाकारी, आदर्श-भाई, आदर्श पति के रूप को प्रकट किया है।

—सरकारी कालेज स्त्रियाँ, अमृतसर। मोबा: ९५०१५००४८८

९. राम पूरण अवतार।। वही, २/५०

१०. इह कहि बाली प्राण तजि देहि गये सुरलोक।

राम हाथ जिह भ्रित भई ते बडि भाग उदोत।। वही, २/१५८

११. याही तो हम बैर उठाइयो। स्त्री राम सार निज उर ठहिराइयो।

स्त्री राम करि होवै मुहि काला। अनपूछत लही मुकति रसाला।। रामचरित्र ४/४३

१२. छूटि परहिं जय के स्त्रमै जन्ममरण मुकताहि।

किसनलाल भजि बिसन को विसनपुरी महि जाँहि।

१३. रोवे वचन विलाप उचारै.....किह देखो तिह रूप अनंगा। राम चरित्र ५/६४-६५

१४. रामचरित्र, ५/६६-६७

१५. पूर्ण ब्रह्म रघुवर बरदाय - वही, २/१६२

१६. वही, २/३५०

## पंजाब की राम-काव्य परंपरा में रामावतार का स्थान

— अमनप्रीत कौर

श्रीराम का जीवन और चरित्र भारतीय समाज के लिए अनुकरणीय है। प्रत्येक युग का कवि उनके चरित्र की गरिमा से प्रभावित हुआ है और होगा। भारतीय समाज में आदर्श माने जाने वाले 'श्रीराम' का चरित्र विकट परिस्थितियों का सामना करने का प्रेरणास्रोत है। राम-कथा कब से काव्य का विषय बनती आ रही है इसमें विद्वानों के मतभेद रहे हैं। "वैदिक-साहित्य में आर्ष रामकथा से संबंधित नामोल्लेख का सूक्ष्म अध्ययन करने के बाद डा. कामिल बुल्के इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि यह नाम प्राचीन काल में प्रचलित होंगे।" राम-काव्य को 'आदिकाव्य' कहे जाने वाले 'वाल्मीकि रामायण' से प्रेरणा लेकर ही कवियों ने अपनी-अपनी उद्देश्यपूर्ति के लिए श्रीराम के चरित्र को गढ़ा है। कभी भक्ति-भावना से उसका गान किया गया है तो कभी रसिक-भावना से एवं कभी वीर-भावना से। वास्तव में भगवान् श्रीराम के चरित्र में ही इतनी गरिमा भरी हुई है, जिसके कारण प्रत्येक युग का कवि उनके चरित्र का गुणगान करने से महाकवि बन गया।

"राम-कथा में भारतीय लोगों की कुछ ऐसी सामूहिक और सर्व-सांझी आख्यायिकाएं और

आदर्श समाये हुए हैं जो भारत की अनेकरूपता में एकता लाने और स्थापित करने के प्रभावशाली माध्यम हैं। पंजाब का जनजीवन और साहित्य रामायण की लोकप्रियता इसमें छिपे आदर्श और उनके अमर प्रभाव का कोई अपवाद नहीं"।

पंजाब के प्रबुद्ध कवियों ने भी अपनी लेखनी के माध्यम से रामकथा का बखान अपने विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए किया है। प्रत्येक साहित्यकार अपने युग की परिस्थितियों से पूर्णतः प्रभावित रहता है। चेतन प्राणी होने के कारण तदयुगीन समस्याओं का समाधान वह पौराणिक या ऐतिहासिक आख्यानों के माध्यम से प्रस्तुत कर के पाठकवर्ग का मार्ग प्रशस्त करता है। मध्यकाल में पंजाब राजनीतिक दृष्टि से अस्त-व्यस्त रहा। लोगों में मुगल-आक्रमणों के कारण जो निराशा-हताशा घर कर गई थी उसे दूर करने के लिए उनमें आध्यात्मिक चेतना और वीरता की भावना पैदा करने के लिए कवियों को राम-कथा ही उपयुक्त कथानक लगी।

पंजाब में मध्यकाल में राम-काव्य लिखने की परंपरा देखने को मिलती है। हिन्दी और पंजाबी भाषा में यह परंपरा विकास को प्राप्त हुई। डा. हरमहेन्द्र सिंह बेदी के अनुसार - "पंजाब में

१. उद्धत सिंह, रवीन्द्र पंजाबी राम काव्य पटियाला : भाषा विभाग, १९७१, पृ. २२

२. वहीं पृ. ५२



पन्द्रहवीं शताब्दी से लेकर उन्नीसवीं शताब्दी तक प्रचुर मात्रा में हिन्दी-साहित्य रचा गया। पंजाब-प्रांतीय गुरुमुखी लिपि में उपलब्ध हिन्दी भक्ति-साहित्य के अंतर्गत रामकाव्य की एक लंबी परंपरा मिलती है<sup>३</sup>।

पंजाब में रचित रामकाव्य का आरंभ श्रीगुरु ग्रंथ-साहिब से होता है। श्रीगुरु ग्रंथ-साहिब में 'राम' शब्द बार-बार प्रयुक्त हुआ है। वह अवतारी श्रीराम का द्योतक न होकर परब्रह्म का पर्याय है। "आदिग्रंथ के कवियों ने जन-साधारण में प्रिय और आम प्रचलित राम-कथा के प्रसंगों, पात्रों के चरित्रों या उसमें मिलती शिक्षाओं आदि को संकेतों, प्रतीकों या दृष्टान्तों के रूप में प्रयोग किया है, लेकिन उन्होंने राम-कथा के अलौकिक या अवतारवादी अंशों को नहीं अपनाया"<sup>४</sup>।

श्रीगुरु ग्रंथसाहिब में 'राम' शब्द उनके निराकार स्वरूप का द्योतक है। पंजाब की राम-काव्य परंपरा में आधुनिक युग में लिखी गई पंजाबी-भाषा की रचनाएं रामलुभाया आनंद 'दिलशाद' कृत 'पंजाबी रामायण', 'रामायण' कवि 'कालिदास' 'सुंदर रामायण' कवि 'चक्रधारी बेजर', रामगीत कवि 'बृजलाल शास्त्री' का महत्त्वपूर्ण स्थान है। हिन्दी भाषा में लिखी गई रचनाएं 'आदि रामायण' कवि 'सोढी मिहरबान', हनुमानाटक कवि 'हृदयराम

भल्ला', 'रामायण' कवि 'कपूरचन्द त्रिखा' लव-कुश कथा कवि साहिब दास, 'अध्यात्म रामायण' अनूदित रचना (कवि गुलाब सिंह निर्मला) 'वाल्मीकि रामायण' अनूदित (कवि संतोख सिंह) और रामावतार कवि श्रीगुरु गोबिंद सिंह महत्त्वपूर्ण रचनाएँ हैं।

'रामावतार' संत-सिपाही, धर्म-जाति के संरक्षक, मानवतावाद के समर्थक श्रीगुरु गोबिंद सिंह जी के जीवन-दर्शन का दर्पण है। वर्तमान जीवन परिस्थितियों की प्रतिकूलता के बावजूद श्रीगुरु गोबिंद सिंह का जीवन तद्युगीन हतप्रभ हिन्दू-जाति के लिए प्रेरणास्रोत रहा। डॉ. धर्मपाल मैनी के शब्दों में -

"भारतीय संस्कृति के माध्यम से उन्होंने अपने जीवन को ऐसी अभिव्यक्ति दी कि विकट और विषम परिस्थितियों से घबराकर वे भागे नहीं अपितु उनका मुकाबला करते हैं। शक्ति और भक्ति के मणिकांचन संयोग से उनके व्यक्तित्व का सृजन हुआ था।"

भारतीय जनता के लिए चरित-नायक श्रीगुरु गोबिंद सिंह संत-सिपाही होने के साथ ही उच्चकोटि के कवि भी थे। उनकी आध्यात्मिकता से संबंधित रचनाओं में 'अकाल उस्तति', जापु साहिब, सवैया आती हैं।

इनके अतिरिक्त 'चंडी-चरित्र', 'बचित्र

३. बेदी, हरमहेन्द्र सिंह, भारतीय भाषाओं में राम कथा : पंजाबी भाषा, नयी दिल्ली, वाणी प्रकाशन, २०१७, पृ. ७

४. सिंह, रवीन्द्र पंजाबी राम काव्य पटियाला भाषा विभाग, १९७१, पृ. ७३

५. मैनी, धर्मपाल, गुरु गोबिंद सिंह के काव्य में भारतीय संस्कृति, नयी दिल्ली, सुरुचि प्रकाशन, २०११, पृ. भूमिका

नाटक', 'चौबीस अवतार', 'जफरनामा' उनकी प्रमुख रचनाएं हैं। इनकी संपूर्ण रचनाओं का संकलन 'दशम ग्रंथ' में किया गया है। 'रामावतार' पंजाब की राम-काव्य-परंपरा में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह रचना 'दशम ग्रंथ' में 'चौबीस अवतार' के अंतर्गत उपलब्ध है। इसमें ८६४ छंद हैं जिसे २७ अध्यायों में विभाजित किया गया है। १६९८ ई. में रचित यह रचना गुरु जी की काव्य-कला का अन्यतम उदाहरण है।

राम-काव्य परंपरा के अधिकतर ग्रंथों में श्रीराम के लौकिक या अलौकिक स्वरूप का चित्रण मिलता है। कवियों का उद्देश्य श्रीराम के लौकिक स्वरूप का चित्रण करते हुए आदर्श स्थापित करना रहा तो दूसरी ओर अलौकिक स्वरूप का चित्रण करते हुए भक्ति-भावना का प्रचार-प्रसार करना। श्रीगुरु गोबिंद सिंह जी रचित 'रामावतार' में 'राम' महानायक, महायोद्धा और महाबली महापुरुष के रूप में ही प्रस्तुत किये गये हैं। कवि 'वाल्मीकि रामायण' और 'अध्यात्म रामायण' से प्रभावित रहे हैं पर श्रीराम के चरित्र में नवीन और मौलिक प्रयोग उन्होंने किये हैं। वा. गोबिंद सिंह के शब्दों में -  
"गुरु गोबिंद सिंह को जो इन दोनों से भिन्न थी।  
तुलसीदास के राम की भाँति ही रामावतार में

चित्रित राम भी किसी महान् उद्देश्य की पूर्ति के लिए नर रूप में आये हुए विष्णु के अवतार हैं, परन्तु तुलसीदास की भक्तिपरक दृष्टि उनमें नहीं है। अपने परिवेश के अनुसार वे उन्हें वीररूप में उपस्थित करना चाहते हैं।"

राम को अवतार मानते हुए गुरु जी 'रामावतार' में लिखते हैं -

राम परम पवित्र है रघुबंस के अवतार।

दुसट दैतन के संधारक संत प्रान अधार ॥<sup>६</sup>

श्रीगुरु गोबिंद सिंह जी ने विशेष उद्देश्य पूर्ति हेतु 'रामावतार' की रचना की। उन्होंने रामकथा के कुछ विशेष प्रसंगों को चुना और कथा को अधिक विस्तार न देते हुए भी वह अपने प्रयोजन में सफल हुए। 'रामावतार' के आरंभिक छंदों में ही वह अपनी कथा की कल्पना और अपनी मौलिकता का परिचय देते हुए लिखते हैं -  
जु पै छौर कथा कवि याह रढै।

इन वातन को इक्क ग्रंथ बढै।

तिह ते कही थोरी-ऐ बीन कथा।

बलि त्वै उपजी, बुधि भद्धि जथा ॥<sup>७</sup>

विष्णु के बीसवें अवतार श्रीराम की जीवन-कथा को आधार बनाकर कवि का आकर्षण अधिकतर उनके वीर रूप की ओर रहा है। श्रीगुरु गोबिंद सिंह जी को अपने जीवन में विकट और विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ा

६. सिंह, महोप, गुरु गोबिंद सिंह जी की कविता, नई दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९६९, पृ. १६२

७. भारद्वाज, कैलाशचरण, गुरु गोबिंद सिंह जी द्वारा रचित रामावतार, जालंधर: पंजाब साहित्य अकादमी, २००८

८. वही, पृ. ६९



मुगलों से टक्कर लेते वह हिन्दू-जाति के संरक्षक बनकर उभरे। तद्व्युगीन हिन्दू-जाति में वीरता का भाव भरने के लिए उन्होंने श्रीराम के महायोद्धा स्वरूप को चुना। रामावतार में राम का ओजस्वी, तेजस्वी और शौर्यपूर्ण स्वरूप देखने योग्य है। कवि में भक्तिभाव कमतर ही देखने को मिलता है। श्रीराम को वीरयोद्धा के रूप में चित्रित करने के पीछे गुरु जी का मंतव्य भारतीय जनता में शौर्य-साहस भर उन्हें अत्याचारों का विरोध करने के लिए तलवार उठाने के लिए प्रेरित करना था। अधर्म पर धर्म की विजय दिखाने के लिए 'श्रीराम' के चरित्र का वीर स्वरूप ही सार्थक रहा। 'रामावतार' में अधिकतर युद्ध वर्णन मिलता है। यह प्रभाव गुरु जी के अपने अनुभवों के कारण स्वरूप ही है। ताड़का वध, सुबाहु वध में श्रीराम का पराक्रमी, ओजस्वी स्वरूप चित्रित किया गया है

**रणं राम बज्जे ॥ धुणं मेघ लज्जे ॥**

**रुलै तच्छ मुच्छ ॥ गिरे सूर स्वच्छ ॥<sup>१</sup>**

परशुराम- श्रीराम प्रसंग में भी श्रीगुरु गोबिंद सिंह जी ने नवीनता का समावेश कर उनके क्रोधी, ओजस्वी और गंभीर स्वरूप का चित्रण किया है। जहां 'रामचरितमानस' में श्रीराम-लक्ष्मण परशुराम संवाद में श्रीराम, धैर्यवान् बने रहते हैं। वहीं 'रामावतार' में वह परशुराम को उसी की भाषा में उत्तर देते हैं-

**यौ जब बैन सुने अर के तब,**

**स्त्री रघुबीर बली बलकाने ।**

**सात समुंदन लौ गरवे गिर,**

**भूम अकाम दोऊ थहराने ।**

**जच्छ भुजंग दिसा बिदिसान के,**

**दानव देव दुहूँ डर माने ।**

**स्त्री रघुनाथ कमान ले हाथ,**

**कहौ रिस कै किह पै सर ताने ॥<sup>१०</sup>**

'रामावतार' में विराध वध, खर-दूषण वध, मकराक्ष वध, त्रिमुंड वध, देवांतक-नरांतक वध, मेघनाद वध, अतिकाय वध, कुंभ-अनकुंभ वध आदि में युद्ध वर्णन करते हुए कवि ने अपनी कुशलता का परिचय दिया है। युद्धों में सजीवता का समावेश हुआ है। यहां अस्त्र-शस्त्र की चमक, आवाज योद्धाओं के प्रहार वीरों की ललकार, पक्षियों-जानवरों की चीक-चहाड़, संगीत की भीषणता, मौसम की भयंकरता, रक्तबहाव आदि के माध्यम से वीर, वीभत्स और रौद्र रस की योजना की गई है। राम-रावण युद्ध में गुरु जी ने नवीन उद्भावना करते हुए विभीषण के धोखे के प्रसंग को छोड़ दिया है। राम-रावण युद्ध में दोनों के ओजस्वी स्वरूप को चित्रित किया है-

**स्त्री रघुनंदन की भुज ते जब,**

**छोर सरासन बान उडाने ।**

**भूमि अकाम पतार चहुँ चक,**

**पूर रहे नही जात पछाने ।**

**तीर सनाह सुबाहन के तन,**

**आह करी नही पार पराने ।**

**छेद करटन ओटन कोट,**

**अटान मो जानकी बान पछाने ॥<sup>११</sup>**

१. भारद्वाज, कैलाशनाथ ज्योति-पुंज गुरु गोबिंदसिंह जी द्वारा रचित रामावतार, जालंधर: पंजाब साहित्य अकादमी, २००८, पृ. ८४ १०. वही, पृ. ९५ ११. वही, पृ. ९९५

काव्य-सौंदर्य की दृष्टि से 'रामावतार' एक उत्कृष्ट रचना है। उन्होंने ब्रजभाषा तथा पंजाबी बुंदेली, फारसीभाषा आदि का प्रयोग रचना में किया है। गुरु जी उच्चकोटि के साहित्यप्रज्ञा हैं। 'रामावतार' में वर्णिक और मात्रिक छंदों का साधिकार प्रयोग किया है। जिनमें कवित्त, सवैया, चाचरी तारका, तोटक नराज, रसावल, भुजंगप्रयात सुंदरी, त्रिभंगी, छप्पय, दोहा, सोरठा, चौपाई आदि प्रमुख हैं। 'रामावतार' वीररस प्रधान रचना है। कहीं-कहीं शृंगार रस का प्रयोग भी मिलता है। युद्ध वर्णन में रौद्र और बीभत्स रस की योजना भी की गई

है। भाषा को अलंकृत करने के लिए शब्दालंकार और अर्थालंकारों की छटा विद्यमान है। मुख्य रूप से अनुप्रास, श्लेष, यमक, वीप्सा, उपमा, प्रतीप, उत्प्रेक्षा, संदेह, अतिशयोक्ति अलंकारों का प्रयोग किया गया है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है पंजाब में राम-काव्य की समृद्ध एवं सुस्पष्ट परंपरा मिलती है। पंजाब के कवियों ने श्रीराम के व्यक्तित्व का बहुआयामी चित्रण किया है। वहीं इस परंपरा में श्रीगुरु गोबिंद सिंह 'रामावतार' में राम-कथा के सूत्र लेकर राम के योद्धा रूप तक पहुँचे हैं। राम-काव्य-परंपरा में 'रामावतार' का विशेष स्थान है।

—सहायक प्राध्यापक, जी.टी.बी. खालसा कॉलेज फॉर वूमैन, दसूहा।

मोबा: ९०४१५-५१०३३

## केवट को श्री राम मिला था

— डॉ. केवलकृष्ण पाठक

केवट एक साधारण जन, पर मन में उसके श्रद्धा इतनी  
भक्त प्रभु का सच्चा सेवक मर्म प्रभु का जान गया जो  
उनके चरणों को धो कर के, चरणामृत का पान किया था  
और सुधारा अपना जीवन, तब ही उसमें शक्ति आई  
भव को पार उतारने वाले को गंगा मैया पार कराइ  
श्री राम को पार लगाकर जीवन की मजदूरी पायी  
कुछ न माँगा और श्रद्धा से श्रीराम को शीश झुकाई  
कितने जन्मों के तप से श्रीराम को जान लिया था  
सच्ची श्रद्धा और ध्यान से केवट को श्रीराम मिला था  
भारत में कितने केवट हैं जो श्री राम का मर्म जान लें  
राम नाम के ही प्रताप से अपने जीवन को पहचान लें

— संपादक, रवींद्र ज्योति मासिक, आनंद निवास, गीता कालोनी,

जींद १२६१०२ ( हरियाणा ) मोब. ९४१६३८९४८१



## रामायण के पात्रों का पञ्जाब के साथ सम्बन्ध

—डॉ. विशाल भारद्वाज

पञ्चनद, पञ्चाम्बु, पञ्चाप, सप्तसिन्धु आदि नामों से विख्यात भूभाग के लिये आज पञ्जाब शब्द का प्रयोग किया जाता है, जिसका आधार इस प्रान्त में प्रवाहित होने वाली पांच नदियां हैं, जिनके नाम का कालान्तर में विकास इस प्रकार हुआ—

शुतुद्रि	शुतुद्रु	सतलुज
परुष्णी	इरावती	रावी
वितस्ता		झेलम
विपाशा	विपाशा	व्यास
असिकनी	चन्द्रभागा	चिनाव

भारत विभाजन से पूर्व पञ्जाब का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक था। उत्तर-पश्चिम भारत का पञ्जाब क्षेत्र बृहत्तर पञ्जाब का एक भाग है। भारत की स्वतन्त्रता के उपरान्त इसका द्वितीय भाग पाकिस्तान में चला गया तथा इसके अनेक भागों का विलय वर्तमान हरियाणा एवं हिमाचल प्रदेश में हो गया। संस्कृत साहित्य के प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद में पञ्जाब की नदियों का उल्लेख प्राप्त होता है—

इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रि स्तोमं सचता परुष्ण्या ।

असिकन्या मरुद्वुधे वितस्तयाऽर्जीकीये शृणुह्या सुषोमया ॥<sup>१</sup>

‘निरुक्त’, महाभारत<sup>३</sup>, विष्णुधर्मोत्तरपुराण<sup>४</sup> आदि संस्कृत-ग्रन्थों में भी पञ्जाब प्रान्त के नाम की आधारभूत नदियों का उल्लेख है। रचित वाल्मीकीयरामायण में पञ्जाब-क्षेत्र के विभिन्न प्रान्तों का वर्णन प्राप्त होता है, जिससे रामायण के पात्रों का पञ्जाब के धरातल के साथ सम्बन्ध

सिद्ध होता है। विभिन्न जनश्रुतियों तथा परम्परागत लोक-विश्वास के आधार पर पश्चिमी पञ्जाब के कसूर<sup>५</sup> तथा लाहौर नगर, जोकि आजकल पाकिस्तान में हैं, क्रमशः राम के पुत्रों कुश तथा लव द्वारा स्थापित किये गये थे। राम के पुत्र लव के द्वारा स्थापित किये जाने के कारण ही लाहौर का नाम विभिन्न संस्कृत ग्रन्थों में ‘लवपुर’ है।<sup>६</sup>

श्रीगुरुगोविन्दसिंह जी द्वारा विरचित विचित्रनाटक के अनुसार तो लव तथा कुश ने मद्र (पञ्जाब) प्रान्त के शासक की कन्याओं के साथ विवाह किया तथा वहीं पञ्जाब में ‘कसूर’ व ‘लाहौर’ नामक दो अत्यन्त शोभनीय नगरों की स्थापना की—

सीतसुतबहुरिभएदुइ राजा । राजपाटउन्ही कउछाजा ॥

मद्र देस इस्वर बरी जब । भाति भाति के जग कीये तब ॥

तही तिने बाधे दुई पूरवा । ऐक कसूर दुतीय लहुरवा ।

अधकपुरी ते दोउ बिराजी । निरख लंक अमरावति लाजी ॥<sup>७</sup>

दशमेशचरितम् में भी इस प्रकार का वर्णन प्राप्त होता है जिसमें वैवस्वत मनु महाराज के वंश में श्रीरामचन्द्र जी के दो पुत्रों को स्मरण किया गया है। इनमें से कुश ने कसूर क्षेत्र पर शासन किया तथा लव को लवपुर (लाहौर) का राज्य प्राप्त हुआ—

वैवस्वतमनोर्वंशे श्रीरामचन्द्रस्य सुतौ स्मृतौ ।

कुशः कसूरराज्यस्थो लवो लवपुराधिपः ॥<sup>८</sup>

लव और कुश के वंश में कालकेतु तथा कालराज नामक दो राजा हुये, जिनमें अपने राज्य

१. ऋग्वेद, १०।७५.५

२. निरुक्त, ९.३

३. महाभारत, कर्णपर्व, ४४.३१-३२

४. विष्णुधर्मोत्तरपुराण, प्रथमखंड, ११.११-१२, १५-१६

५. श्रृंग, २.१

६. वही, १५.१

७. विचित्रनाटक, २.२३-२४

८. दशमेशचरितम्, १.१५



को बढ़ाने के इच्छा से बहुत गम्भीर युद्ध हुआ, जिसमें कसूर के राजा कालकेतु ने लाहौर के राजा कालराज को परास्त कर दिया।<sup>१</sup>

कालान्तर में राजा कालराज के पुत्र सोढीराज के समक्ष कसूर के राजा कालकेतु के पुत्र देवराज ने हार मानकर शस्त्र-बल को व्यर्थ मानते हुये ब्रह्मचिन्तन सम्बन्धी ज्ञानमार्ग का आश्रय लेकर काशी की ओर प्रस्थान किया तथा वेदाध्ययन में लग गया। बाद में कुश के वंशजों के साथ सन्धि हो जाने पर वह पुनः पञ्जाब में आ गये तथा वेदाध्ययन के कारण इनका 'वेदी' नाम प्रचलित हुआ।<sup>१०</sup>

विचित्र नाटक में भी ऐसा ही उल्लेख प्राप्त होता है-

ऐह बिधि मचा घोर संग्रामा। सिधये सूर सूरि के धामा॥  
कहा लगे वह कथों लराई। आपन परभा न बरनी जाई॥  
लवी सरब जीते कुसी सरब हारे। बचे जे बली परान लै के सिधारे॥  
चतुर बेद पठियं की जो कासि बासं। धने बरख कीने तहां ही निवासं॥<sup>११</sup>  
जिनै बेद पठिऊ सु बेदी कहाये। तिनै धरम के करम नीके चलाये॥  
पठे कागदं मद्र राजा सुधारं। अपो आप मो बैर भावं बिसारं॥  
नृपं मुकलियं दूत सो कासि आयं। सबै बेदियं भेद भाखे सुनायं॥  
सबै बेद पाठी चले मद्र देसं। प्रणामं कीयो आन कै कै नरेसं॥<sup>१२</sup>

अतः पञ्जाब के वेदियों (वेदियों) के पीछे रामायण का रघुकुल सिद्ध होता है। यहां तक कि श्री गुरुनानकदेव जी, गुरु अंगददेव जी तथा गुरु अमरदास जी सिक्ख गुरुओं का सम्बन्ध भी वेदी वंश से है-

**सत्या वेदजुषां वाणी वेदिवंशं गुरुत्रयी।**

**नानकोऽङ्गददेवश्चाऽमरदासो गुरुत्तमाः॥<sup>१३</sup>**

उदासीन मतप्रदीप ग्रन्थ में वेदीवंश का सम्बन्ध सूर्यवंश से स्थापित करते हुये श्रीगुरुनानकदेव जी को इसी वंश का बताया गया

है-

जातोयः सूर्यवंशे भुवि विदितमे वेदिनाम्ना प्रसिद्धे,  
साधूनां रक्षणार्थं.....।<sup>१४</sup>

वेदिने श्रीप्रदश्चासीदामदासो लवांशजः,

सुकृती सुन्दरश्चासौ शीलवान्साधुसत्तमः।<sup>१५</sup>

इसी धारणा को पुष्ट करते हुये श्रीगुरुनानकदेवचरितम्<sup>१६</sup> में गुरु नानकदेव जी को श्रीरामचन्द्र का वंशज बताया गया है तथा वेदी वंश के नामकरण की पृष्ठभूमि चर्चित की गयी है-

वेदीत्यभिख्यां प्रतिहेतुरासीत्कुलस्य वेदाध्ययनं  
किलास्य,

वेदो हि यस्यास्ति तदेव वेदीत्येतत्स्फुटं  
व्याकरणेन सिद्धम्।<sup>१७</sup>

श्रीरामचन्द्रस्य कुले पुमांसः सर्वे पुरा  
वेदविदो बभूवुः,

तेनैव सर्वोऽस्य कुलस्य बालः प्रगीयते  
जन्मत एव वेदी।<sup>१८</sup>

प्राचीन पञ्जाब के तक्षशिला तथा पेशावर नामक स्थलों का सम्बन्ध भी रामायण के पात्रों के साथ है। 'वाल्मीकिरामायण' में भरत द्वारा अपने मामा केकेयराज युधाजित् के साथ मिलकर पञ्जाब के सीमावर्ती स्थल 'गन्धर्व देश' जोकि सिन्धु नदी के दोनों तटों पर बसा हुआ था, पर आक्रमण करने का उल्लेख प्राप्त होता है। विजय प्राप्त करने के पश्चात् भरत ने वहां तक्षशिला नगरी बसाकर अपने पुत्र तक्ष को राजा बनाया तथा गान्धार देश में पुष्कलावत (पेशावर) नगर बसाकर उसका राज्य अपने दूसरे पुत्र पुष्कल को सौंप दिया।<sup>१९</sup>

१. दशमेशचरितम्, १.१६-१७

१३. दशमेशचरितम्, १.३१

१७. वही, ३.१०

१०. वही, १.२४-२५

१४. उदासीन मत प्रदीप, १.१.१

१८. वही, ३.१२

११. विचित्रनाटक, ३.५१-५२

१५. वही, ६.२०

१९. वाल्मीकिरामायण, ७.१०१.१०-११

१२. वही, ४.१-२

१६. श्रीगुरुनानकदेवचरितम्, ३.९-१३



महाकवि कालिदास ने भी 'रघुवंश' महाकाव्य में इसी सन्दर्भ की चर्चा की है। कालिदास के कथनानुसार राम ने युधाजित् के कहने पर भरत को सिन्ध देश का राज्य सौंप दिया। तत्पश्चात् भरत ने वहां तक्ष एवं पुष्कल नामक अपने पुत्रों की राजधानियों के लिये दो नगर बसाये, जोकि तक्षशिला तथा पुष्कल (पेशावर) के नाम से प्रसिद्ध हुये।<sup>१०</sup>

कथासरित्सागर में तक्षशिला का पञ्जाब से सम्बन्ध स्थापित किया गया है। महाकवि सोमदेव भट्ट ने 'तक्षशिला' नगर के सौन्दर्य का वर्णन करते हुये इसे पञ्जाब की वितस्ता (जेहलम) नदी के तट पर बसा हुआ बताया है।<sup>११</sup>

एक लोकपरम्परा पञ्जाब के सुप्रसिद्ध अमृतसर नगर के समीपस्थ रामतीर्थ नामक स्थल को महर्षि वाल्मीकि का आश्रम स्थान मानती है। जन-विश्वास के अनुसार राम के पुत्र लव तथा कुश की उत्पत्ति यहीं हुई थी एवं सीताजी ने यहीं रहते हुये अपने पुत्रों का पालन-पोषण किया था। अमृतसर नगर में स्थित एक हनुमान् बड़ा मन्दिर नामक प्रसिद्ध स्थान है। लोक-मान्यता के अनुसार लव-कुश तथा लक्ष्मण पुत्र चन्द्रकेतु के मध्य हुये युद्ध के समय लव-कुश ने इसी स्थान पर महावीर हनुमान् को बन्धक बना कर रखा था।

रामायण के अयोध्या काण्ड के अनुसार राजा दशरथ की मृत्यु का समाचार सुनकर भरत अपने ननिहाल केकेय प्रदेश से प्रस्थान करता है, जिसकी स्थिति सम्बन्धी विद्वानों में विभिन्न मत प्रचलित हैं। यथा- सतलुज तथा व्यास के अन्तराल में स्थित कोई प्रदेश अथवा गान्धार के

अन्तर्गत गजनी अथवा जेहलम का तटवर्ती भू-भाग कीकन-

पञ्चनदप्रान्ते विपाशाशतुद्वोरन्तरालेऽवस्थितो भूभाग एव पुरातनः केकयो जनपद इति बहूनां विदां सम्मतम्। केचित्तु 'गजनी' नामकं स्थानं केकयं मन्यन्ते तन्नातिश्रद्धेयं तस्य प्रदेशस्य गान्धारदेशान्तर्गतत्वात्। केचन वितस्तातटवर्ती 'कीकना'ख्यो भूभागः केकयः इति मन्यन्ते।<sup>१२</sup>

केकेय प्रदेश की स्थिति के सम्बन्ध में सभी मतों के अनुसार अयोध्या जाने के लिये सतलुज नदी को पार करना ही पड़ेगा। रामायणीय सन्दर्भ के अनुसार भरत बहुत ही गहन एवं चौड़े बहाव वाली नदी को ऐलधान नगर में लांघता है।<sup>१३</sup>

ऐलधान के बाद वह सरस्वती नदी को पार करता है। 'ऐलधान' नाम इला के पुत्र 'ऐल' अर्थात् यशस्वी राजा पुरुरवा पर आधारित प्रतीत होता है। पुरातत्त्व विभाग की खुदाई से लुधियाना में पूर्व हड़प्पन, उत्तर हड़प्पन तथा रामायण-महाभारत-कुषाण-गुप्त काल की सभ्यता के अवशेष मिले हैं। अतः कहा जा सकता है कि अयोध्या जाने के लिये भरत के मार्ग में सतलुज नदी के तट पर आया ऐलधान नगर वर्तमान लुधियाना ही है।<sup>१४</sup> निष्कर्षतः वर्तमान 'लुधियाना' नाम 'ऐलधान' नगर का ही विकृत अथवा विकसित रूप प्रतीत होता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि रामायण के पात्रों का पञ्जाब की धरा से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। कसूर, तक्षशिला तथा लाहौर जैसे नगरों पर श्री राम एवं भरत के पुत्रों द्वारा शासन करना इस धारणा को और भी अधिक पुष्ट करता है।

-संस्कृत विभाग, हिन्दू कॉलेज, अमृतसर।

१०. रघुवंश, १५.८७-८९

११. कथासरित्सागर, ६.१.१०-११

१२. वाल्मीकिरामायण, पृष्ठ सं.-७

१३. वाल्मीकिरामायण, अयोध्याकाण्ड, ७१.२-३

१४. द्रष्टव्य ट्रिब्यून, फरवरी १३, २०१२



## पंजाब में रचित रामसाहित्य के लिए विश्वज्योति का एक प्रयास

— डॉ. देवराज शर्मा

भारतीय संस्कृति में रामायण और श्रीराम का विशेष आदर और स्थान है। वाल्मीकि रामायण श्रीराम से संबंधित साहित्य का उपजीव्य काव्य कहा जा सकता है। विश्व की कई भाषाओं में वाल्मीकि रामायण के आधार पर ही श्रीराम का चरित्र वर्णित किया गया है। काव्यों में वर्णित करुणरस के बारे में यदि हम विचार करें तो निश्चित ही वाल्मीकि रामायण को करुणरस का स्रोत या आगार कहा जा सकता है। रामायण का कोई ऐसा काण्ड नहीं है, जिसमें करुणरस की उपस्थिति नहीं हो। अतः वाल्मीकि रामायण का परवर्ती विपुल साहित्य, जिसमें श्रीराम का ईश्वरीयरूप वर्णित किया गया है, वह साहित्य वाल्मीकि रामायण की ही उपज है। इस बात की स्पष्टता के लिए समय-समय पर लिखे साहित्य को पढ़कर भली-भाँति जाना जा सकता है।

भारतीय साहित्य में जितना विस्तृत साहित्य श्रीराम से संबंधित मिलता है, उतना साहित्य संभवतया श्रीकृष्ण पर नहीं मिलता। क्योंकि श्रीराम भारतीय समाज की आत्मा हैं। श्रीराम मर्यादापुरुषोत्तम तो हैं ही, वे समाज के एक आदर्शपात्र भी हैं। समाज श्रीराम को अपने से भिन्न नहीं मानता। समाज में व्यक्ति को जीवन में जो सुख-दुःख प्राप्त होते हैं, वैसी घटनाएँ और सुख-दुःख का अनुभव श्रीराम को अपने जीवन में भी प्राप्त हुआ था। यद्यपि हम श्रीराम को परमात्मा या ईश्वर मानते हैं परन्तु समाज में एक आदर्श स्थापित करने और मर्यादा की स्थापना के लिए श्रीराम ने अपने कार्यों से अपने को सामान्य मनुष्य ही स्थापित किया। श्रीराम ने प्रत्येक घटना में अपना आदर्श और मर्यादित स्वरूप उपस्थित किया।

भारत के प्रत्येक प्रान्त में वहाँ की भाषा में वहाँ के कवियों और लेखकों ने श्रीराम के चरित्र को अपने साहित्य में उपनिबद्ध किया है। भारत का कोई ऐसा प्रान्त नहीं होगा और न ही ऐसी कोई भारतीय भाषा होगी, जिसमें श्रीराम के जीवन पर साहित्य न रचा गया हो। इसी परम्परा के अन्तर्गत अविभाजित एवं विभाजित पंजाब में विभिन्न कवियों और लेखकों ने अपनी-अपनी दृष्टि से अपनी रचनाओं में श्रीराम को अपना नायक बनाया और रामसाहित्य लिखा।

यद्यपि पंजाब में रचित रामसाहित्य के लेखकों और उनकी रचनाओं के बारे में साहित्य के क्षेत्र के लोगों को अधिक जानकारी नहीं है, क्योंकि पंजाब में रचित रामसाहित्य ब्रजभाषा या फारसी भाषा में लिखा होने के कारण लोगों की दृष्टि में व्यापक रूप से नहीं आया तथा पंजाब की भौगोलिक और संस्कृतिक परिस्थितियों के कारण रामसाहित्य पंजाब में प्रचार-प्रसार प्राप्त नहीं कर सका। इसीलिए यह साहित्य लाइब्रेरियों, संस्थानों, व्यक्तिगत संग्रहों में पड़ा हुआ है। कुछ संग्रह कालकवलित भी हो गया होगा। तथापि विश्वज्योति के पंजाब में रचित रामसाहित्य के विशेषांकों के दोनों भागों में माननीय विद्वान् लेखकों ने अपने-अपने लेखों में रामसाहित्य और उनके लेखकों पर विस्तार से गवेषणापूर्ण प्रकाश डाला है।

उप संपादक, विश्वज्योति



## इक्ष्वाकु वंश जिसमें राम का जन्म हुआ

— आचार्य आभा प्रभाकर

हमारे देश का प्राचीन वाङ्मय दो बृहत् वर्गों—श्रुति एवं स्मृति में विभाजित है। श्रुति के अन्तर्गत चारों वेद, ब्राह्मण और उपनिषद् की गणना होती है तथा स्मृति में— शिक्षा, कल्प, ज्योतिष आदि वेदांग (विशेषकर श्रौत, गृह्य और धर्मसूत्र), मनु, याज्ञवल्क्य और पराशर आदि धर्मशास्त्र, रामायण, महाभारत, अट्ठारह पुराण और नीति-शास्त्र के विविध ग्रन्थों की गणना होती है। श्रुतियों की तरह स्मृतियों की रचना का काल भी बहुत प्राचीन है। कहते हैं, जब वेदों की संहिताएं बनीं तब साथ ही साथ पुरानी बातों का संग्रह कर एक पुराणसंहिता भी बनाई गई। यह महाभारत-युद्ध (आज से पांच हजार वर्ष पूर्व) की बात है और अनुश्रुति के अनुसार इस संहिता के निर्माता वेदों के महान् सम्पादक स्वयं महर्षि कृष्ण द्वैपायन (व्यास) ही थे। यही कारण है कि आज भी जिस स्थान से भागवत आदि पुराणों का पारायण किया जाता है उसे व्यासपीठ या व्यास-गद्दी कहा जाता है। पुराणों में प्राचीन गाथाओं, आख्यानों, वंशावलियों, धार्मिक विवाद आदि के रूप में हमारे पुरातन इतिहास, धर्म और समाज-व्यवस्था की बहुमूल्य सामग्री संगृहीत है। जब से पुराणों पर शोध-कार्य होने लगा तब से लोग पुराणों के महत्त्व को भी समझने लगे हैं। वास्तव में पुराणों का उद्देश्य जनसाधारण को सरल और

रोचक ढंग से आर्य-धर्म की शिक्षा देना था, साथ ही अपने प्राचीन इतिहास से परिचित करने का भी लक्ष्य उनमें रखा गया था। यही कारण है कि आज पुराणों का फिर से गहन अध्ययन होने लगा है। यदि पुराण न होते तो हम प्राचीन भारत के इतिहास से भी अनभिज्ञ होते।

पुराणों में न केवल प्राचीन काल में होने वाले राजाओं का ही वर्णन किया गया है। बल्कि उनकी कई पीढ़ियों तक के नाम भी उनमें दिये गये हैं। इससे हमें भारत के उन प्राचीन राजवंश का भी पता चलता है जिनमें श्री रामचन्द्र और श्री कृष्णचन्द्र सरीखे महापुरुषों ने जन्म लिया। उन राजवंशों में इक्ष्वाकु वंश, अजमीढ़ वंश, भरत वंश, यदुवंश, काशी राजवंश और मगध राजवंश के नाम तो विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। रामायण और महाभारत को कपोलकल्पित कहानियां सिद्ध करने वालों के लिये भी यहां बहुत बड़ी चुनौती है। बौद्धों के समय में या उनके बाद पुराणों को बिगाड़ने का भरसक प्रयास किया गया किन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि हम पुराणों को त्याग दें। यदि वेद हमारी आत्मा हैं तो पुराण हमारे प्राण हैं।

पुराणों के अनुसार, इक्ष्वाकु वंश का प्रारम्भ महाराजा इक्ष्वाकु से होता है। महाराजा इक्ष्वाकु के पिता का नाम महाराजा श्राद्धदेव था जो

वैवश्वत (वर्तमान) मन्वन्तर के 'मनु' थे। हरिवंश पुराण के अनुसार महाराजा श्राद्धदेव के नौ पुत्र थे। इन नौ पुत्रों का नाम क्रमशः- इक्ष्वाकु, नाभाग, धृष्णु, शर्याति, नरिष्यन्त, प्रांशु, नाभागरिष्ट, कल्प और पृषध्र था। इनमें इक्ष्वाकु सबसे बड़े थे। महाराजा श्राद्धदेव ने, अपना शरीर छोड़ने से पूर्व ही, अपना राज्य अपने ज्येष्ठ पुत्र इक्ष्वाकु को दे दिया। इक्ष्वाकु ने मध्यप्रदेश का राज्य स्वीकार किया और शेष राज्य अपने भाईयों में बांट दिया। महाराजा इक्ष्वाकु की राजधानी अयोध्या थी। महाराज इक्ष्वाकु के सौ पुत्र हुए जिनसे क्षत्रिय (सूर्यवंशी) कुल का विस्तार हुआ। इन्हीं महाराजा इक्ष्वाकु के नाम पर उनके वंश का नाम-इक्ष्वाकु वंश पड़ा। श्री रामचन्द्र के प्रपितामह जिनका नाम महाराज रघु था, के बाद उनके (महाराज रघु के) वंशज-रघुवंशी कहलाने लगे। इक्ष्वाकु वंश में (अयोध्या की परम्परा में) जो राजा हुए उनकी सूची- हरिवंश, वायु, विष्णु, मत्स्य, भागवत एवं देवी भागवत आदि पुराणों एवं उप-पुराणों में दी हुई है। पुराणों में वर्णित नामों में थोड़ा बहुत अन्तर जरूर है किन्तु पीढ़ियों की गिनती लगभग बराबर है। उदाहरण के तौर पर हरिवंश पुराण तथा भागवत पुराण में इक्ष्वाकु वंश की समाप्ति बृहद्बल के नामोल्लेख के बाद होती है लेकिन मत्स्य पुराण में इक्ष्वाकु वंश का अन्तिम राजा श्रुतायु हैं। यह उल्लेखनीय है कि श्रुतायु का उल्लेख महाभारत युद्ध में पराजित राजा के रूप में हुआ है। अतः श्रुतायु को भगवान् श्री कृष्णचन्द्र का समकालीन मानना

चाहिए। हरिवंश पुराण में इक्ष्वाकु वंश की जो सूची वर्णित है वह इस प्रकार है -

इक्ष्वाकु, विकुशि, ककुत्स्थ, अनेना, पृथु, जिष्टराश्व, आर्द्रा, युवनाश्व, श्राव, श्रावस्तक, बृहदश्व, कुवलाश्व, दृष्टाश्व, हर्यश्व, निकुम्भ, संहताश्व, अकृशाश्व, प्रसेनजित (संहातश्व की कन्या हेमवती का पुत्र), युवनाश्व, मान्धाता (चक्रवती सम्राट), पुरूकुत्स, त्रसद्वस्यु, संभूत, सधन्वा, त्रिधन्वा, त्रय्यारूण, त्रिशंकु, हरिश्चन्द्र (सत्यवादी हरिश्चन्द्र), रोहित, हरित, चंचु, विजय, रूरक, वृक, बाहु, सगर, असमंजस, अंशुमान, दिलीप, भगीरथ (गंगा को पृथ्वी पर लाने वाले अभियन्ता), श्रुत, नाभाग, अम्बरीष, सिन्धुद्वीप, अयुताजित, ऋतुपर्ण, राजा नल (दमयन्ती का मित्र), अतिपार्ष्णि, सुदास, सौदास, मित्रसह (कल्माषपाद), सर्वकर्मा, अनरण्य, निघ्नस, अनमित्र, दुलिदुह, दिलीप, रघु, अज, दशरथ, राम (श्रीरामचन्द्र), लवकुश, अतिथि, निषध, नल, नभ, पुण्डरीक, क्षेमधन्वा, देवानीक, अहीनगु, सुधन्वा, अलन, उक्थ, वज्रनाथ, शंश (ध्युषिताश्व), पुष्प, अर्थसिद्धि, सुदर्शन, अग्निवर्ण, शीघ्र, मरू, बृहद्बल।

इस तरह हम देखते हैं कि भगवान् श्रीराम चन्द्र के बाद की इक्कीस पीढ़ियों तक की जानकारी हमें हरिवंश पुराण से मिलती है।

इक्ष्वाकु वंश का वर्णन जैनग्रन्थों में भी मिलता है। जैनियों के २४ में से १५ तीर्थंकर (सर्वभगवान्-आदिनाथ, अजितनाथ, सभवंनाथ, अभिनन्नाथ, सुमतिनाथ, पद्मनाथ, चन्द्रप्रभ, पुष्पदन्त,



शीतलनाथ, श्रेयांसनाथ, वासुपूज्य, विमलनाथ, अनन्तनाथ, मल्लिलाथ और नभिनाथ) इक्ष्वाकु थे। इस सम्बन्ध में जैनग्रन्थों में वर्णन मिलता है कि इन्द्र के हाथ में इक्षुयष्टि-ईख का दण्ड अर्थात् गन्ना, देखकर ऋषभदेव ने उसे प्राप्त करने के लिए अपना प्रशस्थ लक्ष्मणयुक्त दाहिना हाथ आगे बढ़ाया। तब सर्वप्रथम इक्षुभक्षण की रुचि जानकर इन्द्र ने उनका (ऋषभदेव का) नाम इक्ष्वाकु रख दिया। इस प्रकार इक्ष्वाकु वंश का प्रादुर्भाव हुआ। वास्तव में इस कथा के पीछे भी ईख (गन्ना) की उत्पत्ति का ही इतिहास छिपा हुआ है। यह उस समय की बात है जब मनुष्य ने जंगलों को छोड़कर नगरों में रहना शुरू किया और तभी सर्वप्रथम कृषि की ओर उसका ध्यान गया। अतएव ऋषभदेव द्वारा इक्षुयष्टि भक्षण हमें ईख की सर्वप्रथम खेती किये जाने की ओर ही इंगित करता है। यही कथा मनु (श्राद्धदेव) के पुत्र इक्ष्वाकु (जिनका असली नाम तो कुछ और ही रहा होगा) पर भी लागू होती है। वास्तव में यह वन्यसंस्कृति से कृषिसंस्कृति तक के काल की गाथा है। ठीक इसी प्रकार कुरू वंश के संस्थापक राजा कुरू ने सर्वप्रथम पृथ्वी पर हल चलाया था। उनके द्वारा जोती गई पृथ्वी को आज भी कुरूक्षेत्र (कुरू का खेत) नाम से जाना जाता है।

जैनियों की तरह बौद्धों के यहां भी (महावस्ववदान नामक संस्कृत ग्रन्थ में) इक्ष्वाकु का वर्णन मिलता है। उसके अनुसार वाराणसी के राजा (जिनका नाम सुबन्धु था) ने एक स्वप्न देखा जिसमें उसने अपने शयनागार को

ईक्षुदण्ड से भरा हुआ देखा। अर्थात् उसके शयनागार में ईक्षु (ईख) उग आये। नींद टूटने पर स्पष्ट प्रकृत निकला। क्रम से जब सकल इक्षुदण्ड सूखा तो अन्त में केवल एक इक्षुदण्ड बचा। राजा ने दैवज्ञों को बुलाकर इसका कारण पूछा। उन्होंने बताया कि इस इक्षुदण्ड में उपजने वाला बालक तुम्हारा पुत्र होगा। दैवज्ञों की बात ठीक निकली। इक्षु को तोड़कर एक बालक उत्पन्न हुआ। इक्षु के मध्य रहने के कारण उसका नाम-इक्ष्वाकु पड़ा। सुबन्धु के बाद वही वाराणसी का राजा बना। उसके नाम पर ही उसके वंश का नाम-इक्ष्वाकु वंश पड़ा इस कथा में भी ईख की खेती करने की शुरुआत को बड़े रोचक ढंग से बताया गया है।

गुरु गोविन्द सिंह ने भी इक्ष्वाकु वंश में जन्म लेने वाले बहुत से राजाओं का वर्णन (श्री दशम गुरु ग्रन्थ साहिब में) किया है। उन्होंने इक्ष्वाकु वंश का जो वृत्तान्त लिखा है। वह महाराजा रघु से शुरू किया है। उन्होंने रघुवंश को चलाने वाले महाराजा रघु, उनके पुत्र महाराजा अज और पौत्र महाराजा दशरथ के नाम दिये हैं -

तिन के बंस बिखै रघु भयो।

रघवंशहि जिह जगहिचल्यो।

ता ते पुत्र होत भयो अज बर।

महारथ अरू महाधनुरधर।

जब तिन भेस जोग को लयो।

राजपाट दशरथ को दयो।

इसके बाद वे लिखते हैं कि महाराजा दशरथ की तीन स्त्रियां थीं जिनसे चार पुत्रों (राम, भरत,

लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न) का जन्म हुआ -

होत बयो वहि महा धनुरधर।

तीन त्रिआन बरा जिह रूचिकर।

प्रिथम जयो जिह राम कुमारा।

भरत लक्ष्मण सत्रबिदारा ॥

आगे चलकर वे लिखते हैं कि - श्री रामचन्द्र के पुत्र (लव और कुश) हुए जिन्होंने मद्र (पंजाब) का राज्य संभाला। उनमें लव ने लाहौर और कुश ने कसूर को बसाया -

सीअ सुत बहुरि भये दुई राजा।

राजपाट उन्हीं कउ छाजा।

मद्र देस एस्वरज बरी जब।

भांति, भांति के जगग किये बत।

तही तिनै बांधे दुई पुरवा।

एक कसूर दुतीय लहूरवा ॥

गुरु गोविन्द सिंह ने लव और कुश के वंशजों में कालकेतु और कालराय नामक दो राजाओं का उल्लेख किया है जिनमें कालकेतु महाबली था और उसने कालराय को अपने नगर (राज्य) से निकाल दिया। कालराय भाग कर सनौढ़ गये और वहीं पर उसका जो पुत्र हुआ उसका नाम सोढ़ीराय रखा गया। यहीं से सनौढ़ वंश (सोढ़ी वंश) की शुरूआत हुई और इसी वंश में आगे चलकर गुरु गोविन्द सिंह का जन्म भी हुआ -

कालकेत भयो बली अपारा।

कालराई जिनि नगर निकारा ॥

भाज सनौढ़ देस ते गए।

तेही भूप जा बिआहत भए ॥

तिह के पुत्र भयो जो धामा।

सोढ़ीराय धरा तिहिनामा ॥

परम पवित्र पुरख जू की आ।

बंस सनौढ़ दिन ते थिआ ॥

ता ते पुत्र पौत्र हुई आए।

ते सोढ़ी सम जगत कहाए ॥

यही कारण है कि गुरु गोविन्दसिंह ने राम-कथा (रामायण) को 'राम-कथा' जुग-जुग अटल कहा है। उन्होंने तो रामायण के पढ़ने और सुनने की भी बहुत महिमा लिखी है -

जो इह कथा सुनसै अरू गावे।

दुख पाप तिह निकटि न आवे ॥

विष्णु (राम) की भक्ति करने वाले को तो (गुरु गोविन्द सिंह के अनुसार) सांसारिक और दैविक रोग छू भी नहीं सकते -

बिशन भगति की एफल होई।

आधि ब्याधि छवै सकै न कोई ॥

इस प्रकार हम देखते हैं कि इक्ष्वाकु वंश का इतिहास बहुत लम्बा है महाराजा इक्ष्वाकु से लेकर महाराजा बृहदबल तक के समस्त राजाओं के नाम तो हमें पुराणों में ही मिलते हैं और उनके बाद की वंशावलियों का उल्लेख 'दशम ग्रन्थ' में उपलब्ध है। अतएव जब तक श्रीराम का नाम रहेगा तब तक इक्ष्वाकु वंश का भी नाम रहेगा।

—भारतीय ज्योतिर्विज्ञान अनुसन्धान संस्थान, रामतीर्थ केन्द्र,

अम्बाला रोड़, सहारनपुर-२४७००१ (उ.प्र.) मोबा: ९८९७७-८०५४४



## रामराज्य में राजनीतिक व्यवस्था

— प्रो. अमरजीत सिंह

रामराज्य आदर्श-राज्य की राजनीतिक व्यवस्था आज भी अद्भुत खुशहाल और सर्वश्रेष्ठ व्यवस्था की एक ऐसी मिसाल बनी हुई है जिसे आधुनिकयुग के राजनीतिक चिंतक भी व्यावहारिक रूप देने में असमर्थ रहे हैं। एक ऐसा कल्याणकारी राज्य जिस में कोई भी नागरिक दुखी न हो, इस की खोज की जाये तो इसका प्रमाण रामायण के अध्ययन से ही हो जाता है। श्री राम द्वारा राज्य में ऐसी कुशल व्यवस्था स्थापित की गई जो आज भी अध्ययनकर्ताओं के लिए प्रेरणा बनी हुई है और वह इसे दोबारा स्थापित करने हेतु लगातार प्रयास कर रहे हैं।

**रघुकुल रीत सदा चली आई पर प्रान जाई वचन न जाई।** त्रेतायुग में रघुकुल की इस रीत को निभाकर एक आदर्शराज्य स्थापित कर श्री राम मर्यादा-पुरुषोत्तम कहलाये हुए। श्रीराम ने मर्यादा का पालन करते हुए राज्य, मित्र, माता-पिता यहां तक कि अपनी पत्नी का साथ भी छोड़ दिया था। वे एक निरपेक्ष, कुशल, न्यायप्रिय, प्रसन्नचित्त, धैर्यवान्, चरित्रवान्, सर्वगुण सम्पन्न राजा बने उनके राज्य में सभी व्यक्ति खुश थे उनके द्वारा किया गया शासन प्रेरणा का स्रोत है। रामराज्य में हर व्यक्ति को न्याय मिलता था हर एक की बुनियादी आवश्यकताएं पूरी होती थीं।

सारी प्रजा सुरक्षित और आनंद से अपना जीवन व्यतीत करती थी।

रामायण के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि त्रेतायुग में राजतंत्र शासन-प्रणाली थी। रामराज्य में उत्तराधिकारी को राजा घोषित करने का अधिकार केवल राजा के पास ही होता था परन्तु इसमें लोगों का भी समर्थन लिया जाता था। रामायण के एक प्रसंग अनुसार राजा दशरथ जब वृद्ध हो गए तो राम को राजा घोषित करने के लिए एक सभा बुलाई गई जिसमें सभा के सभी योग्य सदस्यों ने श्री राम का चुनाव अपने मूल्यांकन के आधार पर किया। त्रेतायुग में राजा का चुनाव गुणों के आधार पर होता था। रामराज्य में राजा के कर्तव्यों और गुणों का भी वर्णन मिलता है। राजा का सब से बड़ा कर्तव्य प्रजा को खुश रखना, न्यायप्रिय और शक्तिशाली तथा सदाचारी होने के साथ-साथ प्रजा को अपना परिवार मान कर पालन करना। श्रीराम में ये सब गुण मौजूद थे<sup>१</sup>। उन्होंने प्रजा के अपवादों को मिटाने के लिए अपनी पत्नी सीता का भी त्याग कर दिया था और सदाचार को आधार बनाकर वह अपने पिता जी की आज्ञा का पालन करते हुए १४ वर्ष बिना संकोच वन में दृढ़ता के साथ रहे<sup>२</sup>।

रामराज्य में राजा की सहायता के लिए एक मंत्री परिषद् होती थी और यह मंत्री विद्वान् और महान्

1 C. Rajagopalachari, 1958, RAMAYANA, Ramakrishan executive secretary, Bombay, p-46

२ भाई जी हनुमानप्रसादजी, १९८७, कल्याण, मोतीलाल प्रकाशन, गोरखपुर

गुणों वाले होते थे। यह मंत्री अच्छे व्यवहार वाले, कुशल, चतुर, चरित्रवान्, कर्तव्यों को समझने वाले और न्यायप्रिय होते थे। जो हमेशा लोक-कल्याण के कार्यों में लगे रहते थे। इनका कार्य राजा को सभी कार्यों से सम्बंधित पूर्ण जानकारी प्रदान करना होता था। राजराज्य की राजनीतिक प्रणाली में परिषद् और सभा दो प्रकार की संस्थाओं का उल्लेख मिलता है। परिषद् के सदस्य विद्वान् होते थे जिसको बड़े नगरों और राजधानियों के नागरिकों द्वारा चुना जाता था। इसके अतिरिक्त सभा एक बड़ी संस्था थी जो साधारण मौकों पर काम नहीं करती थी। इसका प्रबंध विशेष अवसरों पर ही किया जाता था। युवराज का चुनाव, राजा के उत्तराधिकारी तथा सभापति राजा द्वारा चुना जाता था। मंत्री केवल प्रशासन के अधिकारी होते थे जिन्हें तीरथ कहा जाता था।

रामायण के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि त्रेतायुग में राजा न्याय का स्रोत होता था। न्यायपालिका का अस्तित्व था। अंतिम निर्णय के न्याय का अधिकार राजा के ही पास होता था। जो राजा इस अधिकार का प्रयोग नहीं करता था वह नरक का भागीदार माना जाता था। रामायण में राजा को सर्वोच्च माना जाता था और वही राजा प्रजा का प्रिय होता था जो न्याय पसंद होता था<sup>1</sup>। दशरथ पुत्र राम भी न्याय पालक थे। श्री राम सत्य के आधार पर न्याय करके भ्रष्ट व्यक्तियों को दंड देते थे। उनके द्वारा स्थापित न्यायप्रबंध आज भी प्रेरणा-स्रोत है। रामराज्य में अन्याय का कोई

स्थान नहीं था। वह जो भी निर्णय लेते उसे धर्म की कसौटी पर परखते थे और इसमें उनका नेतृत्व राज्य के पूजनीय गुरु वसिष्ठ करते थे।

रामराज्य में राज्य की विदेश नीति का स्पष्ट रूप से वर्णन तो नहीं किया गया है परन्तु रामराज्य में हुए अश्वमेध यज्ञ के वर्णन से स्पष्ट होता है कि राजा कई राज्यों को जीत कर एक विशेष साम्राज्य स्थापित करते थे। राजा दशरथ चक्रवर्ती सम्राट् थे और आसपास के कई राज्यों के द्वारा उन्हें उपहार आदि दिए जाते थे। उस समय किष्किन्धा, मिथिला, कौशल, लंका आदि राज्यों का उल्लेख मिलता है। जिससे रामराज्य का दूसरे राज्यों से सम्बन्ध ज्ञात होता है। रामायण में दूतों का भी वर्णन मिलता है। राजदूत की एक विशेष परम्परा विकसित थी। जासूस वेश बदल कर जासूसी का काम करते थे जिस से दूसरे राज्यों के गुप्त भेद पता चलते थे। शक्तिशाली सेना स्थिर व सुरक्षित राज्य की विशेषता होती है जो रामराज्य में थी। वाल्मीकि जी ने रामायण में सेना का वर्णन किया है राजा दशरथ की सेना बहुत शक्तिशाली थी। रामराज्य में सेना की मजबूती व कुशलता पर अत्यधिक ध्यान दिया जाता था। रामराज्य में पांच प्रकार की सेना का उल्लेख मिलता है। पहली मित्रसेना जो श्रीराम के मित्र राजाओं की सेना थी। मित्र राजाओं ने आवश्यकता पड़ने पर सहायता देने का वचन दिया था, दूसरी थी अटवी-सेना जिसमें जंगल के प्रदेशों और अन्य क्षेत्र के लोगों को भर्ती किया जाता था। तीसरी थी बलसेना जिस



में राज्य के क्षत्रिय भर्ती किये जाते थे, चौथी थी भोतिउ बलसेना जो केवल वेतन के आधार पर भर्ती होती थी, पांचवी थी दृशद बल सेना जो दूसरे राज्य की सेना से भागे हुए सैनिक होते थे। यह पांच प्रकार की सेना पैदल सेना, घोड़े वाली सेना, हाथी वाली सेना और रथ वाली सेना में विभाजित थी। राज्य की सेना का नेतृत्व करने के लिए आर्य सुमंत को सेनापति नियुक्त किया गया था।

रामायण के प्रसंगानुसार सेना के आक्रमण करने के लिए एक विशेष दल होता था जिसको भूमि प्रदेशजन कहा जाता था। रामायण में सेना द्वारा प्रयोग किये जाने वाले अस्त्रों का भी वर्णन है। रामराज्य की सेना द्वारा तीर प्रयोग किये जाते थे। इसके अतिरिक्त ढाल, तोमर, मुदगर, शूल, कुल्हारे, खरग, चक्र, गदा, मूसल और वज्र आदि अस्त्र होते थे। परन्तु वानरसेना शारीरिक बल पर ही अधिक विश्वास करती थी।

रामराज्य की सुरक्षा बहुत महत्वपूर्ण थी। रामराज्य में सुरक्षा-बल-क्षेत्र (दुर्ग) होता था जिसके द्वारा शत्रु पर आक्रमण किये जा सकें परन्तु शत्रु आसानी से उस जगह आक्रमण न कर सके। रामायण में चार प्रकार की इस व्यवस्था का वर्णन किया गया है। पहला नादेय दुर्ग जो समुद्र और नदियों से घिरे होते थे जैसे कि नौका किला, दूसरा पहाड़ियों से घिरे दुर्ग जैसे किष्किंधा। तीसरा जंगलों से घिरे दुर्ग जो घने जंगलों में सुरक्षित होते थे। चौथा

दुर्दीम गुर्खिया साधन खाइआं परकोटा आदि<sup>४</sup> जैसे अयोध्या। सुरक्षा के लिए युद्ध एक अनिवार्य साधन था। परन्तु युद्ध में अनुचित साधन और विनाशकारी अस्त्रों के प्रयोग की मनाही की। युद्ध धर्म पर आधारित नियमों पर ही होते थे। लंकाकाण्ड में मेघनाद द्वारा कई वानरों की मौत से लक्ष्मण को क्रोध आया और उन्होंने श्रीराम से ब्रह्म-अस्त्र के प्रयोग की आज्ञा मांगी। श्रीराम ने लक्ष्मण को समझाया कि किसी एक के कारण धरती के सारे राक्षसों को मारना उचित नहीं। लड़ाई न लड़ने वालों को, जान बचाने के लिए झुके हुए को, हाथ जोड़ कर शरण में आये हुए को, और किसी भागते हुए को मारने के लिए इसका प्रयोग उचित नहीं है<sup>५</sup>।

इस खोज के आधार पर यह स्पष्ट है कि त्रेतायुग में राजतन्त्र प्रणाली होती थी। राजा की नियुक्ति में प्रजा की सहमति भी होती थी। रामराज्य कुशल, खुशहाल, सुरक्षित और कल्याणकारी राज्य था। प्रजा को न्याय मिलता था। रामराज्य एक आदर्श राज्य था जिसमें अन्याय, शोषण, भ्रष्टाचार और अत्याचार का कोई स्थान नहीं था। श्रीराम ने ऐसा रामराज्य स्थापित किया जिस से आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतक प्रेरणा लेकर अपने विचार प्रकट करते हैं। सत्य है कि अगर कहीं धरती पर स्वर्ग जैसी स्थिति थी तो वह श्रीराम द्वारा स्थापित राज्य में ही थी।

— राजनीति शास्त्र विभाग, श्री गुरु गोबिन्द सिंह खालसा कॉलेज, माहिलपुर, जिला होशियारपुर।

<sup>४</sup> अंगरा, चंदा और सचदेवा, २००१, भारतीय राजनीतिक विचारधारा, पेप्सु बुक डीपू, पटियाला, पृष्ठ-४१

<sup>५</sup> श्रीमद् म्बामी तुलसीदास, श्री रामचरितमानस, मोती लाल जालान, गोरखपुर, लंकाकाण्ड

## यही राम उपदेश तुम्हारा

— प्रो. इन्द्रदत्त उनियाल

आदि कवि के अमर-काव्य से  
मुनि वसिष्ठ की कलित कथा से,  
कालिदास के महाकाव्य औ  
भवभूति के रामचरित से,  
तुलसी दास के मानस जैसे,  
भक्ति भावभावित दोहों से  
एक यही स्वर गूँज रहा है,  
मर्यादा पुरुषोत्तम तुमने,  
मर्यादा का माप किया था,  
और निज उज्ज्वल दिव्य चरित से  
जन जन को यह बता दिया था,  
नहिं त्याग सम उत्तम जग में  
कर्म अन्य है भवसागर में,  
मात पिता औ गुरुजन आज्ञा  
सदा पालनीया है घर में,  
इसमें ही कल्याण मनुज का  
यही राम उपदेश तुम्हारा,  
इसीलिए तो त्याग राज्य को,  
वन की राह मुदित हो ली थी,  
वेष तपस्वी धारण करके,  
पूर्ण प्रतिज्ञा वन में की थी ।।

छोटा बड़ा नहीं है भव में  
ऊँच नीच का काम न जग में ।  
जैसे सब समान हैं निज घर में  
उसी तरह देखो घर घर में ।।  
भिन्न समान लखें सबको हम  
ऊँच नीच से दूर रहें हम,  
भिलनी वेर तथा केवट के  
मित्र-भाव को याद रखो तुम,  
यही राम उपदेश तुम्हारा  
इससे ही कल्याण हमारा ।।  
यही धर्म है यही कर्म है,  
पूज्य सदा सबको सब समझें  
चाहे कोई कैसा भी हो  
उसको अपने जैसा समझें  
अच्छे कर्मों से ही मानव  
देव समान यहां बन जाता,  
अपने ही कर्मों के कारण  
मानव दानव है कहलाता,  
किन्तु याद तुम सदा रखो यह,  
दुष्ट जनों को प्रेमभाव से  
समझाओ अपनाओ पहले



समझाने पर समझ न पाये  
जैसा वह वैसा ही बनकर  
उचित मार्ग पर उसको लाओ,  
यह कहना है आर्य जनों का  
और नियम है धर्मशास्त्र का  
जिससे हो कल्याण मनुज का  
ऐसा कार्य करो जीवन में  
जन्म सफल हो भवसागर में  
यही राम उपदेश तुम्हारा,  
इसमें ही कल्याण हमारा ।।  
ऊँच नीच का भेद न कर, पर  
जो करता वह खूब निरख कर  
सदा सत्य को ही अपना कर,  
मानव विजयी मानव होता,  
और असत्य को अपना करके  
मानव भी दानव सा होता  
नहीं साथ है कोई देता,  
औरस बन्धु भी तज देता,  
रावण और विभीषण इसके  
साक्षी रामायण में दिखते,  
स्वर्णमयी लंका में पाठक  
फल इसका सब देख रहे हैं  
इसीलिए जय धर्ममूल है  
अपनाओ तुम सदा धर्म को  
निकट न आने दो अधर्म को  
समझो जग की रीति नीति को

अपनाओ नित आर्य-नीति को  
इसमें ही कल्याण मनुज का  
यही राम उपदेश तुम्हारा ।।  
जिससे जनता रहे सुखी सब  
शान्त भाव से भूषित हो जग  
देश जाति और जनता के हित  
दमन करो दुष्टों का निश्चित,  
इसमें ही कल्याण देश का  
यही राम उपदेश तुम्हारा  
इसमें ही कल्याण सभी का  
गृहस्थी भी अब बदल रहे हैं  
स्वार्थ भाव से भरे हुए हैं  
कोई नहीं किसी की सुनता  
छोटा-बड़ा, बड़ा क्या छोटा  
अपना ताना बाना बुनता  
बन्धु-जनों की बात कहें क्या?  
कहीं कहीं देखा है जाता  
पुत्र, पिता-माता को तज कर  
कहीं दूर है रहने जाता  
माना यह कलियुग है प्रभुवर !  
त्रेता के हैं आप धनुर्धर  
किन्तु दयामय करुणा कर प्रभु  
इसमें भी तुम यदि आ जाओ,  
निश्चय यह भी शान्त सुखद हो,  
राम-राज्य निश्चय बन जाये ।

-( संचालक-सम्पादक )

## श्री रामलुभाया आनन्द दिलशाद कृत पंजाबी रामायण में आदर्श-पारिवारिक सन्दर्भ

— श्री अजय शर्मा

महर्षि वाल्मीकि लौकिक संस्कृत साहित्य के प्रकाशमान स्तम्भ हैं। उनकी अमरकृति रामायण युगों-युगों तक भारतीय साहित्य का आधार रही है और रहेगी भी।<sup>१</sup> भारत का स्वरूप बहु भाषा-भाषी रहा है। रामायण को आधार बनाकर भारतीय भाषाओं में स्वतन्त्र रूप से कई रामायण लिखी गई हैं। इसी परम्परा में 'पंजाबी रामायण' शीर्षक से भी एक रामायण लिखी गयी है जो कि कवि 'रामलुभाया आनन्द दिलशाद का है।<sup>२</sup>

भारतीय समाज की परिवार प्रणाली की विश्वभर में एक अद्वितीय व्यवस्था है। हमारे पारिवारिक सम्बन्धों का विशद उल्लेख वैदिक साहित्य में उपलब्ध होता है। इस परिवार व्यवस्था को कवि दिलशाद अपने दृष्टिकोण से उच्च शिखर पर ले गए। आज के भौतिकवादी युग में परम्परा से चले आ रहे पारिवारिक सम्बन्ध शिथिल होते जा रहे हैं। समाज की इस पतनोन्मुख-स्थिति में कवि दिलशाद का दृष्टिकोण वर्तमान समय में बहुत सहायक सिद्ध हो सकता है।

परिवार शब्द 'परि' उपसर्ग 'वृ' धातु से निष्पन्न हुआ, जिसका अर्थ है- समूह या संगठन। इस प्रकार परिवार ऐसे व्यक्तियों का समूह है, जिसमें पति-पत्नी, माता-पिता, भाई-बहन आदि परस्पर मिल-जुल कर एक घर में एक छत के नीचे रहते हैं। अतः मनुष्य को सभ्य तथा नैतिक आदर्शों के ज्ञान एवं विकास में परिवार महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। 'मातृदेवी भव' 'पितृदेवो भव' का उद्घोष करने वाली भारतीय-संस्कृति में आज स्थान-स्थान पर उन वृद्धजनों के लिए वृद्ध-आश्रम बन गए हैं, जिनकी सन्तानें उनका पालन-पोषण करने से इन्कार कर देती हैं। २१वीं शताब्दी के इस युग में सन्तानें अपनी संस्कृति से विमुख हो गई हैं। वाल्मीकि रामायण के समान ही पंजाबी रामायण में भी श्रीराम सम्पूर्ण मानवता के लिए एक आदर्श हैं। कवि दिलशाद की दृष्टि में एक आदर्श और अच्छा पुत्र वही है, जो सदैव अपने माता-पिता की सेवा में निरत रहता है। जो अपने माता-पिता का आज्ञाकारी नहीं होगा, वह पुत्र तो समझो भूत के ही समान

१. यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।

तावद् रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति।। वा.रा. १/२/३६-३७

२. लिख्या हाल रामायण दा मैं सारा,

विच नझन पंजाबी जबान प्यारे। पं. रा. ७/५५२



होने के कारण तिरस्कार का पात्र है।<sup>३</sup>

माता-पिता की आज्ञा पालन करना ही पुत्र का धर्म है। श्रीराम सदैव अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करते हैं। वह अपने पिता दशरथ से कहते हैं कि मैं आपके वचनों का अवश्य ही पालन करूँगा। इन वचनों को मैं असत्य नहीं होने दूँगा।<sup>४</sup>

कवि दिलशाद ने माता का पुत्र के प्रति स्वाभाविक प्रेम का वर्णन करते हुए कहा है कि माता के लिए पुत्र से बढ़कर दूसरा कोई नहीं है। श्रीराम के वनगमन की बात को सुनकर माता कौशल्या स्वयं को उलाहना देती हुई कहती है कि मैंने ऐसा कौन-सा पाप कर दिया है, जो पुत्र का वियोग मुझे सहन करना पड़ेगा। पुत्र वियोग के इस दुःख के कारण मैं जीवित नहीं रहना चाहती। हूँ।<sup>५</sup>

पति-पत्नी का सम्बन्ध कैसा होना चाहिए? इस सम्बन्ध में कवि दिलशाद के विचार विशेष महत्त्व रखते हैं। पति-पत्नी का संबंध अत्यन्त घनिष्ठ एवं अटूट होता है। जिसका आधार

पाणिग्रहण संस्कार होता है। कवि की दृष्टि में पति-पत्नी दोनों को परिवार में सुख-दुःख, हर्ष-शोक, राज्य या वनवास आदि सब कुछ मिलकर भोगने चाहिए, ताकि वह किसी भी परिस्थिति में एक-दूसरे से अलग होने की परिकल्पना भी न करें। श्रीराम के साथ सीता का वन जाना, उन दोनों के अनन्य प्रेम का उत्कृष्ट उदाहरण है। सीता को पहले वन जाने की स्वीकृति न मिलने पर, वह श्रीराम से कहती है कि मैं सम्पूर्ण सुखों का परित्याग कर आपके साथ वन को चलूँगी। आप मुझे अपने चरणों में स्थान दे दीजिए।<sup>६</sup>

वर्तमान समय में भाई-भाई के सम्बन्ध को देखें तो दोनों में अत्यधिक वैर-भाव की भावना निरन्तर विकसित होती जा रही है। कहीं पैतृक-सम्पत्ति के लिए पारस्परिक कलह हो रहा है तो कहीं भूमि के लिए। जबकि कवि दिलशाद ने पंजाबी रामायण में भाईयों के आदर्श प्रेमपूर्ण सम्बन्धों का चित्र मानव समाज के सामने प्रस्तुत किया है। लक्ष्मण के मूर्च्छित हो जाने पर श्रीराम की व्याकुलता इतनी अधिक बढ़ जाती है कि

३. करदा टैहल खिदमत माई-बाप दी जो, समझो ओही पूत सपूत होंदा।  
दुखी वेख मा-पे वण्डे दुख नाही, ओ पूत नाही बल्कि मूत होंदा।।  
जिसने कैह्या मां-बाप दा मन्नेआ नहिँ, ओ पूत समझो मर के भूत होंदा।  
सताया जिस दिलशाद है मापेआँ नूँ, उस पूत दे सित ते जूत होंदा।। पं. रा. २/१२४-१२५
४. बोल तुसां दा झूठ न होण देसां, लैसां सभ मुसीबतां झल्ल मैं ताँ।  
हो के खुल दिलशाद कर देओ रुखसत, पेआं हाँ बन नूँ हुण चल्ल मैं ताँ।। पं. रा. २/१४३
५. कद लै जान मैरी न हुण कर देरी, पुतर टोर के जीवन किस तौर माइआँ।  
कीता पाप दिलशाद मैं है केहड़ा, एह के मेरे अज पेश आइआँ।। पं. रा. २/१६६
६. छोड़ सुख मैं दुख मनझूर करसाँ, मैनूँ किऊँ पर तुस्सी डरा रहे ओ।  
रखी कदमाँ दे विच दिलशाद मैनूँ, झूठे बाग किऊँ समझ दिखला रहे ओ।। पं. रा. २/२१३

उन्हें चारों तरफ सर्वत्र अन्धेरा ही अन्धेरा दिखाई देता है। वह विलाप करते हुए सुग्रीव से कहते हैं कि यदि मेरे भाई लक्ष्मण को कुछ हो गया तो मैं भी यहीं पर अपने प्राण त्याग दूँगा। लक्ष्मण के बिना मैं वापिस अयोध्या नहीं लौटूँगा।

यदि कोई व्यक्ति अपने पारिवारिक सम्बन्धों का निर्वाह करते समय मर्यादा का उल्लंघन करता है, तो वह पापी है एवं मृत्यु दण्ड का अधिकारी भी हो सकता है। किष्किन्धा काण्ड में बाण लगने के बाद बाली श्रीराम से कहता है कि उन्होंने अधर्म किया है। इस बात का उत्तर देते हुए श्रीराम उसे कहते हैं कि छोटे भाई की पत्नी तो तुम्हारी बेटी के

समान थी। तुमने मर्यादा का उल्लंघन किया था। इसी बात कारण तुम दण्ड के भागी बने।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि वर्तमान समय में जो पारिवारिक समस्याएँ सामने आ रही हैं, उनका समाधान कवि दिलशाद ने श्रीरामादि पात्रों के आदर्शता के सम्बन्धों को स्थापित कर पंजाबी में कर दिया है। कवि के अनुसार यदि पिता-पुत्र, पति-पत्नी, भाई-भाई आपसी रिश्तों को न पहचाने तो पारिवारिक जीवन बिखर जाएगा जबकि रिश्तों को पहचानने से परिवार एक परमानंद देने वाली संस्था बन जाएगा।

—शोधछात्र, संस्कृत विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर।

७. लओ सुण सुग्रीव जो गल्ल मेरी, गेंआ जद लक्ष्मण मेरा मर भाई ।  
मैं भी मरौँगा इसे दे नाल इत्ये, जासौँ परत के कदी न घर भाई ।। पं. रा. ६/६६२
८. छोटे भाई दी इस्त्री नाल जो तूँ, रंग रलिआँ लग्गा मणान प्यारे ।  
ओ भरजाई छोटी बेटी आही तेरी, लई पाप उसे तेरी जान प्यारे ।। पं. रा. ४/११५





## === संस्थान-समाचार ===

दान -

श्री जगदीश चन्द्र सडाना यूनाईड इंजीनियर, मन्दिर मार्किट, माता रानी रोड, लुधियाना।	१०००/-	मैनेजिंग ट्रस्टी, पी.के. एफ. फाईनैस लि. बलवीर टावर, नामदेव चौक, जालन्धर।	३१००/-
श्री देवव्रत शर्मा एडवोकेट ६२, राजेन्द्र नगर, सिविल लाईन्ज, जालन्धर।	१५,०००/-	श्री वी.आर. अग्निहोत्री ६६, ईस्ट एण्ड इनक्लेव, दिल्ली।	२०००/-
गुप्त दान रसीद नं. १३४९, १९-४-१८।	२१००/-	डॉ. मनोहर लाल शर्मा १९४२, ४६Th ऐवन्यू, सनफ्रांसिस्को, यू.एस.ए।	\$२००/-
श्री हर्ष नाथ १९२९, मार्कट कलेयर ऐवन्यू, औरलीयन अनटारियों, कनेडा।	१०,०००/-	श्री जी.के. शर्मा ६२१, तेल वाटर, लेक्सीगटन साऊथ कारलोना, यू. एस. ए.।	\$२०१/-
श्री हिमांशू वार्ड नं. ३, मुहल्ला आहलूवालिया, नजदीक सनातन धर्म मन्दिर, दसूहा (हो. पुर)	२०००/-	श्रीमती प्रेम बिन्दा, ( धर्मपत्नी स्व. डॉ. त्रिलोचन सिंह बिन्दा ) बिन्दा निवास, सिविल लाईनज, होशियारपुर।	२०००/-
श्रीमती ममता सूरी १५०, मास्टर तारा सिंह नगर, जालन्धर।	१०००/-	श्रीमती राजरानी म.नं. ६४२९, गली नं. ७, हरगोविन्द नगर, नीला झंडा, लुधियाना।	५००/-
श्री सी.के. आनन्द दीपा एक्सपोर्ट, ४४ ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली।	५००/-	श्रीमती अरुणा सूद निकट गांधी लाईब्रेरी, बहादुरपुर, होशियारपुर।	११००/-
श्री रत्न प्रकाश मल्होत्रा ऐटाअर क्रिएशन कम्पनी, ३०४, एम.टी.एस.रोड, चेन्नई।	३२,००/-	श्री ब्रजेश शर्मा ( सुपुत्र डॉ. कृष्णमुरारिशर्मा ) श्रीधाम, गली नं. ६, नारायण नगर, होशियारपुर।	५००/-

संस्थान-समाचार

डॉ. अश्वनी जुनेजा, रुक्मणी स्कैन सेंटर, अड्डा माहिलपुर रोड, होशियारपुर।	११००/-	श्री रवि कुमार जैन श्रेयांस इंडिया (फार्मा क्राफ्ट), प्रगति भवन, निकट एस.डी. पब्लिक स्कूल, चिंतपुरनी रोड, होशियारपुर।	५१००/-
मै. सनशाईन कम्पोनैट प्राईवेट लि. डी-१७, फोकल पवाईट, फगवाड़ा रोड, होशियारपुर।	११,०००/-	श्री प्यारे लाल गुप्ता ए-९०३, गार्डन इस्टेट, लक्ष्मी नगर, लिंक रोड, गोरेगांव, दक्षिणी मुम्बई।	११००/-
श्री धनंजय कुमार रैना, ट्रस्टी दयाल सिंह लाईब्रेरी ट्रस्ट सोसाईटी, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली।	२०००/-	श्री एम.पी. चीर १८-सी, विजय नगर, दिल्ली।	१०००/-
श्रीमती निम्मी धीर C/o. श्री सुरेश धीर ए-३, चिराग इनक्लेव, नई दिल्ली।	१०,०००/-	श्रीमती इन्दु शर्मा ५२ पारसन रोड, एस.एल. ३७ जी.यू. सलोह, यू.के.।	४४१७८-७५/- १४०००-००/-
डॉ. कशमीर चन्द आहूजा ४५ ए, नव निर्माण जनता कालोनी, जालन्धर।	२०००/-	श्री राजीव शर्मा गली. १२, कृष्णा नगर, होशियारपुर।	५००/-
		छात्रावृत्ति हेतु दान- श्रीमती ममता सूरी १५०, मास्टर तारा सिंह नगर, जालन्धर।	५०००/-





**हवन-यज्ञ**— विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान के सत्संग-भवन में प्रत्येक सप्ताह के प्रथम दिन सभी कर्मिष्ठों की उपस्थिति में हवन-यज्ञ किया जाता है। तदनन्तर कार्य प्रारम्भ होता है।

संस्थान के सत्संग भवन में ही परमपूज्य स्वामी सत्यानन्द महाराज जी की चलाई परम्परानुसार प्रत्येक मास के दूसरे शनिवार को नगर से उपस्थित भक्तों और अनुयायियों द्वारा अमृतवाणी का श्रद्धा और प्रेम से पाठ किया जाता है।

## === विविध-समाचार ===

**समर्पण दिवस**:- आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति द्वारा महात्मा हंसराज जी का पावन-जयन्ती-समारोह **समर्पण-दिवस** के रूप में परेड़ ग्राऊंड, सैक्टर-५, पंचकूला (हरियाणा) में २१ अप्रैल, २०१८ को मनाया गया। जिसमें विभिन्न स्थानों से पधारे गण-मान्य महानुभावों ने भाग लिया। इस समारोह की अध्यक्षता डॉ. पूनम सूरी, प्रधान, आर्य प्रादेशिक सभा एवं डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री सभा द्वारा की गई।

इस अवसर पर श्री बी.एस.संधु (आई.पी.एस.) पुलिस महानिदेशक, हरियाणा एवं डॉ. बी.एस. घुम्नन, कुलपति, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला को सम्मानित भी किया गया।

अन्त में महात्मा चैतन्यमुनि के द्वारा उपस्थित जनता को आशीर्वाद के बाद समारोह समाप्त हुआ।

**अब होशियारपुर डाक मंडल के डाकघरों में भी बनेंगे आधार कार्ड**:- होशियारपुर डाक मंडल के प्रवर अधीक्षक (डाकघर) श्री एम.एस. राणा जी ने बताया की जनता की सुविधा को ध्यान में रखते हुए डाकघरों में नया आधार कार्ड बनाने तथा उनमें संशोधन के लिए विशेष प्रबंध किये गए हैं। डाकघरों में नया आधार कार्ड बनाने के अतिरिक्त नाम, पता, मोबाइल नंबर, जन्म तिथि तथा अन्य किसी भी तरह के संशोधन की सुविधा प्रदान की गयी है।

श्री राणा जी ने यह भी बताया की होशियारपुर डाक मंडल के ४७ डाकघरों, जिनमें २ मुख्य डाकघर होशियारपुर और दसूहा तथा ४५ अन्य डाकघरों में इस सुविधा के लिए सेंट्रल स्थापित किये गए हैं। नया आधार बनाने की कोई फीस नहीं लगेगी परन्तु किसी भी प्रकार के संशोधन जैसे नाम, पता, मोबाइल नंबर, जन्म तिथि व अन्य किसी भी संशोधन के लिए मामूली ३० रुपये देने होंगे। श्री राणा जी ने लोगों से अपील की है कि डाकघर में आकर इस सुविधा का अधिक से अधिक लाभ उठायें।

होशियारपुर में राज्यस्तरीय अन्तराष्ट्रीय योगदिवस २१-६-१८ को। होशियारपुर-अन्तराष्ट्रीय योगदिवस के अवसर पर २१ जून को राज्यस्तरीय कार्यक्रम का आयोजन जिला प्रशासन की तरफ से यहां पुलिस ग्राउंड में किया जा रहा है। इस समागम की तैयारियों के लिए जिलाधीश श्री विपुल उज्ज्वल ने संबंधित विभागों के अधिकारियों के साथ बैठक की। जिलाधीश ने कहा कि २१ जून को प्रातः ५:३० बजे कार्यक्रम का आरम्भ होगा; जिसमें हजारों की संख्या में योगप्रेमी तथा वालंटियर भाग लेंगे। आपने कहा कि पंजाब सरकार द्वारा प्रारम्भ किये गए इस 'मिशन तंदरुस्त पंजाब' के माध्यम से युवाओं के शरीर को स्वस्थ बनाने के लिए योग अपनाने का संदेश मिलेगा।



ॐ  
आर्यसमाज के इतिहास में पहली बार  
अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन

दिनांक: ६, ७ व ८ जुलाई, २०१८

स्थान: गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार

( विद्यालय विभाग के प्रांगण में )



विश्व की समस्त आर्यसमाजों के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन का आयोजन ६ से ८ जुलाई, २०१८ को गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार, उत्तराखण्ड के प्रांगण में किया जा रहा है। आर्यसमाज के इतिहास में यह पहला अवसर है जब समस्त गुरुकुलों का अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन हो रहा है। आप सभी से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक संख्या में हरिद्वार पहुँचकर महासम्मेलन में शामिल हों तथा ऐतिहासिक आयोजन के साक्षी बनें।

आयोजक:

## सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

“महर्षि दयानन्द भवन” ३/५ आसफ अली रोड, नई दिल्ली-११०००२

दूरभाष:- ०११-२३२७४७७१, २३२६०९८५,

ई-मेल: sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in



**स्मारक-पुण्य-पृष्ठ खण्ड**

**विश्वज्योति**  
**पंजाब में रचित राम-साहित्य**  
**विंशोपांक**

के  
दूसरे भाग  
में

वेदादि धार्मिक ग्रन्थों से स्वाध्याय, मनन तथा जीवन में अपनाने योग्य सद्वचनों को संगृहीत किया गया है।

इस प्रकार के वचनों को निरन्तर पढ़ने, मनन करने एवं तदनुरूप जीवन को ढालने से पाठक अपने जीवन में शान्ति प्राप्त कर सकते हैं।

# दानी-सज्जनों की नाम-सूची

	पृष्ठ		
डॉ. श्रवण कुमार रिहानी, चण्डीगढ़।	६०	श्री देवव्रत शर्मा, जालन्धर।	७६
Dr. K.K. Sharma, HDSHIARPUR	६१	लाईट आफ सोल ट्रस्ट, जालन्धर।	७७
समस्त परमार परिवार	६२	श्री प्रशांत शर्मा, जालन्धर।	७८
एवं डडवाल परिवार होशियारपुर।		श्री जगदीश चन्द्र सडाना, लुधियाना।	७९
संरक्षक समिति, योग साधन आश्रम, होशियारपुर।	६३	सर्वश्री चरणदास मल्लन चेरिटेबल ट्रस्ट, होशियारपुर।	८०
WG. CDR. LAKSHMINARAYANAN	६४	Er. Harsh Nath, Canada.	८१
S. R. (RTD.), TAMILNADU		Dr. Gopal Krishan Sharma, U.S.A.	८२
कौशल्यावती धर्मार्थ न्यास, नई दिल्ली।	६५	डॉ. एम. एल. शर्मा, यू.एस.ए.	८३
प्रोफैसर श्रीमती ( डॉ. ) कृष्णा सैनी होशियारपुर।	६६	श्रीमती ममता सूरी, जालन्धर।	८४
डॉ. अंजु भण्डारी, पंचकूला।	६७	श्रीमती सरिता वैश, मुम्बई।	८५
डॉ. एस. एल. चावला, जालन्धर।	६८	श्री प्रेम कृष्ण बहल, नई दिल्ली।	८६
प्रोफैसर नरेन्द्र कुमार पाठक जालन्धर।	६९, ७०, ७१, ७२	श्री अरविन्द महाजन, पंचकूला।	८७
श्रीमती मनोरंजना अग्रवाल, नई दिल्ली।	७३	श्रीमती शशि बजाज, इंदौर।	८८
डॉ. गिर्राज किशोर, अलीगढ़।	७४	श्री जे. के. सामा, चण्डीगढ़।	८९
पण्डिता प्रतिभा भारद्वाज वासिष्ठ अलीगढ़।	७५	श्री अशोकलाल भाटिया, नई दिल्ली।	९०
		सुश्री शीला सभ्रवाल, नई दिल्ली।	९१
		श्रीमती अरुणा सूद, होशियारपुर।	९२



श्री प्यारेलाल गुप्ता, पश्चिम मुम्बई।	१३	डॉ. लज्जा देवी मोहन, अम्बाला।	१०८-१०९
SHREYANS INDIA, HOSHIARPUR	१४	श्रीमती प्रेम बिन्दा, होशियारपुर।	११०
डॉ. कश्मीर चन्द आहूजा, जालन्धर।	१५	श्री एम. पी. बीर, दिल्ली।	१११
श्रीमती सुमित्रा देवी बस्सी, लुधियाना।	१६	श्रीमती श्रुति जोशी, होशियारपुर।	११२
श्रीमती राजरानी, लुधियाना।	१७	डॉ. अश्वनी जुनेजा, होशियारपुर।	११३
श्री बी. आर. अग्निहोत्री, दिल्ली।	१८	SMT. SNEH LATA JAIN, HOSHIARPUR.	११४
PKF FINANCE LTD. JALANDHAR	१९	श्री राजीव शर्मा, होशियारपुर।	११५
श्री धनंजय कुमार रैना, नई दिल्ली।	१००	श्री शशि कपूर, गुडगांव।	११६
सर्वश्री रत्नप्रकाश मल्होत्रा, चेन्नई।	१०१	श्री विजय कुमार शर्मा, यू.के.।	११७
श्रीमती निम्मी धीर, नई दिल्ली।	१०२	सर्वश्री भुवालका जनकल्याण न्यास	११८
श्री सी. के. आनन्द, नई दिल्ली।	१०३	कोलकाता।	
श्रीमती सुशील कौशल, दसूहा।	१०४	श्री भागमल महाजन धर्मार्थ न्यास	११९
Dr. Shuk Dev Sharma, Hoshiarpur	१०५	मुम्बई।	
डॉ. हरिमित्र शर्मा, होशियारपुर।	१०६	प्रभुदयाल बुधराम गुप्ता चैरिटेबल	१२०
श्री गौरव, जीरकपुर ( मोहाली )।	१०७	ट्रस्ट ( रजि. ) होशियारपुर।	



पापानां वा शुभानां वा वधार्हाणाम् अथापि वा ।  
कार्यं कारुण्यम् आर्येण न कश्चिन् नापराधिनः ॥

वा.रा.यु. ११३.४५.

अच्छे व्यक्तियों को चाहिए कि वे अपने जीवनकाल में चाहे कोई धर्मात्मा हो या पापी, यहां तक कि मृत्युदण्ड जैसे अपराधी पर भी दया करते रहें, क्योंकि संसार में जन्म लेने वाला ऐसा कोई ही व्यक्ति होता है जिनके द्वारा जाने-अनजाने में कोई अपराध न हुआ हो अर्थात् अपराध चाहे बड़ा हो या छोटा, होता तो अपराध ही है। अतः क्षमा ही सत्यपुरुषों का धर्म है।



हार्दिक शुभ कामनाओं के साथ :

प्रयोजक :

डॉ. श्रवण कुमार रिहानी

कोठी नं. 1617, सैक्टर - 44 बी,

चण्डीगढ़।



अतीतानागता भावा ये च वर्तन्ति साम्प्रतम् ।  
तेन तान् निर्मितान् बुद्ध्वा न संज्ञां हातुमर्हति ॥

महा.आदि पर्व. १.२५१.

संसार में जो कुछ है, जो हो चुका है तथा जो होगा अर्थात् जो कुछ दिखाई दे रहा है। इन सभी का बनाने वाला काल अर्थात् समय ही है। यह सोचकर व्यक्ति को कभी भी दुःखी नहीं होना चाहिए। संसार में सब कुछ उस परमात्मा के अधीन है।



*With best compliments from :*

*Dr. K. K. Sharma*

*38-L, Model Town,  
Hoshiarpur - 146 001*

धर्मादर्थः प्रभवति धर्मात् प्रभवते सुखम्।  
धर्मेण लभते सर्वं धर्मसारमिदं जगत्॥

वा.रा.अरण्य. ९.३०.

यद्यपि सतयुग में धर्म का महत्त्व सर्वाधिक होता है तथापि- कलियुग में भी धर्म एक ऐसी वस्तु है जिससे न केवल धन की प्राप्ति होती है अपितु सर्वविध सुखों की प्राप्ति होती है। अतः ऋषि-मुनियों का कथन है कि कलियुग में भी धर्म ही सब कुछ है।



परम पूज्य पिताश्री



स्व. श्री मेला राम परमार

एवम्

परम पूज्या माताश्री



स्व. श्रीमती सरस्वती देवी परमार

की

सदापर्णी पुण्यस्मृति में सादर भेंट

प्रयोजकवर्ग :-

समस्त परमार परिवार एवं डडवाल परिवार

न्यू कॉलोनी, सामने पुराना ऊना अड्डा, ऊना रोड, होशियारपुर-१४६००१



हृष्यन्ति ऋतुमुखं दृष्ट्वा नवं नवम् इवागतम्।  
ऋतूनां परिवर्तनेन प्राणिनां प्राणसंक्षयः॥

वा.रा.अयो. १०५.२५.

मनुष्य अपने समक्ष प्रतिवर्ष वसन्त आदि प्रसन्नता देने वाली ऋतुओं के आने से खुश होता रहता है, पर वह यह नहीं समझता कि ये ऋतुएं आकर उसको शिक्षा दे रही हैं कि प्रत्येक ऋतु में उसकी आयु एक वर्ष कम हो रही है। वस्तुतः मनुष्य के जीवन में प्रत्येक दिन के बदलने के साथ-साथ उसके जीवन का एक-एक दिन समाप्त होता जाता है।



प्रातःस्मरणीय, भवसागर से तारणहार, भाग्यविधाता, करुणासागर  
सद्गुरुदेव योगीराज

श्री चमन लाल कपूर जी महाराज  
एवं

सद्गुरुमाता श्रीमती राजरानी जी

की पुण्यस्मृति में सादर समर्पित

प्रयोजक :

संरक्षक समिति, योग साधन आश्रम

3-एल, माडल टाऊन, होशियारपुर

यदा न कुरुते पापं सर्वभूतेषु कर्हिचित्।  
कर्मणा मनसा वाचा ब्रह्म सम्पद्यते तदा।

महा. आदि पर्व. ७६.५२.

जब मनुष्य मन, वाणी तथा क्रिया के द्वारा किसी भी प्राणी के प्रति बुरी भावना नहीं रखता अर्थात् किसी के प्रति मनसा वाचा और कर्मणा बुराई नहीं सोचता तब वह ब्रह्मभाव को प्राप्त हो जाता है।



# **PREETHAM**

## **SENIOR CITIZEN'S ENCLAVE**

**POLLACHI, TAMIL NADU -642 002**

**A HOME FOR SENIOR CITIZENS**

*A Calm, Quite & Peaceful place for Comfort, Care  
Homely Veg. Food, Prayers, Satsangs &  
Spiritual Discourse with full Med.  
Facilities close by, etc.*

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

**WG. CDR. LAKSHMINARAYANAN S. R. (RTD.)**

**CONTACT : — Tel.: 98467-99799, 94425-49313**

e-mail :— [vanitha@preetham.org.in](mailto:vanitha@preetham.org.in)

Visit at : [www.preetham.org.in](http://www.preetham.org.in).



विधातृविहितं मार्गं न कश्चिदतिवर्तते ।  
कालमूलमिदं सर्वं भावाभावौ सुखासुखे ॥

महा.आदि पर्व. १.२४७.

विधाता का अकाट्य नियम है कि जो होना है वह होकर ही रहेगा,  
उसको न कोई टाल सकता है और न उसमें परिवर्तन ही कर सकता है ।  
सुख-दुःख सब काल अर्थात् उस परमसत्ता के अधीन हैं ।



हार्दिक शुभ कामनाओं के साथ :

**कौशल्यावती धर्मार्थ न्यास**

68, आर. पी. एस. फ्लैट्स, शेख सराय,

फेस-1, नई दिल्ली-17

विपत्तिष्वव्यथो दक्षः नित्यमुत्थानवान् नरः ।

अप्रमत्तो विनीतात्मा नित्यं भद्राणि पश्यति ॥

महा. सभा. प. ५४.८.

जो व्यक्ति विपत्तियों के आने पर दुःखी नहीं होता और सदा अपने काम में लगा रहता है, कभी भी किसी भी काम में आलस्य नहीं करता तथा हमेशा विनम्र भाव से व्यवहार करता है, उसका निश्चित कल्याण होता है ।



हार्दिक शुभ कामनाओं के साथ :

प्रयोजिका:

**प्रोफ़ेसर श्रीमती ( डॉ. ) कृष्णा सैनी**

वी.वी.बी.आई.एस.एंड आई.एस. ( पी.यू. )

साधु आश्रम, होशियारपुर ।



सुखं हि जन्तुः यदि वापि दुःखं  
दैवाधीनं विद्यते नात्मशक्त्या ।  
तस्माद् दिष्टं बलवन्मन्यमानो  
न संज्वरेन्नापि हृष्येत कथञ्चित् ॥

महा.आदि पर्व. ८०.८.

संसार में प्राणिमात्र अपने ही प्रारब्ध से सुख और दुःख, अच्छाई तथा बुराई यश तथा अपयश हानि-लाभ प्राप्त करता है, यह उसके पूर्व-जन्म कृत कर्म का ही फल होता है। अतः प्रारब्ध को बलवान् मानते हुए प्राणी को सुख में प्रसन्न तथा दुःख में दुःखी नहीं होना चाहिए।

अपने पूज्य पापाश्री



**स्व. श्री ओ. पी. लाल**

[रिटायर्ड डिप्टी रजिस्ट्रार, पंजाब यूनि. चंडीगढ़ एवं भूतपूर्व कार्यकारिणी  
सदस्य, वी.वी.आर. आई., साधु आश्रम, होशियारपुर]

की

पुण्य स्मृति में  
सादर समर्पित

प्रयोजिका :

**डॉ. अंजु भण्डारी ( पुत्री )**

**772, सैक्टर 4, पंचकूला ( हरियाणा )।**

कालः सुप्तेषु जागर्ति कालो हि दुरतिक्रमः ।

कालः सर्वेषु भूतेषु चरत्यविधृतः समः ।

महा.आदि पर्व. १.२५०.

संसार में समय के अनुसार सब कुछ होता रहता है। मनुष्य भले ही किसी चीज़ को भूल जाय अर्थात् सो जाय। पर काल अर्थात् समय सर्वदा सजग रहता है वह अपने समय पर सब कुछ करता रहता है। समय के लिए अपना-पराया कोई नहीं, वह तो सबको समानभाव से समझता हुआ काम करता है।



अपने पूज्य पिता

**स्व. श्री दयालचन्द जी चावला**

तथा

पूज्या माता

**स्व. श्रीमती इन्द्रा जी चावला**



की पुण्यस्मृति में सादर समर्पित

प्रयोजक :

**डॉ. एस. एल. चावला**

चावला चिल्ड्रन हास्पिटल, शहीद ऊधमसिंह नगर, जालन्धर शहर



विश्वसेदथ च नैव विश्वसेत्,  
कोऽपि नास्ति विदुषे ततो भयम्।  
स्वं प्रमाणयति कृत्यदर्शनः  
संभवेन्न सुजनेऽन्यनेयता ॥

सीताचरितम्, ३.७.

विद्वान् पुरुष जीवन में अपना कार्य सचाई के साथ करते रहते हैं। उनकी कार्यप्रणाली पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता कि जनता उनके विषय में क्या सोचती है। इस भय से वे सर्वदा दूर रहते हैं; क्योंकि वे अपनी आत्मा को ही प्रमाण मानते हैं, न कि दूसरे की।

अपनी पूज्या माता

**स्व. श्रीमती सीता देवी पाठक**

( धर्मपत्नी स्व. श्री देवदत्त पाठक )

( जिनका दुःखद निधन दिनांक 5-1-2012 को हुआ )

गांव एवं डाकघर बजवाड़ा, जिला होशियारपुर

की

पुण्य स्मृति

में

सादर समर्पित

प्रयोजक वर्गः

**प्रोफैसर नरेन्द्र कुमार पाठक ( पुत्र )**

एवं

**श्री पुनीत पाठक ( पौत्र )**

बी-31, न्यू गुरु तेगबहादुर नगर, जालन्धर

शुभं वा यदि वा पापं यो हि वाक्यमुदीरितम्।  
सत्येन परिगृह्णाति स वीरः पुरुषोत्तमः॥

वा.रा. किष्किं. ३०.७३.

जो व्यक्ति अपने जीवन में कही हुई अच्छी-बुरी, कठोर, सुखदायी अथवा दुःखदायी बात का पालन करता है, वह वीर तथा श्रेष्ठ व्यक्ति माना जाता है अर्थात् वीर पुरुष अपनी कही हुई बात पर हिमालय की तरह स्थिर रहता है।

अपने पूज्य पिता

**स्व. श्री देवदत्त पाठक**

( जिनका दुःखद निधन दिनांक 9-3-1997 को हुआ )

गांव एवं डाकघर बजवाड़ा, जिला होशियारपुर

की

पुण्य स्मृति

में

सादर समर्पित

प्रयोजक वर्गः

**प्रोफ़ेसर नरेन्द्र कुमार पाठक ( पुत्र )**

एवं

**श्री पुनीत पाठक ( पौत्र )**

बी-31, न्यू गुरु तेगबहादुर नगर, जालन्धर



सहितो मन्त्रयित्वा यः कर्मरम्भान् प्रवर्तते ।  
दैवे च कुरुते यत्नं तमाहुः पुरुषोत्तमम् ॥

बा.रा.युः ६.८.

जो व्यक्ति (स्वयं ज्ञानवान् होने पर भी) अपने मित्रों, भाई, बन्धुओं से  
विचारपूर्वक परमपिता परमात्मा पर पूर्णविश्वास करता हुआ और स्मरण

अपने पूज्य दादा जी और पूज्या दादी जी  
**स्व. श्री संसार चन्द पाठक**

एवं

**स्व. श्रीमती मनसा देवी पाठक**

की

पुण्य स्मृति

में

सादर समर्पित

प्रयोजक वर्गः

**प्रोफैसर नरेन्द्र कुमार पाठक (पोता)**

एवं

**श्री पुनीत पाठक (प्रपौत्र)**

बी-31, न्यू गुरु तेगबहादुर नगर, जालन्धर

कस्य दैवेन सौमित्रे योद्धुम् उत्सहते पुमान्।  
यस्य तु ग्रहणं किञ्चित् कर्मणोऽन्यत्र न दृश्यते ॥

वा.रा.अयो. २२.२१.

श्रीराम जी के वनवास की घटना से आहत भरत लक्ष्मण से कहते हैं कि- इस संसार में भाग्य से बलवान् कोई नहीं। कौन ऐसा बलवान् है जो भाग्य के साथ लड़ सकता है (और लड़ाई में विजय प्राप्त कर सकता है)। व्यक्ति के जीवन में अकस्मात् घटी घटनाओं तथा सुख-दुःख आदि कर्मों के मिलने से ही यह स्पष्ट है कि भाग्य बहुत प्रबल होता है।

अपनी प्रिया धर्मपत्नी

**स्व. प्रोफ़ेसर ( श्रीमती ) दिनेश पाठक**

( जिनका दुःखद निधन दिनांक 13. 5. 2009 को हुआ )

गांव एवं डाकघर बजबाड़ा,

जिला होशियारपुर

की

पुण्य स्मृति

में

समर्पित

प्रयोजक वर्गः

**प्रोफ़ेसर नरेन्द्र कुमार पाठक ( पति )**

एवं

**श्री पुनीत पाठक ( सुपुत्र )**

बी-31, न्यू गुरु तेगबहादुर नगर, जालन्धर



न कालः कालमत्येति न कालः परिहीयते ।

स्वभावं च समासाद्य न कश्चिदतिवर्तते ।।

रामा.किष्किंधाकाण्ड-२५.६.

काल (समय) भी अपनी व्यवस्था का उल्लंघन नहीं कर सकता । काल (समय) कभी नष्ट भी नहीं होता । अपने प्रारब्ध को प्राप्त कर कोई भी प्राणी काल (समय) का अतिक्रमण (लांघ) नहीं कर सकता ।



पूज्य पिता

**स्व. डॉ. दीवानचन्द जी अग्रवाल**

[लाहौर व नई दिल्ली]

तथा

पूज्या माता

**स्व. श्रीमती देवकी देवी जी अग्रवाल**

तथा

**स्व. डॉ. मदनलाल जी अग्रवाल**

[अमृतसर व नई दिल्ली]

की पुण्यस्मृति में

प्रयोजकवर्ग :

मनोरंजना अग्रवाल [ धर्मपत्नी ], शशि अग्रवाल,

डॉ. रवि अग्रवाल, प्रदीप अग्रवाल [ पुत्र ]

ए-१/१५० सफदरजंग एनक्लेव, नई दिल्ली ।

ओ३म्

बुद्धि-जागरण

ओ३म्

उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनाम् । धिया विप्रो अजायत ॥ सामवेद १४३ ॥

सारगान

पर्वत सी उत्तम ऊँचाई । सरिता संगम सी गहराई ॥

बुद्धि दक्षता क्षमता लाओ । विप्र बनो मेधा चमकाओ ॥

ज्ञान चेतना को फैलाओ । जग में सुखद प्रकाश बढ़ाओ ॥ “देवातिथि”



राष्ट्र-रत्न सम्मान विभूषित प्रतिभासम्पन्ना शिक्षाविद्  
उच्च शिक्षण संस्थान संस्थापिका एवं प्राचार्या

**स्व. डॉ. ( श्रीमती ) कृष्णा गुप्ता**

उदय :- ०१-१०-१९५०

अस्त :- २४-११-२०१४

### श्रीमती कृष्णा गुप्ता स्मृति भाषण प्रतियोगिता

प्रतिवर्ष पुण्यतिथि पर महानगरीय उच्च शिक्षा संस्थाओं की B.Ed. अध्ययनरत छात्राओं में आयोजित की जाती है । बड़ी संख्या में सहभागी छात्रों में उत्साह का सृजन होता है । प्रथम-द्वितीय-तृतीय को विशिष्ट पारितोषिक तथा कतिपय प्रतियोगियों को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किये जाते हैं । शेष सभी को सुन्दर सहभागिता प्रमाणपत्र प्रदान कर शैक्षणिक जागरण किया जाता है ।

सस्त्रेह श्रद्धांजलि

कविता रानी, डॉ. भावना किशोर, दीपिका किशोर

एवं परिधि किशोर ( आत्मजा पुत्रियाँ )

डॉ. गिराज किशोर ( पति ) पूर्व डीन, शिक्षासंकाय, आगरा विश्वविद्यालय

‘जिज्ञासा’ बी-२४ विक्रम कालोनी, रामघाट मार्ग अलीगढ़ ( उ.प्र. )

चलभाष-३८९७१-७९७४५



### गुरुमन्त्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ यजुर्वेद ३६।

ओ३म् प्राणप्रिय दुःख विमोचक, प्रभु सुख स्वरूप मुख नाम ओ३म्।

ओ३म् सवित वरणीय जनक वह, धर देव शुद्ध मन भर्ग ओ३म्॥

ओ३म् हृदय गुण धारण करके, हम ध्यान लगायै ओ३म् ओ३म्।

ओ३म् हमें सदबुद्धि प्रेरणा, दें शुभ कर्मों की ओर ओ३म्॥

“देवातिथि”

पितृ आर्यरत्न देव नारायण भारद्वाज ( मध्य में )  
पितामही स्व. मुन्नी देवी प्रभुदयाल ( बायें से प्रथम )  
पितृ अग्रजा बुआ स्व. श्रीमती विद्यावती जी



### शान्तिकामना

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षः शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।  
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिः ब्रह्म शान्तिः सर्वः शान्तिरेव शान्तिः। सा मा शान्तिरेधि॥  
यजु. ३६.१७.

शान्ति करो प्रभु जन-गण-मन में  
रवि-व्योम-भूमि के नन्दन में। जल में थल में और पवन में  
वृक्ष-वनस्पति ओषधि वन में। नगर ग्राम हर कुटी भवन में।  
शान्ति करो प्रभु जन-गण-मन में ॥१॥  
गुरुजन में, शिक्षा-साधन में। शासक में, समरांगन-क्षण में।  
वणिक श्रमिक, उत्पादन-धन में। कृषक-प्रजा वैज्ञानिक गण में।  
शान्ति करो प्रभु जन-गण-मन में ॥२॥  
दया-प्रीति-व्यवहार चलन में। सुभग शान्ति हो न्याय सदन में।  
जगत-जीव-प्रभु अभिनन्दन में। शान्ति करो प्रभु अणु कण कण में।  
शान्ति करो प्रभु जन-गण-मन में ॥३॥ 'देवातिथि'

### श्रद्धानवत

पण्डिता प्रतिभा भारद्वाज वासिष्ठ

पूर्व धर्म शिक्षिका डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, साहिबाबाद।

पूर्व सदस्य वेद प्रचार विभाग दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली।

सम्प्रति शिक्षिका पूर्व माध्यमिक बेसिक शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश।

‘वरेण्यम्’ एम.आई.जी. ४५ ( Plot ) अवन्तिका ( प्रथम ) रामघाट मार्ग, अलीगढ़ २०२००१ ( उ.प्र. )

भवन्ति चेतांसि महात्मनां सदा  
परार्थसम्पादनसौख्यभाञ्जि यत्

सीताचरितम्. २.३७.

उदारचेता महान् आत्माओं का चित्त दूसरों की भलाई के कार्य करने में  
ही सुख की अनुभूति करता है। दूसरे के कल्याण के सम्पादन में वे अपने सुखों  
का त्याग करने में कष्ट का अनुभव नहीं करते।



अपनी प्रिय-पत्नी

स्व. श्रीमती सीता शर्मा

तथा

स्व. प्रो. राजेन्द्र जोशी

एवं प्रिय पुत्र

स्व. राहुल देव शर्मा

की

पुण्यस्मृति

में

सादर समर्पित

प्रयोजकः

श्री देवव्रत शर्मा, एडवोकेट

६२, राजेन्द्र नगर, सिविल लाईन्ज, जालन्धर शहर



न खलु वशिनां त्यक्ते वस्तुन्युदेति पुनः रतिः ।

सीताचरितम्, ८.७०.

जो संसार से विरक्त हो जाते हैं ऐसे विरक्त पुरुषों की पुनः सांसारिक वस्तुओं के प्रति आसक्ति नहीं हुआ करती ।



स्व. श्रीमती शकुन्तला देवी

एवं

स्व. रणजीत पाल

की

पुण्यस्मृति

में

सादर समर्पित

प्रयोजकः

लाईट आफ सोल ट्रस्ट

पी. ३७/२, पंडित मूलराज मार्ग, लाडोवाली रोड़,

जालन्धर शहर

अर्थिनः कार्यनिर्वृत्तिमकर्तुरपि यश्चरेत्।  
तस्य स्यात् सफलं जन्म किं पुनः पूर्वकारिणः ॥

वा.रा.किष्किं. ४३.२१.

भले आदमी का कर्तव्य है कि चाहे किसी ने पहले उसकी कोई सहायता नहीं भी की हो तथापि वह उसकी सहायता अवश्य करे, ऐसा उत्कृष्ट कार्य करने से उसका जन्म सार्थक हो जाता है, और यदि किसी ने उसका पहले कोई काम किया हो और दैवयोग से उस व्यक्ति काम करना पड़े तो उस कार्य को तो बिना सोचे-विचारे ही करना चाहिए। यही अच्छे व्यक्ति का कर्तव्य है।



दोआबा के गान्धी परमश्रद्धेय

**स्व. पं. मूलराज शर्मा**

(स्वतन्त्रता सेनानी)

एवं

**स्व. प्रो. शादीराम जी जोशी**

की

पुण्यस्मृति

में

सादर समर्पित

प्रयोजकः

**श्री प्रशांत शर्मा**

६२, राजेन्द्र नगर, सिविल लाईन्ज, जालन्धर शहर



सामर्थ्ययोगं संप्रेक्ष्य देशकालौ व्ययागमौ ।  
विमृश्य सम्यक् च धिया कुर्वन् प्राज्ञो न सीदति ॥

महा. सभा. प. १२.२३.

वह व्यक्ति कभी भी दुःखी नहीं होता जो व्यक्ति भली प्रकार सोच-विचार कर अपनी शक्ति, देशकाल तथा आय और व्यय को सामने रखकर नित्यप्रति व्यवहार करता है । अर्थात् सदा सोच-विचार कर कार्य करने वाला व्यक्ति संसार में कभी दुःखी नहीं रहता ।



अपने पूज्य पिता

**स्व. श्री शिवलाल सडाना**

[ निधन-२५-७-१९९६ ]

की

पुण्यस्मृति

में

सादर समर्पित

प्रयोजक :

**श्री जगदीश चन्द्र सडाना**

यूनाईटेड इन्जिनियर्स [रजिस्टर्ड]

६, मन्दिर मार्किट, माता रानी रोड, लुधियाना ।

क्व धनानि क्व मित्राणि क्व मे विषय-दस्यवः ।  
क्व शास्त्रं क्व च विज्ञानं यदा मे गलिता स्पृहा ॥

अष्टावक्रगीता. १४.२.

संसार में रहते जो व्यक्ति नृस्पृह होकर रहता है, उसके लिए क्या धन, क्या मित्र, क्या शत्रु, क्या इन्द्रियों के विषय, क्या नाना प्रकार के शास्त्र तथा आत्मचिन्तन आदि कार्य सब कुछ एक समान हैं। क्योंकि किसी वस्तु की इच्छा ही व्यक्ति को दुःखी तथा चिन्ताकुल करती है।



हार्दिक शुभ कामनाओं सहित :

प्रयोजकः

**सर्वश्री चरणदास मल्लन चेरिटेबल ट्रस्ट**

C/o. श्री पवन प्रकाश मल्लन

३१-आर माडल टाऊन, होशियारपुर।



यथा मृतः तथा जीवन् यथा सति तथासति ।  
यस्यैष बुद्धिलाभः स्यात् परितप्येत केन सः ॥

वा.रा.अयो. १०६.१४.

ज्ञानी पुरुष की किसी वस्तु पर ही नहीं अपितु अपने शरीर पर भी किसी प्रकार की आसक्ति नहीं हुआ करती। अतः उसको किसी वस्तु की प्राप्ति से न कोई हर्ष होता है और न किसी प्रिय वस्तु के नष्ट होने से दुःख होता है, यहां तक कि शरीर के नष्ट होने की संभावना से भी दुःख नहीं होता है।



*With best compliments from:*

*Er. Harsh Nath*

*1929 Montclair Av, Orleans*

*Ontario, K1W 1H9, CANADA*

न निन्दति न च स्तौति न हृष्यति न कुप्यति ।  
न ददाति न गृह्णाति मुक्तः सर्वत्र नीरसः ॥

अष्टावक्रगीता. १७.१३.

संसार में रहते हुए भी संयमी व्यक्ति न किसी की निन्दा ही करते हैं और न स्तुति करते हैं, न किसी पर प्रसन्न होते हैं, न किसी पर क्रोध ही करते हैं, न किसी को किसी कामना से देते हैं न किसी से कुछ लेते हैं, अपितु विरक्त भाव से रहते हुए सभी प्रकार से मुक्त रहते हैं ।



*With best compliments from :*

**Dr. Gopal Krishan Sharma**

621, Tailwater Bend  
Lexington South Carolina  
29072, USA



व्यसने वार्थकृच्छ्रे वा भये वा जीवितान्तगे ।  
विमृशंश्च ( विमृशन्-च ) स्वया बुद्ध्या धृतिमान् नावसीदाति ॥

वा.रा. किष्किं. ७.९.

व्यक्ति को सर्वदा धैर्य वाला होना चाहिए । अतः जो व्यक्ति भयंकर विपत्ति आने पर, धनसंकट आने पर यहां तक कि प्राणों के संकट में पड़ने पर एवम् अन्य किसी भी प्रकार की भयंकर स्थिति के पैदा होने पर भी धैर्यपूर्वक कार्य करता हुआ उपस्थित संकट को दूर करने के उपाय सोचता हुआ कार्य करता है । वह कभी भी दुःखी नहीं होता और अन्त में कार्य में सफलता प्राप्त कर लेता है ।



अपने पूजनीय पिता

**स्व. पंडित बाबूराम जी शर्मा**

तथा

पूजनीया माता

**स्व. श्रीमती रामप्यारी जी शर्मा**

की

पुण्यस्मृति में

प्रयोजक :

**डॉ. एम. एल. शर्मा**

1942, 46 एविन्यू, सैन फ्रान्सिस्को,

CA- 94116, यू. एस. ए.

कवीरा जब हम पैदा हुए जग हंसा हम रोए।  
ऐसी करनी कर चलें हम हंसे जग रोए॥

हमारे भल्ला परिवार की सबसे प्रिया, आदरणीय,

अनुकरणीय, एक महान् व्यक्तित्व

**स्व. श्रीमती प्रतिमा ठक्कर**

( सुपुत्री श्री हरकिशन लाल भल्ला

व पत्नी श्री एस.एन. ठक्कर )

जन्म-१०-९-१९३७

निर्वाण ११-४-२०१८

को हुआ।

की

पुण्यस्मृति

में

प्रयोजिका:

**ममता सूरी**

१५०, मास्टर तारा सिंह नगर,

जालन्धर शहर।



नैवार्थेन च कामेन विक्रमेण न चाज्ञया ।  
शक्या दैवगतिः लोके निवर्तयितुमक्षमा ॥

वा.रा. युद्ध. ७.७.

अपने पूर्व जन्म में किए गए कर्मों के फलरूप भाग्य को व्यक्ति वर्तमान जन्म में न धन के बल पर न विशेष कामना और न पराक्रम तथा अन्य किसी भी प्रकार से बदल सकता है। तात्पर्य है कि पूर्वजन्म कृत कर्म के अनुरूप वर्तमान जन्म में व्यक्ति सुख-दुःख प्राप्त करता है।



मानवता के गुणों से परिपूर्ण सार्वजनिक सेवा-कार्यों और धार्मिक अनुष्ठानों में बड़ी तत्परता दिखाने वाली दिव्य आत्मा, जिनके निधन से समाज को एक महान् व्यक्ति से हुई कमी कभी पूरी न हो सकेगी।

**स्व. विंग कमाण्डर विनय कुमार वैश**

( निधन 12 अप्रैल, 1999 )

[ जो महान् आत्मा अभी भी हमारा पथ-प्रदर्शन कर रही है ]

की पावन स्मृति में सादर समर्पित

प्रयोजिका :

श्रीमती सरिता वैश ( धर्मपत्नी ), श्रीमती गुञ्जन गुप्ता ( पुत्री )

श्रीमती नूपुर फौजदार ( पुत्री )

द्वारा कैप्टन सुधीर कुमार, 481, अमरनाथ टावर,

वरसोवा अंधेरी ( पश्चिम ), मुम्बई ।



ऐश्वर्ये वा सुविस्तीर्णे व्यसने वा सुदारुणे ।  
रज्ज्वेव पुरुषं बद्ध्वा कृतान्तः परिकर्षति ॥

वा.रा.अयो. ३७.३.

संसार में चाहे कोई सर्वशक्तिमान् ऐश्वर्यसम्पन्न प्राणी हो या नारकीय जीवन व्यतीत करने वाला व्यक्ति हो, मृत्यु के लिए वे दोनों एकसमान हैं। समय आने पर वह उनको रस्सी से बन्धे हुए व्यक्ति की तरह खींचकर संसार से ले जाता है। अर्थात् मृत्यु के लिए सब समान हैं। यही एक स्थिर वस्तु है, जिसमें परिवर्तन तथा परिवर्धन नहीं दिखाई देता।



स्व. श्री राजकृष्ण बहल

तथा

स्व. श्री मुनीश बहल

[ जिनका निधन 13-6-1987 को हुआ ]

की

पावनस्मृति

में

प्रयोजक :

प्रेम कृष्ण बहल

ई-92, ग्रेटर कैलाश-I, नई दिल्ली



अङ्गप्रत्यङ्गजः पुत्रो हृदयाच्चाभिजायते ।  
तस्मात् प्रियतरो मातुः प्रिया एव तु बान्धवाः ॥

वा.रा.अयो. ७४.१४.

लोक में यद्यपि माता के लिए उसके अपने भाई-बहन (तथा अन्य रिश्तेदार भी) प्रिय होते हैं पर क्योंकि पुत्र उसके प्रत्येक अंग से पालित-पोषित होता है। अतः पुत्र उसको सबसे अधिक प्रिय होता है। पुत्र से तात्पर्य पुत्र तथा पुत्री दोनों से है।



अपने पूज्य पिता

**स्व. श्री प्रीतमचन्द जी महाजन**

( निधन 15-12-2010 )

तथा

अपनी पूज्या माता

**स्व. श्रीमती कैलाश महाजन**

( जिनका निधन दिनांक 6-3-2003 को हुआ )

की

पुण्यस्मृति

में

सादर समर्पित

प्रयोजक :

**श्री अरविन्द महाजन**

C/O UNIROYAL INDUSTRIES LTD.  
365, PHASE-II, INDUSTRIAL ESTATE, PANCHKULA-134113.

चिन्तया जायते दुःखं नान्यथेहेति निश्चयी ।

यो हीनः सुखी शान्तः सर्वत्र गलितस्पृहः ॥

अष्टावक्रगीता, ११.५.

संसार में चिन्ता ही दुःख का कारण है और किसी भी वस्तु का अभाव चिन्ता का कारण है । यदि चिन्ता नहीं तो दुःख भी नहीं । चिन्ता रहित व्यक्ति सर्वदा सुखी तथा शान्त रहता है क्योंकि ऐसी स्थिति में उसका किसी वस्तु के प्रति लगाव भी नहीं होता । अतः निरीह व्यक्ति संसार में सर्वदा सुखी रहता है ।



हमारे प्रिय

**स्व. विजय बजाज**

[ 17.2.1955 – 30.12.2011 ]

की पुण्यस्मृति में

परिवारजन

**शशि बजाज, ओमप्रकाश बजाज, कृष्णा बजाज**

विजय विला, 166-कालिंदी कुंज, पिपलिहाना, रिंग रोड,

पो. बा. 595, इंदौर-452001 (म. प्र.)

फोन: 0731-2593443 मोबाईल : 98264-96975



भवन्ति कारुण्यवतां वपुर्भृताम्  
मनांसि संवादशुभानि सर्वदा ।

सीताचरितम्, २.४७.

करुणा से कोमल चित्त वाले व्यक्तियों अर्थात् दयालुचित्त वाले व्यक्तियों का मन हमेशा दूसरे के दुःख से दुःखी तथा सुख से सुख का अनुभव करता है । जिस कारण वे सर्वदा दूसरों को सुखी ही देखना चाहते हैं ।



## स्व. श्री चिरञ्जीव लाल जी सामा

जो इस संस्थान के श्रद्धालु एवं पोषक रहे और हमेशा सत्य तथा आर्यमार्ग पर चलते रहे, उनकी इच्छा रही कि उनके बच्चे आपस में प्रेम से रहें और सत्यमार्ग पर चलें, वैदिक रीतियों को अपनाएँ और अन्धविश्वास से दूर रहें

जिनका निधन 24-8-1972 (जिस दिन वह बेहद खुश थे क्योंकि उन्होंने एक आर्य यज्ञशाला बनवाने का पूरा खर्चा उठाने की योजना आर्यसमाज सेक्टर १६ चण्डीगढ़ में की जो उनके बेटे और धर्मपत्नी श्रीमती धरमवती ने पूरी तरह यज्ञशाला बनवाई तुरन्त उनके जाने के बाद । भगवान् की लीला देखो वह कितने खुश होकर गये । कोई कष्ट नहीं भोगा, अच्छे कर्मों का फल) को हृदयगति रुक जाने के कारण चण्डीगढ़ में हुआ ।

की

पावन स्मृति

में

उनके सभी घनिष्ठ प्रेमियों, बन्धु-बान्धवों एवं विनीत बच्चों  
की ओर से

श्री जे. के. सामा (पुत्र), चण्डीगढ़ ।  
प्रयोजक : सर्वश्री सी. एल. सामा चैरिटेबल ट्रस्ट, चण्डीगढ़ ।

अहोरात्राणि गच्छन्ति सर्वेषां प्राणिनामिह ।

आयूषि क्षपयन्त्याशु ग्रीष्मे जलमिवांशवः ॥

वा.रा. अयो. १०५.२०.

प्रकृति का नियम है कि जो भी प्राणी संसार में जन्म लेता है कि उसकी आयु जैसे-जैसे दिन और रात बीतती है उसी प्रकार व्यतीत होती जाती है । जैसे गर्मियों में सूर्य की किरणें जल को सुखाकर समाप्त कर देती हैं, उसी प्रकार मनुष्य की आयु समाप्त होती जाती है ।



विश्वेश्वरानन्द संस्थान के भूतपूर्व सदस्य तथा हितैषी

अपने पूज्य पिता

**स्व. श्री हरबंसलाल जी भाटिया**

( जिनका दुःखद निधन दिनांक 3-3-2001 को हुआ )

एवं

पूज्या माता

**स्व. श्रीमती लज्या भाटिया**

( जिनका दुःखद निधन दिनांक 24-3-2006 को हुआ )

की

पुण्यस्मृति

में

सादर समर्पित

प्रयोजक :

**श्री अशोकलाल भाटिया, 24, राजेन्द्र पार्क, नई दिल्ली ।**



दैवः पुरुषकारेण यः समर्थः प्रतिबाधितुम् ।  
न दैवेन विपन्-अर्थः पुरुषः सोऽवसीदति ॥

वा.रा. अयो. २३.१०.

यह ठीक है कि व्यक्ति का भाग्य ही उसके जीवन के साथ चलता है किन्तु जो व्यक्ति पुरुषार्थ करता है वह अपने पुरुषार्थ से भाग्य के द्वारा आने वाली बाधाओं को दूर करता हुआ आगे बढ़ता है, मार्ग में आनेवाली बाधाओं से वह दुःखी नहीं होता, और सफलता प्राप्त कर लेता है ।



अपने पूज्य दादा और अपने पूज्य पड़दादा  
**स्व. रायबहादुर मूलराज जी**

की  
पुण्यस्मृति  
में  
सादर समर्पित

प्रयोजक वर्ग :

**सुश्री शीला सभ्रवाल, दीपक सभ्रवाल एवं सुरेखा सभ्रवाल**

बी-5, पम्पोश इन्कलेव, ग्रेटर कैलाश,  
नई दिल्ली-48

न ह्येकः साधकः हेतुः स्वल्पस्यापीह कर्मणा ।  
यो ह्यर्थं बहुधा वेद स समर्थोऽर्थसाधने ॥

वा.रा.यु. ४१.६.

किसी भी कार्य की सफलता के लिए किसी कारण की आवश्यकता होती है। वह भी एक नहीं अपितु किसी छोटे से छोटे काम के लिए भी अनेक कारणों की आवश्यकता होती है। अतः जो व्यक्ति एक ही काम को अनेक प्रकार से करता है वह अपने काम में निश्चित ही सफल हो जाता है।



समस्तजन की मंगलकामना-हेतु

प्रयोजिका :

**श्रीमती अरुणा सूद**

बहादुरपुर, होशियारपुर।



गुरोर्वै वचनं पुण्यं स्वर्गमायुष्करं नृणाम्।  
गुरुप्रसादात् त्रैलोक्यमन्वशासत् शतक्रतुः॥

महाभा. आदिपर्व. ८५.३१.

मनुष्य के लिए अपने गुरु अर्थात् माता-पिता इत्यादि पूज्य गुरुओं की आज्ञा का पालन करना पुण्य, स्वर्ग तथा दीर्घायु प्रदान करने वाला होता है। गुरु की कृपा से इन्द्र ने तीनों लोकों का साम्राज्य प्राप्त किया था- कहा भी है- गुरु की आज्ञा का पालन व्यक्ति बिना संदेह तुरन्त करे।



अपनी पूज्या माताश्री

**स्व. श्रीमती तारावती जी अग्रवाल**

[ पत्नी - स्व. श्री रामकरण जी ]

[ जिनका निधन 15.11.1993 को हुआ ]

तथा

**स्व. श्रीमती पुष्पावती जी**

[ पत्नी - लाला प्यारेलाल गुप्ता ]

[ जन्म : 16-9-1933, निधन : 9-5-1972 ]

की

पुण्यस्मृति

में

प्रयोजक :

**श्री प्यारेलाल गुप्ता,**

A/903, गार्डन एस्टेट, लक्ष्मी नगर, गोरेगांव, पश्चिम मुम्बई।

अद्रोहः सर्वभूतेषु कर्मणा मनसा गिरा।  
अनुग्रहश्च दानं च सतां धर्मः सनातनः।।

महा. वनपर्व. २९७.३५.

संसार में मन वचन और कर्म से प्राणीमात्र के साथ द्रोह न करना, सभी पर दयाभाव रखना और यथाशक्ति सर्वदा दान देते रहना यही सज्जन पुरुषों का सनातन व्रत है अर्थात् सज्जनों का यही नित्यकर्म है।



IN EVERLASTING MEMORY OF  
**LATE SMT. KAMLA JAIN**

(Expired on 7th July 2009)

ON HER 9<sup>TH</sup> DEATH ANNIVERSARY

**DEEPLY REMEMBERED BY :**

**RAVI KUMAR JAIN (Son)**

**NEENA JAIN (Daughter in Law)**

**VARUN JAIN (Grand Son)**

**SHEENA JAIN (Grand Daughter in Law)**

**AMIT JAIN (Grand Son in Law)**

**PRERNA JAIN (Grand Daughter)**

**Great Grand Children**

**ANANYA, VIBHAV, NAVYA, RIDIT**

**PHARMA CRAFTS (INDIA)**

**P. W. D. Rest House Road, Gagret - 177201, Distt. Una (H. P.)**

**SURGINEEDS**

**N. A. C. Buildings, Gagret-177201, Distt. Una (H. P.)**

**SHREYANS INDIA**

**"Pragati Bhawan", Near S. D. City Public School,**

**Chintpurni Road, Hoshiarpur - 146001 (Pb.)**

**Cell No.: 98160-41475, 98886-91475**



दानं यज्ञाः सतां पूजा वेदधारणमार्जवम्।  
एष धर्मः परो राजन् बलवान् प्रेत्य चेह च॥

महा. वनपर्व, ३३.४६.

संसार में ही नहीं अपितु इहलोक और परलोक में दान, यज्ञ, सन्तों का आदर, वेदों का पढ़ना-पढ़ाना तथा सबके साथ प्रेम व्यवहार अर्थात् सरलता का व्यवहार करना। ये सभी उत्तम फल देने वाले हैं। अतः ऐसे कार्य ही प्रबल धर्म कहे गए हैं।



विश्वेश्वरानन्द संस्थान के भूतपूर्व सदस्य तथा हितैषी

अपने पूज्य पिताश्री

**स्व. श्री कर्मचन्द जी आहूजा**

(जिनका निधन १८-५-२००१ को हुआ)

एवम्

अपनी पूज्या माताश्री

**स्व. श्रीमती बुद्धवन्ती जी आहूजा**

(जिनका निधन १४-१-१९९७ को हुआ) की

पुण्यस्मृति

में

सादर समर्पित।



प्रयोजक :

**डॉ. कश्मीर चन्द आहूजा एवं श्रीमती निर्मल आहूजा**

४५-ए, नव निर्माण, जनता कालोनी, जालन्धर।

सुकृते दुष्कृते चापि यत्र सज्जति यो नरः।  
ध्रुवं रतिः भवेत् तत्र तस्माद् दोषं न रोचयेत्॥

महाभा. आदिपर्व. ७९.१४.

संसार में व्यक्ति अच्छे या बुरे जिस प्रकार के कर्म करने लगता है, वह उसी में आसक्त हो जाता है अर्थात् उसका उसी काम के प्रति दृढ़प्रेम हो जाता है। अतः व्यक्ति को कभी भी बुरे कर्म के प्रति लगाव नहीं होना चाहिए।



अपने पूज्य पति

**स्व. श्री केशवचन्द्र जी ठेकेदार**

( निधन : 18-10-94 )

जो संस्थान के परम हितैषी तथा परम दानी पुरुषों में से थे, जिनके निधन से समाज एक महान् व्यक्ति के जाने से हुई कमी को कभी पूरा नहीं कर सकता ।

की

पुण्यस्मृति

में

उनके विनीत बच्चों तथा बन्धु-बान्धवों और हितचिन्तकों  
की ओर से

प्रयोजिका:

**श्रीमती सुमित्रा देवी बस्सी ( धर्मपत्नी )**

534-एल, माडल टारुन, लुधियाना।



पुमांसो ये हि निन्दन्ति वृत्तेनाभिजनेन च ।  
न तेषु निवसेत् प्राज्ञः श्रेयोऽर्थी पापबुद्धिषु ॥

महाभा. आदिपर्व. ७४.१०.

जो पुरुष आत्म-कल्याण की इच्छा करता है, उसको चाहिए कि वह ऐसे व्यक्तियों के सम्पर्क में न रहे जो सदाचारी, अच्छे कुल में उत्पन्न तथा लोकहित करने वालों की निन्दा करते हों। अर्थात् बुरे व्यक्तियों के सम्पर्क में अच्छे व्यक्तियों को नहीं रहना चाहिए।



हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

प्रयोजिका :

**श्रीमती राजरानी**

मकान नं. ६४२९, गली नं. ७,

हरगोबिन्द नगर (नजदीक नीला झंडा), लुधियाना।

संस्वेदजा अण्डजाश्चोद्भिजाश्च  
सरीसृपाः कृमयोऽथाप्सु मत्स्याः ।  
तथाश्मानस्तृणकाष्ठं च सर्वे  
दिष्टक्षये स्वां प्रकृतिं भजन्ति ॥

महाभा. आदिपर्व. ८९.११.

संसार में जो भी अण्डज, उद्भिज, स्वेदज तथा सरिसृप प्राणी हैं या अन्य जीव हैं पत्थर आदि हैं । ये सभी अपने-अपने प्रारब्ध से प्राप्त फल को भोगकर पुनः अपनी प्रकृति को प्राप्त कर लेते हैं ।



हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

श्री बी. आर. अग्निहोत्री

६६, ईस्ट एण्ड एन्क्लेव,  
दिल्ली-११००९२।



अनित्यं यौवनं रूपं जीवितं रत्नसञ्चयः।  
ऐश्वर्यं प्रिय-संवासो गृध्येत् तत्र न पण्डितः॥

महा. वनपर्व. २.४७.

संसार में युवावस्था, रूप, जीने की इच्छा, नाना प्रकार के रत्नों का संग्रह, नाना प्रकार के ऐश्वर्य की वस्तुएं तथा अपने-अपने प्रियजनों के निवास ये सभी कुछ नाशवान् हैं, परिवर्तनशील हैं। अतः विद्वान् पुरुषों को चाहिए कि वे इन विनाशशील वस्तुओं का जीवन में संग्रह न करें। अगर धन है, तो यथाशक्ति प्रसन्न चित्त से उसको दूसरों की भलाई के लिए दान करे।



*Sh. Balbir Raj Sondhi*  
(1926-1993)

*Who had lived well, laughed often and loved much,  
Who had gained the respect of intelligent women, men and love of children;  
Who never lacked appreciation of earth's beauty or failed to express it;  
Who followed his dreams and pursued excellence in each task.*

*He continues to inspire us .....*

*Family, Directors & Staff.*



**PKF FINANCE LTD.**

Corporate Office: 'Balbir Tower', PKF-Namdev Chowk,  
G.T. Road, Jalandhar, Ph: 0181-2238611, Fax: 2236802,  
Website: [www.pkffinance.com](http://www.pkffinance.com)

यमो वैवस्वतस्तस्य निर्यातयति दुष्कृतम्।  
हृदि स्थितः कर्मसाक्षी क्षेत्रज्ञो यस्य तुष्यति॥

महाभा. आदिपर्व. ७४.३१.

जिस व्यक्ति के हृदय में विद्यमान उसके कर्म के साक्षी परमात्मा प्रसन्न रहते हैं, सूर्यपुत्र यमराज उसके सभी पापों को नष्ट कर देते हैं।



**स्व. दीवान आनन्द कुमार जी**

( भूतपूर्व उपकुलपति, पञ्जाब विश्वविद्यालय एवं भूतपूर्व सभापति,  
दयालसिंह पब्लिक लाईब्रेरी ट्रस्ट सोसाइटी )

एवं

**स्वः दीवान गजेन्द्र कुमार**

(निधन २८-२-२०१८)

की

पुण्यस्मृति

में

प्रयोजक :

**श्री धनंजय कुमार रैना**

**ट्रस्टी, दयालसिंह पब्लिक लाईब्रेरी ट्रस्ट सोसाइटी**

1, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली।

की ओर से



नहि धर्मफलैः तात न तपोभिः सुसंचितैः।  
तां गतिं प्राप्नुवन्तीह पुत्रिणो यां व्रजन्ति वै॥

महा. आदिपर्व. १४.२५.

गृहस्थ आश्रम में प्रविष्ट होकर पुत्र सन्तति वाले मनुष्य मनुष्ययोनि में जिस उत्तम फल को प्राप्त कर उत्तम गति अर्थात् स्थान को प्राप्त करते हैं। दूसरे लोग उत्तम तप करके प्राप्त किए हुए धर्म से भी उस गति को प्राप्त नहीं कर सकते अर्थात् गृहस्थ-धर्म सभी धर्मों से उत्तम तथा सभी का उद्धारक है।



1. स्व. श्री चूनीलाल जी मल्होत्रा,
2. स्व. श्रीमती परमेश्वरी देवी मल्होत्रा,
3. स्व. श्री ओम्प्रकाश मल्होत्रा,
4. स्व. श्रीमती चन्द्रप्रभा मल्होत्रा तथा
5. स्व. श्रीमती उमा मल्होत्रा

की

पुण्यस्मृति

में

सादर समर्पित

प्रयोजक वर्ग:- सर्वश्री रत्नप्रकाश मल्होत्रा, रोहित मल्होत्रा,  
मोहित मल्होत्रा तथा मानव मल्होत्रा

ATTIRE CREATION CO.  
304. M. T. H. ROAD, VILLIVAKAM,  
CHENNAI-600 049.

पञ्चैव गुरवो ब्रह्मन् पुरुषस्य बुभूषतः ।  
पिता माताग्निरात्मा च गुरुश्च द्विजसत्तमः ॥

महाभा. वनपर्व. २१४.२७.

इस संसार में जो व्यक्ति अपना कल्याण चाहता है। वह पिता, माता, अग्नि, परमात्मा तथा गुरु इन पांचों को गुरु मानते हुए उनकी सच्चे हृदय से सर्वदा सेवा करे।



In the sacred memory of:  
My Respected Father

**Sh. Satya Bhushan Ananad**

(17-2-1923 to 28-4-2016)

Foundly Remembered by:  
**Nimmi Dhir & Suresh Dhir**  
&  
**All Members of Family**

प्रयोजक :

**श्रीमती निम्मी धीर एवं सुरेश धीर**

A/3, चिराग इनक्लेव,  
नई दिल्ली - ११००४८



तस्मात् दुःखार्जितस्यैव परित्यागः सुदुष्करः ।  
न दुष्करतरं दानात् तस्माद् दानं मतं मम ॥

महा. वनपर्व. २५९.३१.

संसार में धन बहुत कठिनाई से अर्जित किया जाता है। कष्ट से अर्जित उस धन को छोड़ना बहुत ही कठिन कार्य है। इसलिए दान से बड़ा कठिन काम कोई दूसरा नहीं है अर्थात् दान से उत्तम अन्य कोई धर्म नहीं है।



अपनी पूज्या माताश्री

**स्व. श्रीमती नानकी देवी जी आनन्द**

[जिनका दुःखद निधन २४-१०-९३ को हुआ]

की  
पुण्यस्मृति  
में

उनके बन्धु-बान्धवों और विनीत बच्चों  
की ओर से

प्रयोजकः

**श्री सी. के. आनन्द [ पुत्र ]**

मै. दीपा एक्स्पोर्टर्स, नई दिल्ली-११० ०६५

अकर्मणां वै भूतानां वृत्तिः स्यान्नहि काचन।  
तदेवाभिप्रपद्येत न विहन्यात् कदाचन॥

महा. वनपर्व, ३२.८.

संसार कर्मभूमि है। कर्म न करने वाले प्राणियों की कोई आजीविका भी सिद्ध नहीं होती। अतः व्यक्ति कभी भी जीवन में कर्म का परित्याग न करे तथा माता-पिता, गुरु तथा पूज्य जनों की सेवा में रत रहता हुआ धन एकत्रित करे तथा उससे उनकी भी सेवा करे।



अपने पूज्य पति

**स्व. डॉ. सुदर्शन कौशल**

[ जिनका दुःखद निधन दिनांक 5-1-2008 को हुआ ]

की

पुण्यस्मृति

में

सादर समर्पित

प्रयोजकवर्ग :

**श्रीमती सुशील कौशल**

तथा

**पुत्र ललित और हिमांशु**

मोहल्ला आहलूवालिया, दसूहा (होशियारपुर)



सतां सदा शाश्वतधर्मवृत्तिः

सन्तो न सीदान्ति न च व्यथन्ति ।

सतां सद्भिः नाफलः सङ्गमोऽस्ति ।

सद्भ्यो भयं नानुवर्तन्ति सन्तः ॥

महा. वनपर्व. २९७.४७.

संसार में सज्जनों की प्रवृत्ति हमेशा धर्ममय कार्य में होती है। वे सर्वदा धर्मयुक्त कार्य ही करते हैं। जो श्रेष्ठ पुरुष हैं वे किसी भी अवस्था में दुःखी नहीं होते। संसार में सत्पुरुषों के साथ जो मैत्री होती है, वह कभी भी व्यर्थ नहीं जाती क्योंकि सन्त सर्वदा प्राणीमात्र के रक्षक होते हैं। अतः कोई भी सन्तों से भयभीत नहीं होता क्योंकि सन्तों की प्रवृत्ति किसी के प्रति हानिप्रद नहीं होती।



पूज्य पिताश्री

**स्व. वैद्य विधिराज जी शर्मा**

(जन्म 24-7-1901, निधन 14-9-1990)

की

पुण्यस्मृति में

सादर समर्पित

प्रयोजक

**Dr. Shuk Dev Sharma**

*V.V.R. Institute, Sadhu Ashram,*

● *Hoshiarpur*

ज्ञानान्वितेषु युक्तेषु शास्त्रज्ञेषु कृतात्मसु।  
न तेषु सज्जते स्नेहः पद्मपत्रेष्विवोदकम्॥

महा. वनपर्व. २.३३१.

जो (ज्ञानी) पुरुष योगयुक्त होकर शास्त्र का ज्ञान प्राप्त कर अपने मन को वश में रखते हैं। संसार में रहते हुए उन पर आसक्ति का प्रभाव इसी प्रकार नहीं होता जिस प्रकार जल में हर समय रहते हुए भी कमल के पत्ते पर जल का प्रभाव नहीं होता



स्व. श्री ताराचन्द जी शर्मा  
( जन्म: 9-3-1920, मृत्यु: 16-3-2000 )

एवं

उनकी धर्मपत्नी

स्व. श्रीमती शकुन्तला देवी  
( मृत्यु 23-7-2016 )

की

पुण्यस्मृति में

उनके सुपुत्रों

डॉ. हरिमित्र शर्मा, श्री भगवतस्वरूप शर्मा

एवं

श्री प्रदीप कुमार शर्मा  
की ओर से



पुत्रेण लोकान् जयति पौत्रेणानन्त्यमश्नुते ।  
अथ पौत्रस्य पुत्रेण मोदते प्रपितामहाः ॥

महाभा. आदिपर्व. ७४.३९.

मनुष्य पुत्र के बल पर ही पुण्य लोकों पर विजय प्राप्त करता है, पौत्र के द्वारा अक्षय सुख को प्राप्त करता है तथा पौत्र के पुत्र अर्थात् प्रपौत्र के द्वारा प्रपितामह-गण अत्यधिक आनन्द प्राप्त करते हैं। तात्पर्य है कि व्यक्ति का पुत्रवान् होना भाग्य की निशानी है।

अपने पूज्य पिताश्री



**स्व. श्री अनिल कुमार जी**

(आयकर आयुक्त)

(जन्म: 1948- मृत्यु : 2003 )

की पावन स्मृति में उनके सुपुत्रों

श्री गौरव ( भारतीय रक्षालेखा सेवा )

श्रीमती हरमनप्रीत कौर ( पुत्रवधू )

परलीन ( पौत्री )

प्रो. मोहित

श्रीमती वन्दना ( पुत्रवधू )

इनोदय ( पौत्र )

जान्या ( पौत्री )

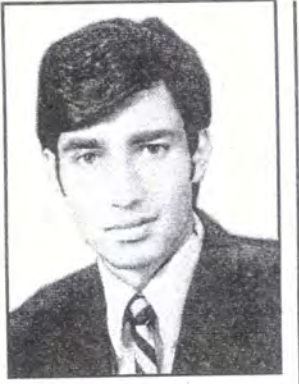
फ्लैट नं. 2, टावर 21, रायल एस्टेट, जीरकपुर ( मोहाली )-140 603

की ओर से

धातैव खलु भूतानां सुख-दुःखे प्रियाऽप्रिये ।  
दधाति सर्वमीशानः पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् ॥

महा. भा. वनप. ३०.२२.

संसार में सम्पूर्ण प्राणियों के जीवन में सुख-दुःख, अच्छा-बुरा इत्यादि जो कुछ भी आता है, यह सब विधाता की देन है। परमपिता परमात्मा ही प्राणी को कठपुतली की तरह नचाता है। तथापि व्यक्ति कर्म प्रधान है, वह सर्वदा ऐसा कर्म करे जिससे उसके माता-पिता गुरुजन इस लोक और परलोक में सुखी तथा शान्त रहें।



श्री समीर मोहन

[ 19 दिसम्बर 1948 –  
13 मार्च, 2010 ]



श्रीमती प्रतिष्ठा दत्त

[ 16 मई 1947 –  
30 अक्तूबर, 2008 ]

की स्मृति में

प्रयोजकवर्ग :

डॉ. लज्जा देवी मोहन ( माता ) एवं परिवार

325, माडल टाऊन, सर्कुलर रोड, अम्बाला शहर ( हरियाणा प्रान्त )



तिष्ठन् गृहे चैव मुनिर्नित्यं शुचिरलंकृतः।  
यावज् जीवं दयावांश्च सर्वपापैः प्रमुच्यते॥

महा. वनपर्व. २००.१०१.

भले ही कोई व्यक्ति घर को न छोड़े किन्तु घर पर रहते हुए भी यदि वह पवित्रभाव से रहता हुआ अपना कर्म करता है, दया-दाक्षिण्य आदि सद्गुणों से युक्त है, प्राणिमात्र पर दया करता है तो वह एक प्रकार से (वन में रहने वाला) मुनि ही है, क्योंकि वह अपने सत्कर्मों से सम्पूर्ण पापों से मुक्त रहता है।



**डॉ. महता वसिष्ठदेवमोहन**

[ जुलाई 1917 – 12 सितम्बर 2003 ]

की पावन स्मृति

में

सादर समर्पित

प्रयोजकवर्ग :

**डॉ. लज्जा देवी मोहन ( पत्नी ) एवं परिवार**

**325, माडल टाऊन, सर्कुलर रोड, अम्बाला शहर ( हरियाणा प्रान्त )**

पिता माता तथैवाग्निः गुरुरात्मा च पञ्चमः ।  
यस्यैते पूजिता पार्थ तस्य लोकावुभौ जितौ ॥

महा. वनपर्व. १५९.१४.

इस संसार में जो व्यक्ति अपने पिता-माता अग्नि, गुरु और आत्मा (अर्थात् खुद अपनी आत्मा) इन पांचों का आदर करता है। वह मृत्युलोक तथा परलोक दोनों को जीत लेता है।

\* \* \* \* \*

पद्मभूषण आचार्य ( डॉ. ) विश्वबन्धु जी के अनन्य भक्त, संस्थान के परम शुभचिन्तक, निश्चयी, श्रद्धावान्, दयालु, दीन-दुःखियों के सहायक, नगर की अनेक संस्थाओं के मान्य-सदस्य, परम-दानी, विश्वेश्वरानन्द-शोध-संस्थान की कार्यकारिणी के आजीवन सदस्य, संस्थान के आदरी प्रोफ़ेसर एवं विश्वेश्वरानन्द विश्वबन्धु भारत-भारती शोध संस्थान ( पंजाब विश्वविद्यालय पटल, होशियारपुर ) के भूतपूर्व चेयरमैन-



स्व. डॉ. त्रिलोचनसिंह बिन्दा

( 31-10-1942 - 30-6-2016 )

की पुण्यस्मृति में समर्पित

प्रयोजक:

श्रीमती प्रेम बिन्दा ( पत्नी )

अरविन्द बिन्दा ( पुत्र ), सुप्रिया बिन्दा ( पुत्रवधु ), अभिनव बिन्दा व नवांश बिन्दा ( पौत्र )



धर्ममूलं जगत् राजन् नान्यद् धर्माद् विशिष्यते ।  
धर्मश्चार्थेन महता शक्यो राजन् निषेवितुम् ॥

महा. वनपर्व. ३३.४८

सम्पूर्ण सृष्टि धर्म पर आधारित है। सृष्टि की प्रत्येक वस्तु अपने-अपने धर्म का पालन करती है। अतः स्पष्ट है कि सृष्टि का मूल कारण धर्म ही है। संसार में धर्म से बढ़कर कोई दूसरी वस्तु नहीं है। किन्तु धर्म का अनुष्ठान धन के बिना संभव नहीं। अतः गृहस्थी के लिए धन की आवश्यकता होती है। अतः धन सर्वदा धर्म के कार्य के लिए होना चाहिए।



अपने पूज्य पिताश्री

**स्व. श्री गंगाराम जी बीर**

( जिनका निधन 20-10-1977 को हुआ )

तथा

पूज्या माताश्री

**स्व. श्रीमती सुशीला देवी जी बीर**

( जिनका निधन 14-5-1989 को हुआ )

की

पुण्यस्मृति में सादर समर्पित

प्रयोजक :

**श्री एम. पी. बीर ( पुत्र )**

18-सी, विजय नगर, दिल्ली-110 009

बीजानि ह्यग्निदग्धानि न रोहन्ति पुनर्यथा।  
ज्ञानदग्धैस्तथा क्लेशैःनात्मा संयुज्यते पुनः॥

महा. वनपर्व. २००.१०.

जिस प्रकार अग्नि द्वारा किसी भी वस्तु के बीज को जलाने पर उस बीज से पुनः अंकुर पैदा नहीं हो सकता उसी प्रकार ज्ञानरूपी अग्नि द्वारा मनुष्य के अविद्या आदि क्लेश नष्ट किए जाने पर उनका पुनः आत्मा के साथ सम्बन्ध नहीं बनता।



परमपूज्या माताश्री

**स्व. श्रीमती आशा शर्मा**

[ पुण्यतिथि आश्विन शुक्ल प्रतिपदा, तदनुसार १६.१०.२०१२ ]

की

पुण्यस्मृति

में

सादर समर्पित

प्रयोजक :

श्रीमती श्रुति जोशी ( पुत्री )

श्री व्रजेश शर्मा ( सुपुत्र प्रो. कृष्णामुरारि शर्मा )

श्रीमती निपुण शर्मा ( पुत्रवधु )

श्रीधाम, गली नं. ६, नारायण नगर, होशियारपुर।



यस्मादभावी भावी वा मनुष्यः सुख-दुःखयोः ।  
आगमे यदि वापाये न तत्र ग्लपयेन्मनः ॥

महा. आदि प. १७६.२६.

संसार में सुख चाहने वाला मनुष्य सुख और दुःख पाने में अपने को असमर्थ समझकर कभी भी मन में ग्लानि न लावे अर्थात् दुःखी न हो कि मुझे सुख प्राप्त नहीं हुआ, दुःख मिला है। परन्तु सुख भी कभी जरूर मिलेगा, यह सोचकर प्राणीमात्र के प्रति सेवाभाव दिखाता हुआ अपनी दिनचर्या करता है।

अपने पूज्य पिताश्री

**स्व. श्री चमन लाल जी जुनेजा**

( स्वर्गवास १०-१२-२००० )

व पूज्या माताश्री

**स्व. श्रीमती रुक्मिणी देवी जुनेजा**

( स्वर्गवास ३१-०७-२०११ )

की

पुण्यस्मृति में सादर समर्पित

डॉ. अश्विनी कुमार जुनेजा (पुत्र)

डॉ. श्रीमती नीलम जुनेजा (पुत्रवधु)

डॉ. चैतन्य जुनेजा (पौत्र)

डॉ. श्रीमती शुभदा जुनेजा (पौत्रवधु)

डॉ. अक्षय जुनेजा (पौत्र)

डॉ. श्रीमती वैशाली जुनेजा (पौत्रवधु)

अनायशा जुनेजा (पड़पौत्री)

प्रयोजक वर्ग;

**रुक्मिणी स्कैन सेंटर**

पुराना महिलपुर अड्डा, होशियारपुर।

गौरवं प्राप्यते दानान्तु वित्तस्य संचयात्।  
स्थितिरुच्चैः पयोदानां पयोधीनामधःस्थितिः॥

महाभारत, अनु. ६२.७.

संसार में धन को एकत्रित करने से मान-प्रतिष्ठा नहीं बढ़ती अपितु दान देने से ही गौरव बढ़ता है। जैसे पानी देने वाले बादलों (मेघ) का स्थान ऊँचा है, पर जल का संग्रह करने वाले सागर का स्थान नीचे है।



स्व. श्री अरविन्द जैन जी

(निधन 10-4-2013)

की पुण्यस्मृति में

From:

**SMT. SNEH LATA JAIN**

Ms. Maeru Jain (MAERU)

Sun Shine, Components Pvt. Ltd.,

17-D, Focal Point, Phagwara Road, HOSHIARPUR



न ह्यतो धर्मचरणं किञ्चिदस्ति महत्तरम् ।  
यथा पितरि शुश्रूषा तस्य वा वचनक्रिया ॥

वा.रा.अयो. १२.२२.

जहां तक धर्माचरण की बात है, उसमें माता-पिता की सेवा करने एवं उनकी आज्ञा का पालन करने से बढ़कर धर्म का कार्य संसार में अन्य कोई दिखाई नहीं देता । माता-पिता की सेवा सर्वोपरि कही गई है ।



अपने पूज्य दादा जी

**स्व. पं. बाबू राम जी**

(सेवानिवृत्त मुख्याध्यापक)

( जो दृढ़ आर्यसमाजी, परिश्रमी तथा काम करने में विश्वास रखने वाले थे । )

तथा

अपने पूज्य पिताश्री

**स्व. श्री ज्ञानस्वरूप जी शर्मा**

(निधन १४-९-१९९० को हुआ)

की

पावनस्मृति में

सादर समर्पित

प्रयोजक :

**श्री राजीव शर्मा**

गली नं. १२, कृष्णा नगर, होशियारपुर ।

ऋद्धिं रूपं बलं पुत्रान् वित्तं शूरत्वमेव च।  
प्राप्नुवन्ति नरा लोके निर्जितं पूण्यकर्मभिः॥

वा.रा.उत्तर. १६.२६.

मृत्युलोक में प्रत्येक मनुष्य जो कुछ भी धन, दौलत, मान-सम्मान, सुख, नाना प्रकार के ऐश्वर्य, उच्च पद, पुत्र-पौत्र, साम्राज्य आदि प्राप्त करता है। वह उसके पूर्णजन्म-कृत सत्कर्मों का ही फल होता है। अतः मानवमात्र को चाहिए कि वह सदा सत्कर्म करे।



स्व. श्री एस. एन. कपूर

तथा

स्व. श्रीमती सावित्री कपूर

की

पावनस्मृति

में

सादर समर्पित

प्रयोजक :

श्री शशि कपूर

२२५, सेक्टर १४, गुडगांव-१२२००१



अस्थिरत्वं च संचिन्त्य पुरुषार्थस्य नित्यदा ।  
तस्योदये व्यये चापि न चिन्तयितुमर्हसि ॥

महा. वनपर्व. ८०.७०.

संसार में मनुष्य को जो कुछ भी प्राप्त होता है, वह निश्चय ही सर्वथा नाशवान् है। अतः किसी भी वस्तु की प्राप्ति या विनाश होने पर व्यक्ति को दुःखी नहीं होना चाहिए अर्थात् आज किसी के पास किसी वस्तु की कमी हो तो भविष्य में पुनः वह कमी कभी भी दूर हो सकती



स्वर्गीय श्री केवल कृष्ण शर्मा ( इंग्लैण्ड )

( 4-11-1930 - 6-12-2016 )

की पुण्यस्मृति में सादर समर्पित

प्रयोजक वर्गः

श्री विजय कुमार शर्मा ( दामाद ) श्रीमती इन्दुशर्मा ( पुत्री )

श्री अश्विन शर्मा ( पुत्र ) श्री राजेश शर्मा ( पुत्र ) डॉ० अजय शर्मा ( पुत्र )

29, PAXTON AVENUE, SLOUGH BERKS, SL1 25X U.K.

दैवे पुरुषकारे च लोकोऽयं प्रतिष्ठितः ।  
तत्र दैवं तु विधिना कालयुक्तेन लभ्यते ॥

महा. आदिपर्व. ११४.१६

यह संपूर्ण संसार दैव और पुरुषार्थ पर ही आधारित है। उनमें प्रयत्न कुछ प्रभावशाली है क्योंकि यथासमय प्रयत्न के द्वारा दैव सिद्ध हो जाता है अर्थात् प्रयत्न का पलड़ा लोक में भारी है। इसलिए मनुष्य को प्रयत्नवान् होना चाहिए।



हार्दिक शुभ कामनाओं सहित :

**सर्वश्री भुवालका जनकल्याण न्यास**

‘तोशहाऊस’ पी-32/33

इण्डिया एक्सचेंज प्लेस, कोलकाता-700 001



यथाशक्तिः प्रयच्छेत् सम्पूज्याभिप्रणम्य च ।  
काले प्राप्ते च दृष्टात्मा राजन् विगतमत्सरः ॥

महा. वनपर्व. २५९.२१

(गृहस्थी का परम कर्तव्य है कि) यदि किसी समय कोई अतिथि उसके घर पर आ जाय तो वह शान्तचित्त तथा प्रसन्न मन से अपनी सामर्थ्य के अनुसार उसे दान दे तथा उसका विधिवत् पूजन और प्रणाम करे ।



स्व. श्री खुशीराम जी महाजन  
स्व. श्रीमती दुर्गा देवी जी महाजन  
स्व. श्री द्वारकानाथ जी महाजन  
स्व. श्रीमती प्रेम लता महाजन  
स्व. श्रीमती प्रतिभा महाजन

की  
पुण्यस्मृति में सादर समर्पित

प्रयोजक :

श्री भागमल महाजन धर्मार्थ न्यास  
एल. एस. बी. मार्ग, बिखरोली, मुम्बई ।

एतद् ऋते परोधर्मः नास्ति कश्चित् प्रियः शुभः ।

नित्यं सत्यं प्रवक्तव्यं सर्वसिद्धिमभीप्सता ॥

श्रीवरकथाकौतुक, १, ९३

यद्यपि संसार में सत्य तथा असत्य दो रूप से ही कथन होता है; किन्तु जीवन में सभी प्रकार का अपना कल्याण चाहने वाले व्यक्ति को सत्य का ही अनुसरण करना चाहिए, सत्य बोलना चाहिए। क्योंकि सत्य बोलने से श्रेष्ठ न कोई अन्य धर्म है और न कोई प्रिय तथा कल्याणदायि वस्तु है। सत्य का अनुसरण व्यक्ति को सब कुछ देने वाला है।

पूज्य दादा जी

**श्री प्रभुदयाल जी अग्रवाल**

( स्वर्गवास 13 अप्रैल, 1975 )

एवं

पूज्य पिताजी

**श्री बुधराम गुप्ता**

( स्वर्गवास 9 मार्च, 2001 )

की

पावन स्मृति

में

समर्पित

प्रयोजक :

**प्रभुदयाल बुधराम गुप्ता चैरिटेबल ट्रस्ट ( रजि. )**

7, न्यू सब्जी मण्डी, फगवाड़ा रोड, होशियारपुर।





## (संस्थान) सत्संग मन्दिर

---

वी. वी. आर. आई. सोसाईटी, होशियारपुर (पंजाब) की ओर से प्रकाशक व मुद्रक  
प्रो. इन्द्रदत्त उनियाल द्वारा वी. वी. आर. इन्स्टीच्यूट प्रैस, पो. आ. साधु-आश्रम,  
होशियारपुर से छपवा कर, वी. वी. आर. इन्स्टीच्यूट, पो. आ. साधु-आश्रम,  
होशियारपुर-१४६ ०२१ (पंजाब) से २८-०६-२०१८ को प्रकाशित।